

आवास भारती

वर्ष 14, अंक 52, जुलाई-सितम्बर, 2014



राष्ट्रीय
आवास बैंक
NATIONAL
HOUSING BANK

आपकी पार्टी

महोदय,

‘आवास भारती’ की नवीनतम अंक-प्रति प्राप्त हुई, जो सर्वप्रथम अपने मुख-पृष्ठ व बाहरी कलेवर से ही हमारा ध्यान आकर्षित करती है तदुपरांत पत्रिका अपनी विषय सूची के जरिए अपने अंक की रचना-सामग्री के वैविध्य का किंचित परिचय तो दे ही जाती है। पत्रिका एक ओर जहां अपने परिवार की घटनाओं का परिचय देती है, वहीं इसके अन्य स्तंभों में कई अन्य विषयों से जुड़े महत्वपूर्ण लेख भी मौजूद हैं। बैंक से जुड़ी पत्रिकाओं में प्रायः अर्थव्यवस्था व वाणिज्य से संबंधित लेखों को ही तरजीह दी जाती है, किंतु आपकी पत्रिका में भाषा, स्वास्थ्य, पर्यावरण, कानूनी संरक्षण व अधिकार तथा राजनीति व सामाजिक मूल्यों से जुड़े समसामयिक लेखों को भी स्थान दिया गया है। साथ ही, देश की दो बड़ी नदियों गंगा व यमुना का विस्तृत परिचय देते लेख भी पत्रिका में मौजूद हैं। ‘शहरीकरण के गंभीर खतरे और कड़ी चुनौतियों में मौजूदा समय की वाजिब समस्या पर विचार किया गया है, वहीं ‘उम्र का पड़ाव’ में विकास के तमाम शोर के बीच धीरे-धीरे लुप्त होते जा रहे रिश्तों व संवेदनाओं पर विचार करते हुए इस समस्या का सामना करने के कुछ उपाय भी दिए गए हैं। वहीं ‘विज्ञापन या मीडिया रिपोर्ट पर न खरीदें मकान’ और ‘नीलामी का मकान खरीदते समय सावधानियां’ आज के समय के हिसाब से काफी जरूरी लेख हैं। इन सबके साथ-साथ पत्रिका में ‘कविता’ व ‘कहानी’ के लिए भी स्थान सुरक्षित रखा गया है, जिसके माध्यम से बैंक में रचनात्मकता को बढ़ावा देने का सार्थक प्रयास किया गया है। कुल मिलाकर ‘आवास भारती’ अपने सीमित कलेवर में मौजूदा समय-समाज से जुड़े सभी पक्षों से जुड़ी रचनाओं को समेटते हुए ‘गागर में सागर’ भरने के मुहारे को चरितार्थ करती है जिसके लिए आप व पत्रिका के संपादकीय सदस्यगण साधुवाद के पात्र हैं। मुझे उम्मीद ही नहीं वरन् पूर्ण विश्वास है कि पत्रिका अपने आगामी अंकों में अपने स्तर को बनाए रखते हुए निरंतर प्रकाशित होती रहेगी।

शुभकामनाओं के साथ,

भवदीय,

(एस.एन. मिश्र)

मुख्य महाप्रबंधक, राजभाषा विभाग
इंडियन ओवरसीज बैंक
केन्द्रीय कार्यालय, 763 अण्णा सालै, चेन्नै

महोदय,

‘आवास भारती’ का ताजा अंक प्राप्त हुआ। बहुत खुशी हुई। पत्रिका के दिनोंदिन बढ़ते स्तर को देखकर बहुत प्रसन्नता होती है। विशेषतौर पर संपादक महोदय जी के विभिन्न विषयों पर विचार काफी अच्छे लगते हैं। पत्रिका की विषयवस्तु और लेखों का चयन उम्दा है। वैसे तो सभी लेख अपने-आप में कुछ नया लिए हुए हैं लेकिन खासतौर “स्मार्ट सिटी की संकल्पना और सच”, “नीलामी का मकान खरीदते समय सावधानियां” जैसी आवास से संबंधित रचनाएं काफी ज्ञानवर्धक एवं उपयोगी हैं। इसी प्रकार संपादक महोदय जी का लेख “कानून” समसामयिक एवं नवीन जानकारीयों से युक्त है। लेख “उम्र का पड़ाव” काफी मार्मिक एवं विचारणीय रचना है। इस पत्रिका की एक खासियत यही है कि इसमें हर विषय पर कुछ-न-कुछ नया पढ़ने को मिलता है। काव्य सुधा में प्रकाशित कविताएं भी काफी अच्छी लगी। मुझे उम्मीद ही नहीं वरन् पूर्ण विश्वास है कि पत्रिका अपने आगामी अंकों में अपने स्तर को बनाए रखते हुए निरंतर प्रकाशित होती रहेगी।

शुभकामनाओं सहित

भवदीय,

एम.एल.सिंघाडे, प्रिंसिपल
प्रकाश हाईस्कूल एवं जूनियर
महाविद्यालय, कांद्री माईस
जिला- नागपुर

महोदय,

हमें आपके बैंक की गृह पत्रिका “आवास भारती” का नया अंक प्राप्त हुआ। आवास भारती अपने पृष्ठ सज्जा, छायांकन और लेख चयन के कारण हमेशा से ही मेरी सबसे पसंदीदा पत्रिका रही है। संपादकीय में हिंदी के प्रति संपादक डॉ. जी.एन.सोमदेवे जी के विचार बहुत ही अनुकरणीय हैं। आशा करता हूं कि संपादक जी के ये विचार अन्य लोगों तक भी पहुंचें और हिंदी को उसका उचित स्थान प्राप्त हो। पत्रिका की पृष्ठ सज्जा में दिनों-दिन होता बदलाव उसे अन्य सरकारी पत्रिकाओं से बिलकुल अलग करता है। इसी के साथ संपादक मंडल और आपके विभाग के कठिन परिश्रम को भी दर्शाता है। पत्रिका के किसी एक या दो खास लेखों पर टिप्पणी करना अन्य लेखों के साथ अन्याय समझता हूं। इसलिए बस इतना ही कहना चाहता हूं कि पत्रिका में विभिन्न विषयों एवं पहलुओं पर प्रकाशित सभी लेख अपने आप में उम्दा हैं। आशा करता हूं कि आगे भी हमें आवास भारती और भी उत्कृष्ट प्रस्तुति के साथ प्राप्त होती रहेगी।

शुभकामनाओं सहित

भवदीय,

नवीन कुमार आदर्श
सहायक महाप्रबंधक
भारतीय रिजर्व बैंक
केन्द्रीय कार्यालय, मुंबई

महोदय,

हमें आपके बैंक की गृह पत्रिका “आवास भारती” का अप्रैल-जून, 2014 अंक प्राप्त हुआ। पत्रिका प्राप्त होने पर काफी खुशी हुई। पत्रिका का कवर पृष्ठ काफी अच्छा है। निरंतर आपके पत्रिका में सुधार दिख रही है। जो हर बार हमें कुछ नया प्रतीत होता है। पृष्ठ सज्जा से लेकर लेखों के चयन में आप जितनी सावधानियां बरतते हैं वह आपके प्रस्तुतीकरण में झलकती है। संपादकीय में संपादक महोदय जी के विचार हर बार की तरह एक खास मुद्दे पर बहुत ही उम्दा तरीके से प्रकाश डालती है। पत्रिका में प्रकाशित कई लेख मुझे बहुत अच्छे लगे जिनमें “नीलामी का मकान खरीदते समय सावधानियां”, “पर्यावरण और हम”, “उम्र का पड़ाव”, “यमुना”, “कानून” और शहरीकरण के गंभीर खतरे” शामिल हैं। स्वास्थ्य संबंधी लेख “कोलेस्ट्रॉल” काफी ज्ञानोपयोगी रचना लगी। वहीं कहानी “किसना” को पढ़कर ऐसा लगा मानो यह हमारे गांव की ही कहानी हो। काव्य सुधा में प्रकाशित कविताएं भी काफी अच्छी लगी। आशा करता हूं कि आगे भी पत्रिका ऐसे ही उत्कृष्टता का बनाए रखेगी।

शुभकामनाओं सहित

भवदीय,

राकेश गुप्ता
सहायक यंत्री
जबलपुर विकास प्राधिकरण
जबलपुर

संपादकीय

1915 में दक्षिण अफ्रीका से लौटने के बाद, महात्मा गांधी ने पूरे देश का भ्रमण किया और जाना कि इतने बड़े विशाल देश में अनेक भाषाएं बोली जाती हैं लेकिन वे सबकी सब स्थानीय भाषाएं हैं। मगर हिंदी अकेली ऐसी भाषा है जो पूरे देश में बोली और आसानी से समझी जा सकती है। इसलिए राष्ट्र की एकता के लिए हिंदी को राष्ट्रभाषा के रूप में पहचान हुई। राष्ट्रभाषा प्रचार समिति वर्धा की स्थापना भी इसी समीक्षा का परिणाम थी। इससे पूर्व 1857 के स्वतंत्रता संग्राम की भाषा भी हिंदी ही रही है। हिंदी ही स्वतंत्रता संग्राम की प्रबल तलवार थी। हम सब अपने इतिहास को भूल रहे हैं और महज सभ्य और शिक्षित होने का दिखावा करने के लिए विदेशी भाषा का अधिकाधिक प्रयोग कर रहे हैं।

एक छुटभैये अपराधी को जब पुलिस ने पकड़ा और जेल में डाला तो उसकी उच्च शिक्षित बिटिया कोर्ट में अंग्रेजी में गिटपिटाई और अपनी धाक जमाकर बाप को जेल से छुड़वा ले गई। वह व्यक्ति अपनी अंग्रेजी परस्त बिटिया के गुण गाते नहीं थकता। वही अंग्रेजी परस्त बिटिया एक दिन किसी के साथ रफूचक्कर हो गई। जीवन भर इस आदमी का साथ दिया तो हिंदी माध्यम से पढ़े हुए उसके अन्य बच्चों ने। अंग्रेजी भगौड़ों की भाषा है। आक्रांताओं की भाषा है। असहिष्णु और अंग्रेज धोखेबाजों की भाषा है जिन्होंने 150 वर्ष हम पर राज कर हमारा सब कुछ छीन लिया। फिर भी हम उस भाषा और संस्कृति को सिरमौर मान बैठे हैं। यह ठीक उसी तरह है जिस तरह हम लोग छोटे-मोटे साहुकारों, सुबेदारों, सुदखोरों और दबदबेदार मुफतखोर जमींदारों की औलादों को रॉयल फैमिली के सदस्य मानकर उन्हें महिमा मंडित करते हैं। रॉयल का अर्थ भी मालूम नहीं है उन्हें। हमने देखा कि इंग्लैण्ड के रॉयल फैमिली ने एक व्यापारिक कंपनी के मार्फत हमारे देश में 150 वर्ष राज किया और हमारे साथ किस तरह का खेल खेला। अब अंग्रेजी शब्दकोष हमारे शब्द चुरा रहे हैं। हम इतिहास से सबक सीखें।

भारतीय भाषाओं पर आरोप लगाया जाता है कि उनमें उच्च स्तरीय अनुसंधान नहीं किया जा सकता। ऐसे लोग यह भूल जाते हैं कि संसार तथा सर्व ब्रह्माण्ड का ज्ञान जिन ग्रंथों में समाहित है ऐसे वेद, पुराण, रामायण, महाभारत, गीता, धम्मपद और जीणवाणी आदि क्या विदेशी भाषाओं की उपज है? संसार को आधुनिक तकनीकी ज्ञान हमारे ग्रंथों ने ही उपलब्ध कराया। मुहम्मद तुगलक जैसे मुस्लिम शासक को इस बात का श्रेय जाता है कि दक्षिण भारत में उसने हिन्दी को पहुंचाया। दक्षिण भारत में हिंदी दक्खिनी कहलाई। पर अंग्रेजों ने स्थानीय भाषाएं और हिंदी को बढ़ावा देने की कभी रूची नहीं दिखाई। मैकाले ने मानव, मन, बुद्धि, प्राण एवं आत्मा की पढ़ाई को कोर्स से हटा दिया था। देशी बाबूओं की खेप विदेश भेजी ताकि वे अंग्रेजी बाबू बन सकें। प्रथम आईसीएस अधिकारियों में इन्हीं अंग्रेजीदां बाबूओं की भरमार थी। इनमें से कोई भी व्यक्ति गरीब या हिंदी परस्त घराने से नहीं था। सब के सब महारानी के प्रति वफादारी निभाने वाले। अंग्रेजो ने उनकी राजभाषा फ्रेंच को त्यागकर अपनी स्वयं की भाषा अंग्रेजी को राजभाषा बनाया। हमने अंग्रेजों की राजभाषा को अपनी राजभाषा बनाया और आज भी वह वास्तविक राजभाषा बनी हुई है। हमारे संविधान निर्माताओं का धन्यवाद किया जाना चाहिए कि उन्होंने हिंदी को राजभाषा के रूप में स्वीकार करने के निदेश दिए। धन्यवाद केन्द्र सरकार का भी करना चाहिए जिनके राजभाषा विभाग के माध्यम से हिंदी के व्यापक प्रगामी प्रयोग एवं कार्यान्वयन हेतु नियम, आदेश और अधिसूचनाएं जारी हुई। यदि यह सब नहीं होता तो मैं समझता हूं राजकाज में और देश में हिंदी लुप्तप्राय हो जाती। इसे केवल अशिक्षित लोग ही बोलते। कैसा होता कि जब सब तरफ अंग्रेजी-अंग्रेजी हो जाती। पूरा भारत अंग्रेजी में गिटपिटाता।

हिंदी जानकारों को अन्य देशी भाषाएं सीखनी चाहिए। हर संस्थान में भारतीय भाषाएं सिखाने की कक्षाएं चलाई जानी चाहिए। उन कार्यालयों में तो अवश्य रूप से जहां अधिकारियों के ऑल इंडिया ट्रांसफर होते हैं। जिस तरह टाई-कोट पहन कर बैंक चलाई नहीं जा सकती उसी तरह केवल राजभाषा हिंदी के भरोसे बैंक चलाई नहीं जा सकती। प्रधानमंत्रीजी की जनधन योजना में अंग्रेजी से लक्ष्य को पाया नहीं जा सकता। साधारण जन की बोली में बात करनी होगी तभी हम जन-जन को जोड़ पायेंगे। बैंकिंग में समरस कर पायेंगे। हम राज्यों की भाषाओं को क्षेत्रीय भाषाएं कहते हैं यह योग्य नहीं है। आज हर प्रदेश की भाषा अन्य राज्यों में भी खूब बोली जाती है इसलिए हमारी सभी भाषाएं भारतीय स्तर की भाषाएं हैं। इन सभी भारतीय भाषाओं का तालमेल हिंदी के साथ बिठाना है तभी हम बैंकिंग में पूर्ण समावेशन का प्रयोग सफल कर पायेंगे। भाषाई विकास के साथ हमें सामाजिक विकास के लिए पूरे प्रयत्न करने होंगे। देश और समाज के प्रति हमारी जिम्मेदारी है। यूरोप के 40 देशों में अंग्रेजी राजभाषा नहीं है केवल इंग्लैण्ड को छोड़कर। इंग्लैण्ड में भी फ्रेंच राजभाषा थी और उस की जगह अंग्रेजी (जिसे वे लिंग्वा फ्रेंका यानि की गंवारों की भाषा कहते थे) लाने में बड़ी जद्दोजहद करनी पड़ी। दंडात्मक व्यवस्था से वहां अंग्रेजी आई। हम भारतीयों ने उनसे अंग्रेजी उधार ली। कर्म और कर्मफल का सिद्धांत है कि उधार ली वस्तु वापस करनी होती है। अब समय आ गया है जब हम बिना अंग्रेजी के जीने के लिए कर्म कस लें।

धन्यवाद!



डॉ० जी.एन. सोमदेवे
सहायक महाप्रबंधक एवं संपादक
आवास भारती
मोबाइल नं. : 9560900451

आवास भारती



अंक 52, जुलाई – सितंबर, 2014



आवास भारती

आवास भारती

राष्ट्रीय आवास बैंक की राजभाषा पत्रिका

(केवल आंतरिक परिचालन हेतु)

पंजी. संख्या, दिल्ली इन/2001/6138

वर्ष 14, अंक 52, जुलाई-सितंबर, 2014

विषय सूची

विषय	पृष्ठ सं.	✳	विषय	पृष्ठ सं.
राष्ट्रीय आवास बैंक परिवार समाचार	3	✳	अहंकार	28
सतर्कता क्या है ?	8	✳	भारतीय पूजा पद्धति	29
आर्यभाषा - हमारी राजभाषा	9	✳	कल, आज-कल	31
भारतीय अर्थ व्यवस्था तथा आवास का महत्व	12	✳	मीडिया की प्राथमिकताएं	33
आवास नीति	15	✳	गुरुमंत्र	35
प्राकृतिक आपदा	17	✳	सेहत का खजाना	37
मंगल मिशन	20	✳	ध्यान और योगासन	39
पहाड़, प्राकृति एवं पर्यावास	22	✳	किसना	42
राष्ट्र प्रेम	25	✳	तपेदिक (टी बी)	44
स्वास्थ्य एवं तनाव	26	✳	काव्य सुधा	48

प्रधान संरक्षक

मो. मुस्तफा
अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक

संरक्षक

अर्णव रॉय
कार्यपालक निदेशक

संपादक

डॉ. जी.एन. सोमदेवे
सहायक महाप्रबंधक

सहायक संपादक

डॉ. अमर सिंह सचान
राजभाषा अधिकारी

संपादक मंडल

एस.के. पाढ़ी, सहायक महाप्रबंधक
रंजन कुमार बरुन, सहायक महाप्रबंधक
मोहित कौल, क्षेत्रीय प्रबंधक
पंकज चड्ढा, प्रबंधक
रवि कुमार सिंह, प्रबंधक
संजीव कुमार सिंह, उप प्रबंधक
सुश्री स्तुति रूचा, उप प्रबंधक
अड़डा लीला विजयकृष्ण, सहायक प्रबंधक



राष्ट्रीय
आवास बैंक
NATIONAL
HOUSING BANK

(भारतीय रिजर्व बैंक के संपूर्ण स्वामित्व में)

कोर-5 ए, 3-5 तल,
इंडिया हैबिटेड सेंटर
लोधी रोड, नई दिल्ली-110003

पत्रिका में प्रकाशित रचनाओं में अभिव्यक्त विचार, मौलिकता एवं तथ्य आदि लेखकों के अपने हैं।
संपादक या बैंक का इनके लिए जिम्मेदार अथवा सहमत होना अनिवार्य नहीं है।



राष्ट्रीय आवास बैंक परिवार समाचार

9 से 11 जुलाई, 2014 तक चेन्नई में “फुटकर आस्तियां-गैर निष्पादक आस्तियां एवं वसूली” पर प्रशिक्षण

तमिलनाडु, चेन्नई में दिनांक 09 से 11 जुलाई, 2014 तक दो दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम का आयोजन किया गया। इस प्रशिक्षण का विषय— “फुटकर आस्तियां-गैर निष्पादक आस्तियां एवं वसूली” पर था। प्रशिक्षण के प्रारंभ में प्रतिभागियों के बीच मेल-मिलाप, परस्पर परिचय का आयोजन किया गया। इसके पश्चात प्रथम सत्र प्रारंभ किया गया। इस सत्र में भारतीय रिजर्व बैंक, मुंबई के बैंकिंग प्रचालन एवं विकास विभाग के सहायक महाप्रबंधक श्री बी.नेता जी ने संबोधित किया, जिसमें आपने भारतीय रिजर्व बैंक के द्वारा जारी दिशा-निर्देश के अनुसार आय की पहचान तथा आस्ति वर्गीकरण सिद्धांतों तथा लाभप्रदता पर गैर निष्पादक आस्तियों के गंभीर प्रभाव के बारे में जानकारी प्रदान की।



प्रशिक्षण का दूसरा एवं तीसरा सत्र भारतीय स्टेट बैंक स्टाफ कॉलेज हैदराबाद के पूर्व उपमहाप्रबंधक श्री गणेश रामास्वामी ने लिया जिसमें आपने क्रमशः गहन निगरानी पर विशेष ध्यान केन्द्रित करते हुए ऋण संस्वीकृति के पश्चात की प्रक्रिया तथा अनर्जक आस्ति कारण, लक्षण एवं निवारक उपायों आदि पर प्रकाश डाला। आज के प्रशिक्षण का चौथा एवं आज का अंतिम सत्र मदुरई के अधिवक्ता श्री पाला रामास्वामी ने संबोधित किया जिसमें आपने ऋण वसूली ट्रिब्युनल, सरफेसी एक्ट-कानूनी मुकदमों तथा गैर निष्पादक आस्ति वसूली के कानूनी निर्णयों पर (केस-1) परिचर्चा की।

इस प्रशिक्षण के अगले दिन 10 जुलाई, 2014 को पाचवां सत्र एसबीआई कैपिटल मार्केट लि., चेन्नई रीजनल आफिस के वरिष्ठ उपाध्यक्ष एवं प्रधान श्री सी. शंकरनारायनन ने संबोधित किया, जिसमें आपने वसूली के साधन, गहन अनुपालन तथा सहज वसूली उपायों के साथ भारतीय रिजर्व बैंक एवं राष्ट्रीय आवास बैंक के

दिशा-निर्देशों के तहत नियुक्त वसूली एजेंटों एवं उनकी भूमिकाओं के बारे में प्रकाश डाला। आपने ही प्रशिक्षण का छठवां सत्र लिया, जिसमें आपने वसूली के साधनों में गहन वसूली उपायों के तहत पीडीसी प्रबंधन/ईसीएस प्रबंधन तथा चुकौती पुनर्निर्धारण तथा पुनर्गठन पर प्रकाश डाला।

आज का अगला सत्र स्टेट बैंक स्टाफ कालेज, हैदराबाद के पूर्व उपमहाप्रबंधक श्री गणेश रामामूर्ति ने लिया, जिसमें आपने भी अनर्जक आस्तियों के कारणों, लक्षणों एवं बचावात्मक उपायों पर प्रकाश डाला। इसके साथ ही आपने कुछ केस स्टडीज को भी प्रस्तुत किया। आज का अंतिम प्रशिक्षण का आठवां सत्र मदुरई के अधिवक्ता श्री पाला रामास्वामी ने लिया। इस सत्र में आपने कर्ज वसूली न्यायिक प्राधिकरण गैर निष्पादक आस्ति के तहत सरफेसी एक्ट, विधिक मामलों/निर्णयों के केस स्टडीज के भाग दो के बारे में परिचर्चा की तथा कुछ मामलों की व्याख्या प्रस्तुत की।

दिनांक 11 जुलाई, 2014 को सत्र के तीसरे दिन का पहला एवं प्रशिक्षण का नौवां सत्र केनरा बैंक, बैंगलूरु के सहायक महाप्रबंधक श्री जे.पी. सौकर के द्वारा संबोधित किया गया, जिसमें आपने आवास ऋणों के तहत उन गैर निष्पादक आस्तियों पर प्रकाश डाला जो धोखाधड़ी के कारण बनी और उनसे बचने के उपायों पर भी प्रकाश डाला। आज का दूसरा व प्रशिक्षण का दसवां सत्र राष्ट्रीय आवास बैंक के चेन्नई प्रतिनिधि कार्यालय के प्रबंधक श्री डब्ल्यू.सी. रोबिन के द्वारा लिया गया, जिसमें प्रतिभूतिकरण परिसंपत्ति पुनर्निर्माण और प्रतिभूति स्वत्व की केन्द्रीय रजिस्ट्री अपने सेंट्रल रजिस्ट्री फार सिकोरिटाइजेशन, असेट रिकंसट्रक्शन एंड सिक्योरिटी इंटेरिस्ट ऑफ इंडिया (सरसाई) पर प्रकाश डाला और यह भी बताया कि केन्द्रीय रजिस्ट्री की इस प्रणाली से किस प्रकार धोखा-धड़ी को रोकने में मदद मिल सकती है। आज का अंतिम एवं प्रशिक्षण का ग्यारहवां सत्र भी श्री डब्ल्यू.सी. रोबिन के द्वारा संबोधित किया गया जिसमें आपने “निम्न आय आवास हेतु ऋण जोखिम गारंटी निधि न्यास (सीआरजीएफटीएलआईएच) पर प्रकाश डाला एवं यह बताया कि किस प्रकार गरीब से गरीब व्यक्ति गृह ऋण ले सकता है और बैंकों का जोखिम यह निधि न्यास उठाएगा। तत्पश्चात धन्यवाद एवं प्रमाणपत्र वितरण के साथ तीन दिवसीय प्रशिक्षण का समापन किया गया।

17 से 19 जुलाई, 2014 तक धारवाड़, कर्नाटक में कर्नाटक विकास ग्रामीण बैंक हेतु “ग्रामीण आवास वित्त” पर प्रशिक्षण कार्यक्रम

कर्नाटक के धारवाड़ में 17 से 19 जुलाई, 2014 तक कर्नाटक



विकास ग्रामीण बैंक के लिए “ग्रामीण आवास वित्त” विषय पर एक तीन दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किया गया। इस प्रशिक्षण का प्रथम सत्र क्षेत्रीय ग्रामीण बैंकों के द्वारा आवास ऋणों के विपणन एवं आवास वित्त की व्यावसायिक उपादेयता विषय पर था। इस विषय पर इस सत्र को स्टेट बैंक स्टाफ कालेज, हैदराबाद के पूर्व संकाय एवं उपमहाप्रबंधक श्री गणेश रामामूर्ति ने संबोधित किया। आपने ही आज के दूसरे सत्र को संबोधित करने का दायित्व निभाया तथा आपने ऋण मूल्यांकन एवं आवास ऋण आवेदनों के प्रक्रियागत पक्ष (भाग-1) के व्यावहारिक प्रायोगिक अभ्यास पर परिचर्चा की तथा सभी पहलुओं पर प्रकाश डाला।

इस प्रशिक्षण का तीसरा सत्र स्टेट बैंक स्टाफ कालेज हैदराबाद के पूर्व सहायक महाप्रबंधक एवं संकाय श्री एल. राजन ने लिया। आपने इस दौरान आवास ऋणों के आवेदन पत्रों के तकनीकी/विधिक मूल्यांकन एवं प्रक्रियात्मकता पर प्रकाश डाला। इसी सत्र में रोल प्ले एवं केस स्टडी के माध्यम से परिस्थितियों को दर्शाया गया। आज का अंतिम एवं चौथा सत्र आरबीटीसी के पूर्व निदेशक एवं संकाय संकाय श्री जी.वी.एस. भगवान ने अपने ग्राहक को जानिए (केवाईसी-एफपीसी) दिशा-निर्देश के बारे में परिचर्चा करते हुए प्रकाश डाला।



18 जुलाई, 2014 को प्रातः पांचवें सत्र की शुरुआत भी श्री जी.वी.एस. भगवान के द्वारा ही की गई। इस सत्र में आपने प्रशिक्षणों को ग्रामीण आवास ऋणों के संवितरण, अनुपालन एवं वसूली पर विस्तृत जानकारी प्रदान की। प्रशिक्षण का छठवां एवं आज का दूसरा सत्र मदुरई के अधिवक्ता श्री पाला रामास्वामी ने लिया, जिसमें आपने कानूनी पहलुओं को ध्यान में रखते हुए आवास ऋणों में अभिलेखन एवं दस्तावेजीकरण पर चर्चा की तथा इसके व्यावहारिक पक्ष को भी प्रस्तुत किया। आज का तीसरा एवं प्रशिक्षण का सातवां सत्र स्टेट बैंक स्टाफ कालेज के पूर्व संकाय एवं उपमहाप्रबंधक श्री गणेश रामामूर्ति ने लिया। इस सत्र में आपने आवास ऋण आवेदनों का मूल्यांकन एवं प्रक्रियात्मक चरणों की जानकारी प्रदान की तथा इसके व्यावहारिक एवं प्रयोगात्मक अभ्यास को भी कराया।

आज का चौथा एवं प्रशिक्षण का आठवां सत्र मदुरई के अधिवक्ता श्री पाला रामास्वामी ने लिया और आपने इस दौरान मार्टगेज (बंधक) धोखा-धड़ी के प्रबंधन पर प्रकाश डाला। आज का अंतिम एवं प्रशिक्षण का नौवां सत्र स्टाफ कालेज, एसबीआई, हैदराबाद के पूर्व सहायक प्रबंधक एवं संकाय श्री एल. राजन ने लिया और व्यापार संवर्धन एवं बेहतरी में ग्राहक सेवा और उसकी महत्ता पर प्रकाश डाला।

19 जुलाई, 2014 को प्रशिक्षण के तीसरे दिन का पहला एवं प्रशिक्षण का दसवां सत्र राष्ट्रीय आवास बैंक, बेंगलूरु, प्रतिनिधि कार्यालय के प्रबंधक श्री एच.के. गोपालाकृष्णन ने लिया जिसमें आपने भारत के प्रतिभूति स्वत्व एवं प्रतिभूतिकरण, आस्ति पुननिर्माण की केन्द्रीय रजिस्ट्री (सरसाई) पर प्रकाश डाला तथा उसकी भूमिका एवं महत्व पर जानकारी प्रदान की। प्रशिक्षण का अगला सत्र भी प्रबंधक श्री एच.के. गोपालाकृष्णन ने ही लिया और इस सत्र में आपने निम्न आय आवास हेतु ऋण जोखिम गारंटी निधि न्यास के बारे में जानकारी प्रदान की तथा यह भी बताया कि इसके होने से निम्न एवं गरीब वर्ग को ऋण देने में बैंकों का जोखिम आवृत्त होगा तथा वे सरलता एवं सहजता से ऋण प्रदान कर सकेंगे।

सभी सत्रों की समाप्ति के बाद सभी प्रशिक्षुओं को क्षेत्रीय ग्रामीण बैंकों के उच्च प्रबंधकों द्वारा संबोधित किया गया, जिसमें उन्हें इस प्रशिक्षण की आवश्यकता, प्रभावीपन एवं महत्ता के बारे में बताया तथा उसकी प्रभावशीलता को आंकलित करने की सलाह दी गई। धन्यवाद ज्ञापन एवं प्रशिक्षण प्रमाण पत्र वितरण के साथ प्रशिक्षण का समापन किया गया।

हैदराबाद में 12 से 14 अगस्त, 2014 तक “आवास वित्त में धोखाधड़ी व्यवहार की रोकथाम” पर प्रशिक्षण

दिनांक 12 से 14 अगस्त, 2014 तक हैदराबाद शहर में आवास वित्त क्षेत्र में धोखाधड़ी के आचरण या व्यवहार की रोकथाम और बचाव संबंधी तीन दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किया गया। परस्पर परिचय के पश्चात प्रशिक्षण प्रातः 10 बजे से प्रारंभ हुआ। इस प्रशिक्षण का पहला सत्र भारतीय रिजर्व बैंक, हैदराबाद, लीगल सेल के सहायक विधि सलाहकार श्री एस.सी. महंता ने लिया। आपने इस अवसर पर आवास ऋण के क्षेत्र में धोखाधड़ी आचरण की रोकथाम पर भारत सरकार के द्वारा किए गए उपायों तथा भारतीय रिजर्व बैंक के द्वारा धोखाधड़ी से संरक्षण एवं बचाव हेतु निर्धारित दिशा-निर्देशों के बारे में जानकारी उपलब्ध कराई। इस प्रशिक्षण का दूसरा एवं तीसरा सत्र साइनेज कंसल्टिंग प्रा.लि. के निदेशक श्री एस. स्वामीनाथन ने लिया जिसमें आपने दो भागों में आवास वित्त में धोखाधड़ी (जाल-साजी) : जालसाजी के वित्तीय एवं प्रचालनात्मक पहलू तथा जोखिम न्यूनीकरण उपाय (भाग-1 एवं भाग-2) के बारे में केस स्टडीज के माध्यम से जानकारी प्रस्तुत की। आज का अंतिम व चौथा सत्र राष्ट्रीय आवास बैंक के महाप्रबंधक श्री वी.राजन ने



संबोधित किया, जिसमें आपने शिकायत (परिवाद) पंजीयन एवं सूचना डाटाबेस (ग्रिड) के बारे में जानकारी प्रदान की और इस प्रणाली की महत्ता एवं आवश्यकता के बारे में जानकारी उपलब्ध कराई।

प्रशिक्षण के दूसरे दिन का प्रथम सत्र प्रातः 9 बजे से प्रारंभ हुआ, जिसे लखनऊ के आईपीएस कमांडेंट श्री कमलेन्द्र प्रसाद ने संबोधित किया। इस सत्र में आपने जालसाजी/धोखाधड़ी को रोकने की



महत्ता एवं बचाव तथा उसकी रिपोर्टिंग करने के बारे में जानकारी प्रदान की। श्री कमलेन्द्र प्रसाद जी ने ही आज का दूसरा और प्रशिक्षण का छठवां सत्र लिया, जिसमें आपने वित्तीय विवरणियों की जालसाजी को पता करने (खोजने) हेतु आकड़ा विश्लेषण परीक्षण (डाटा एनालिस्ट टेस्ट) के बारे में परिचर्चा व अभ्यास कराया और उसके महत्व को प्रतिपादित किया।

आज का तीसरा एवं प्रशिक्षण का सातवां सत्र एसबीआई स्टाफ कालेज हैदराबाद के पूर्व संकाय एवं महाप्रबंधक श्री गणेश रामामूर्ति ने लिया, जिसमें आपने जालसाजी/धोखाधड़ी का पता लगाना एवं जांच-पड़ताल के बारे में बताया और इसका व्यावहारिक अभ्यास भी कराया। आज का चौथा सत्र मदुरै के अधिवक्ता श्री पाला रामास्वामी ने लिया, जिसमें आपने मार्टगेज (बंधक) जालसाजियों का प्रबंधन एवं वसूली के लिए विधिक उपचारों के बारे में केस स्टडीज के माध्यम से जानकारी उपलब्ध कराई। आज का पांचवां एवं प्रशिक्षण का नौवां सत्र राष्ट्रीय आवास बैंक की प्रबंधक सुश्री पी.श्रीजा ने लिया, जिसमें आपने भारत के प्रतिभूतिकरण आस्ति पुनर्निर्माण तथा प्रतिभूति स्वत्व की केन्द्रीय रजिस्ट्री (सरसाई) के बारे में जानकारी देते हुए उसकी महत्ता एवं आवश्यकता के बारे में बताया। प्रशिक्षण का दसवां सत्र रा. आ.बैंक के प्रबंधक श्री के. जगनमोहन राव ने लिया, जिसमें आपने निम्न आय आवास हेतु ऋण जोखिम गारंटी विधि न्यास के बारे में जानकारी एवं भूमिका के बारे में बताया।

दिनांक 14 अगस्त, 2014 को प्रातः 9 बजे पहला एवं प्रशिक्षण ग्यारहवां सत्र एकेडेमी फार काउंसिलिंग एंड एजुकेशन प्रा.लि. की निदेशिका सुश्री सलमा प्रभु ने लिया, जिसमें आपने

धोखाबाजों/जालसाजों की शारीरिक हाव-भाव एवं मुद्राएं तथा उनकी व्याख्या के बारे में जानकारी प्रदान की। इस प्रशिक्षण का बारहवां सत्र स्टेट बैंक स्टाफ कालेज हैदराबाद के पूर्व संकाय एवं महाप्रबंधक श्री गणेश रामामूर्ति ने संबोधित किया, जिसमें आपने धोखाधड़ियों की पहचान, खोजबीन एवं उसके न्युनीकरण उपायों के बारे में जानकारी प्रदान की। उपसंहार एवं प्रमाणपत्र वितरण के साथ प्रशिक्षण कार्यक्रम समाप्त किया गया।

पुणे, महाराष्ट्र में दिनांक 17 से 19 सितंबर, 2014 तक “जोखिम प्रबंधन एवं आस्ति देयता” पर प्रशिक्षण कार्यक्रम का आयोजन

महाराष्ट्र के पुणे शहर में दिनांक 17 से 19 सितंबर, 2014 के बीच जोखिम प्रबंधन एवं आस्ति देयता प्रबंधन पर एक तीन दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किया। प्रशिक्षण कार्यक्रम के प्रारंभ में स्वागत संबोधन एवं प्रशिक्षुओं का पारस्परिक परिचय कराया गया। प्रशिक्षण का पहला सत्र स्टेट बैंक स्टाफ कालेज, हैदराबाद के संकाय सदस्य श्री एम.वी.एस. प्रसाद ने लिया जिसमें आपने जोखिम प्रबंधन बेसल समझौता एवं भारतीय परिदृश्य के तहत लागू अंतर्राष्ट्रीय दृष्टिकोण एवं पहलुओं पर प्रकाश डाला। प्रशिक्षण का दूसरा सत्र भी श्री एम.वी.एस. प्रसाद ने ही संबोधित किया। इस सत्र में आपने जोखिम प्रबंधन तथा वैचारिक ढांचागत प्रक्रिया के बारे में जानकारी प्रदान की।

आज का तीसरा सत्र स्टेट बैंक स्टाफ कालेज, हैदराबाद के पूर्व उपमहाप्रबंधक एवं संकाय श्री गणेश रामामूर्ति ने लिया। जिसमें आपने ऋण जोखिम के प्रकार, जोखिम का आकलन, ऋण जोखिम का न्युनीकरण, उद्धरण द्वारा प्रकरण प्रस्तुति करके जानकारी



प्रदान की। प्रशिक्षण का अगला एवं चौथा सत्र श्री रामामूर्ति जी ने लिया जिसमें आपने चलनिधि जोखिम तथा एएलएम पर परिचर्चा की और इसमें अल्को की भूमिका, एएलएम स्थिति की निगरानी एवं चलनिधि की समीक्षा तथा आकस्मिक योजना समाधान के ऊपर प्रकाश डाला।



दिनांक 18 सितंबर, 2014 को प्रशिक्षण के दूसरे दिन का पहला एवं प्रशिक्षण का पांचवा सत्र ब्याज दर जोखिम (आईआरआर) पर श्री गणेश रामामूर्ति ने लिया। जिसमें आपने आईआरआर (ब्याज दर जोखिम) माप तकनीक, ब्याज दर जोखिम प्रबंधन एवं नियंत्रण प्रक्रिया तथा केस स्टडीज के द्वार व्यावहारिक प्रकरण से प्रस्तुति प्रदान की। आज का दूसरा सत्र स्टेट बैंक स्टाफ कालेज हैदराबाद के संकाय श्री एम.वी.एस. प्रसाद ने लिया। इस सत्र में आपने प्रचालनात्मक जोखिम के अंतर्गत प्रचालनात्मक जोखिम प्रबंधन के सिद्धांत प्रचालनात्मक जोखिम प्रबंधक की विधियां, मामले का अध्ययन आदि के बारे में जानकारी प्रदान की।

आज का तीसरा किंतु प्रशिक्षण का सातवां सत्र साइनेज कंसल्टिंग प्रा.लि. के निदेशक श्री एस. स्वामीनाथन ने संबोधित किया जिसमें आपने जोखिम का कम (न्युनीकृत) करने की तकनीक के बारे में केस स्टडीज के माध्यम से परिचर्चा प्रस्तुत की। आज का अंतिम एवं

आठवां सत्र कल्याणरमन स्ट्रेटेजिक मैनेजमेंट कंसल्टेंट्सके सीओओ, श्री एस.के. अय्यर ने लिया जिसमें आपने जोखिम की पहचान, योजना आकलन तथा रिपोर्टिंग के बारे में जानकारी प्रदान की।

दिनांक 19 सितंबर, 2014 को प्रातःकालीन प्रथम एवं प्रशिक्षण का नौवां सत्र रा.आ.बैंक के सहायक महाप्रबंधक श्री एस.वी. सांबामूर्ति ने लिया जिसमें आपने प्रतिभूतिकरण परिसंपत्ति पुनर्निमाण और प्रतिभूति स्वत्व की केन्द्रीय रजिस्ट्री (सरसाई) की भूमिका, आवश्यकता एवं महत्व पर प्रकाश डाला। प्रशिक्षण का दसवां एवं अंतिम सत्र भी श्री सांबामूर्ति जी ने ही लिया। इस सत्र में आपने निम्न आय आवास हेतु ऋण जोखिम गारंटी निधि न्यास (सीआरजीएफटीएलआईएच) के बारे में जानकारी प्रदान की तथा उसकी महत्ता एवं आवश्यकता के बारे में बताया।

अखिल भारतीय राजभाषा सम्मेलन

दिनांक – 03 जुलाई, 2014

राष्ट्रीय आवास बैंक के द्वारा दिनांक 03 जुलाई, 2014 को अखिल भारतीय राजभाषा सम्मेलन का आयोजन किया गया। इस सम्मेलन में अधिकतर बैंकों एवं वित्तीय संस्थानों से लगभग 100 सहभागी उपस्थित हुए। यह सम्मेलन प्रातः 9.30 बजे प्रतिभागियों के पंजीकरण के साथ प्रारंभ हो कर सायं 5.00 बजे तक चला।

सम्मेलन के मुख्य अतिथि भारत सरकार, वित्त मंत्रालय, वित्तीय सेवाएं विभाग, के संयुक्त निदेशक (राजभाषा) डॉ. वेद प्रकाश दुबे तथा विशेष अतिथि गृह मंत्रालय, राजभाषा विभाग के केन्द्रीय हिंदी प्रशिक्षण संस्थान के निदेशक(राजभाषा) डॉ. जय प्रकाश कर्दम थे। इस सम्मेलन की अध्यक्षता राष्ट्रीय आवास बैंक के कार्यपालक निदेशक(श्री आर.एस. गर्ग) ने की। इनके अलावा राष्ट्रीय आवास बैंक के महाप्रबंधक श्री ललित कुमार, महाप्रबंधक श्री ए.पी. सक्सेना तथा महाप्रबंधक एवं मुख्य सतर्कता अधिकारी श्री ए.के. सिंह भी उपस्थित थे। इस सम्मेलन में लगभग सभी बैंकों एवं वित्त संस्थानों से प्रतिभागी उपस्थित थे, जिनमें महाप्रबंधक, उप महाप्रबंधक एवं सहायक महाप्रबंधक, मुख्य प्रबंधक, प्रबंधक एवं सहायक प्रबंधक स्तर के अधिकारी आए थे।

इस सम्मेलन का शुभारंभ निर्धारित कार्यक्रमानुसार हुआ। मंच का संचालन करते हुए राष्ट्रीय आवास बैंक के सहायक महाप्रबंधक (प्रभारी- राजभाषा) डॉ. जी.एन. सोमदेवे ने सम्मेलन के अध्यक्ष कार्यपालक निदेशक श्री आर.

एस. गर्ग सहित दोनों अतिथियों तथा महाप्रबंधक श्री ललित कुमार को मंच पर आमंत्रित किया। मंचासीन अधिकारियों का परिचय देने के पश्चात दीप प्रज्वलन के साथ सम्मेलन प्रारंभ हुआ। तत्पश्चात सम्मेलन के अध्यक्ष एवं केन्द्रीय हिंदी प्रशिक्षण संस्थान के निदेशक(राजभाषा) डॉ. जय प्रकाश कर्दम एवं वित्तीय सेवाएं विभाग, के संयुक्त निदेशक (राजभाषा) डॉ. वेद प्रकाश दुबे का पुस्तक-पुष्प-गुच्छ देकर एवं शाल ओढ़ाकर सम्मान एवं सत्कार किया।

कार्यक्रम को आगे बढ़ाते हुए सर्वप्रथम बैंक की गृह पत्रिका- आवास भारती के "अखिल भारतीय राजभाषा सम्मेलन विशेषांक-2014" का विमोचन किया। इस विशेषांक में सम्मेलन के लिए (निम्न लिखित) पाँच विषयों पर मंगाए गए आलेखों को संकलित कर प्रकाशित किया गया ताकि आलेख लेखकों के अलावा सहभागियों के पास स्मृति स्वरूप आलेख संग्रहीत रहें। आमंत्रित आलेख निम्न विषयों पर थे-

- प्रथम – राजभाषा के प्रगामी प्रयोग को बढ़ावा देने एवं अधिकारियों को प्रेरित करने हेतु उपाय
- द्वितीय – सूचना प्रौद्योगिकी के युग में राजभाषा का महत्व
- तृतीय – भारत में रिहायशी आवास की स्थिति
- चतुर्थ – किफायती, ऊर्जा दक्ष एवं हरित आवास की आवश्यकता एवं तत्संबंधी उपाय



पंचम – ऋण वसूली को बेहतर बनाने के नवोन्मेषी उपाय तथा जोखिम प्रबंधन

इस सम्मेलन का केन्द्र बिंदु उपरोक्त पांच विषय ही थे, प्रत्येक विषय पर एक सत्र आयोजित किया गया जिस में सर्वश्रेष्ठ लगभग 10 लेखों को छांट कर पावर प्वाइंट पर प्रस्तुति दी गई एवं उन पर विशेषज्ञ सत्राध्यक्ष के द्वारा समीक्षा प्रस्तुत की गई। यहाँ पर यह स्पष्ट करना उपयुक्त होगा

कि कुछ विषयों जैसे कि 'भारत में रिहायशी आवास की स्थिति' तथा 'किफायती, ऊर्जा दक्ष एवं हरित आवास की आवश्यकता एवं तत्संबंधी उपाय' पर जहां एक-एक आलेख की प्रस्तुति रखी गई, वहीं 'राजभाषा के प्रगामी प्रयोग को बढ़ावा देने एवं अधिकारियों को प्रेरित करने हेतु उपाय' तथा सूचना प्रौद्योगिकी के युग में राजभाषा का महत्व' पर तीन- तीन आलेखों की प्रस्तुति रखी गई। बैंकिंग जगत में इस सम्मेलन की व्यापक सराहना की गई।

राजभाषा सम्मेलन की कुछ झलकियाँ





सतर्कता क्या है?



डॉ. ए.के. सिंह
मुख्य सतर्कता अधिकारी

कुछ सूक्त वाक्य

- एक सतर्क राष्ट्र प्रगतिशील राष्ट्र होता है।

- साश्वत सतर्कता आजादी का मूल्य है।
- ईश्वर ने जिस शर्त पर मानव को आजादी दी है, वह है साश्वत सतर्कता

आधुनिक प्रबंधन में सतर्कता का तात्पर्य किसी संगठन के अधिकारियों/कर्मचारियों की गतिविधियों पर सतर्क निगाहें रखना है जिससे यह सुनिश्चित रहे कि उस संगठन की गतिविधियां एवं क्रियाकलाप पारदर्शी एवं भ्रष्टाचार मुक्त ढंग से निभाई जा रही है कि कार्यालयी लेन-देन में व्यक्तियों की ईमानदारी एवं सत्यनिष्ठा को यथावत बनाए रखा जाए। दूसरे शब्दों में, त्वरित एवं सुस्पष्ट प्रशासन सुनिश्चित करने हेतु सतर्कता एक प्रबंधन साधन है, जिसके द्वारा एक संस्थान में सक्षमता एवं प्रभावशीलता को हासिल किया जा सके। सतर्कता में कमी या अपर्याप्त सतर्कता एक संगठन में भ्रष्टाचार, बर्बादी एवं हानियों को बढ़ावा देती है।

इसलिए, सतर्कता प्रबंधन के किसी अन्य संवर्ग या खंड की भांति ही एक महत्वपूर्ण क्षेत्र है। यदि एक संगठन में सतर्कता तंत्र प्रभावी होता है तो यह निश्चय ही अन्य महत्वपूर्ण संवर्गों में प्रभावीपन को सुनिश्चित बनाता है। यह प्रबंधन का एक साधन है। इसलिए एक संगठन ऐसे खतरों के प्रति सुरक्षा निर्माण एवं मानव शक्ति पदास्थापित करने के द्वारा बचाव करता है।

इसके साथ ही यह संगठन को आंतरिक खतरों से भी बचाता है, जो कि कभी-कभी बाहरी खतरों से अधिक खतरनाक होते हैं। सतर्कता में केवल जांच पड़ताल या खोजबीन नहीं, बल्कि बचाव अधिक महत्वपूर्ण होता है। बचाव न करके दंडित करना ठीक वैसे ही है जैसे कि एक पंप के द्वारा रिसावों (लीकेज) को रोके बिना पानी को पंप करना।

सतर्कता के उद्देश्य हैं :-

- प्रक्रियाओं/प्रणाली विश्लेषण में जटिलताओं के परिप्रेक्ष्य में सूदृढ़ संकेतों को उठाना
- भ्रष्टाचार की जगहों एवं बिंदुओं को पहचानना। कर्मचारियों के तबादलों के साथ-साथ, पर्यवेक्षण, अचानक निरीक्षण, उपयुक्त कर्मचारियों को पदास्थापित करना।
- भ्रष्ट एवं धूर्तों को समाप्त करना, अंदरूनी एवं बाह्य क्रियाकलापों एवं संपर्कों पर नजर रखना।

आमतौर पर दो महत्वपूर्ण सतर्कता प्रक्रमों का उपयोग किया जाता है—

1. निवारक सतर्कता
2. दंडात्मक सतर्कता

निवारक सतर्कता का सामान्यतः अर्थ एक संगठन को सक्षम एवं भ्रष्टाचार मुक्त बनाने हेतु उसके नियमों एवं विनियमों की लगातार समीक्षा करना और अधिकारियों/कर्मचारियों को भ्रष्टाचार के खतरे के प्रति जागरूक बनाए रखना।

प्रमुख निवारक गतिविधियां हैं -

1. कर्मचारियों/अधिकारियों को ईमानदारी पूर्ण, पारदर्शी तथा प्रभावी निर्णय लेने हेतु सुशिक्षित करने के लिए सतर्कता जागरूकता कार्यक्रमों का आयोजन करना।
2. यह जानने के लिए वार्षिक वैयक्तिक परिसंपत्ति विवरणियों की मूल्यांकन समीक्षा करना कि किसी अधिकारी की संपदा में ज्ञात आय स्रोतों के अनुपात में अधिक वृद्धि तो नहीं हुई।
3. संवेदनशील पदों पर पदेन अधिकारियों का क्रमानुसार स्थानांतरण
4. भ्रष्ट अधिकारियों/आचरणों या व्यवहारों की पहचान करना। सत्यनिष्ठा या ईमानदारी की आशंका वाले अधिकारियों की सूची बनाना
5. अनुचित आचरणों/व्यवहारों एवं विनियमितताओं की पहचान करने हेतु नियमित एवं औचक निरीक्षण आयोजित करना।
6. विभिन्न सेवाओं/आचरणों/अनुशासन एवं अपील नियमों का उचित एवं प्रभावी क्रियान्वयन
7. प्रणाली एवं प्रक्रियाओं की समीक्षा करना तथा कमजोर छिद्रों (कमियों) को दूर या बंद करने हेतु बदलावों को सुझाना
8. बिलों के भुगतान तथा खरीद/अधिप्राप्ति के लिए विभिन्न सीवीसी दिशा-निर्देशों को अनुपालित करना
9. चेतावनी सूचक योजना (विशिल ब्लोअर स्कीम) का शुभारंभ करना

दंडात्मक सतर्कता में सामान्यतः शामिल होता है—

1. भ्रष्टाचार/अनियमितताओं में संलग्न लोग के खिलाफ त्वरित एवं सुधारात्मक कार्रवाई
2. गलत कार्य में संलग्न लोगों के खिलाफ सख्त कार्रवाई
3. विभागीय मामलों के त्वरित निपटान हेतु जांच-पड़ताल तथा साक्ष्यों का संग्रह
4. दंडित किए गए भ्रष्ट अधिकारियों को यथोचित प्रचार-प्रसार

यद्यपि दंडात्मक सतर्कता अनिवार्य है, तथापि बचावात्मक सतर्कता को प्राथमिकता दी जानी चाहिए। कोई भी वह संगठन जो बेहतर परिवार/शिकायत निवारण प्रणाली अपनाता है, ऐसी प्रणाली एवं प्रक्रिया प्रस्थापित करता है तो इससे सुशासन सुगमित होगा और तब उसके लिए बचावात्मक सतर्कता एक बेहतर भूमिका निभाती है।



आर्यभाषा – हमारी राजभाषा



डॉ. जी.एन. सोमदेवे
स.महा.प्र. एवं संपादक

वह दिन ऐतिहासिक रहा है जब 15 अगस्त, 1947 को भारत को स्वतंत्रता मिली। गणतंत्र दिवस भी ऐतिहासिक था। हिंदी के लिए 14 सितम्बर, 1949 गौरवपूर्ण था जब संविधान सभा ने हिंदी को राजभाषा घोषित किया। लेकिन वह दिन भी अति महत्वपूर्ण होगा जब इस देश का अन्न, जल और प्राणवायु पर जीवित रहने वाला हिन्दुस्तानी पूर्ण रूप से हिंदी को राजभाषा के रूप में स्वीकार कर लेगा। सब को ज्ञात है कि जिस भाषा का अधिकाधिक प्रयोग सरकारी काम-काज में होता है उसे ही “राजभाषा” कहते हैं।

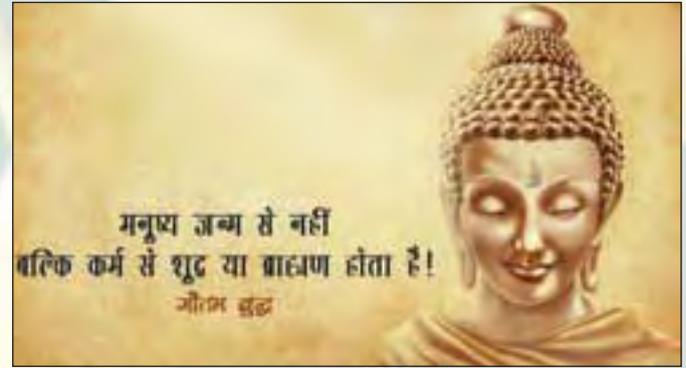
राजभाषा कार्यान्वयन का दायित्व जहां संघ, राज्य और अन्य सरकारी प्रतिष्ठानों और बैंकों आदि का है वहीं प्रतिष्ठानों के सर्वोच्च कार्यपालकों की जिम्मेदारी सब से अधिक है। सभी अपनी भूमिका का निर्वहण करें। पद को प्रतिष्ठा से जोड़ें। राजभाषा की प्रासंगिकता को समझें।

जर्मनी के एक विश्वविद्यालय के शोधकर्ताओं ने पाया कि बच्चे गर्भावस्था में ही मातृभाषा को ग्रहण करते हैं तथा समझने लगते हैं और उसी भाषा में रोते-चिल्लाते हैं। अर्थात् जो मां की भाषा होती है वहीं बच्चे की भाषा होती है। राजभाषा संवैधानिक दर्जा प्राप्त भाषा है। वह प्रशासनिक भाषा भी होती है। राजभाषा का दर्जा प्राप्त भाषा का उल्लेख स्पष्ट रूप से कागजातों में होता है। स्वतंत्रता से पूर्व राजभाषा अंग्रेजी और उर्दू थी मगर तब भी लोकप्रिय और जन-जन की बोली जाने वाली भाषा हिंदी ही थी। हिंदी की विविधता ही उसका श्रृंगार है।

देश का संविधान अंग्रेजी में लिखा गया; परंतु संविधान सभा की स्पष्ट धारणा थी कि देश का कामकाज हिंदी में हो। भारतीय संविधान के भाग 5.6 एवं 17 के कुल 11 अनुच्छेदों में संघ की भाषा की विवेचना की गई है। अनुच्छेद 120, 210, 343, 344, 346 तथा 351 आदि में राजभाषा के प्रगामी प्रयोग तथा संवृद्धि हेतु संघ को निर्देश दिए गए हैं। संपर्क भाषा से तात्पर्य ऐसी भाषा से है जिससे विभिन्न वर्ग के देशवासियों से सुगमता से संपर्क किया जा सके। अतः सभी को चाहिए कि औपचारिक रूप से सर्वमान्य संपर्क भाषा (राजभाषा) को स्वीकार करने का संकल्प लें। भाषा निःसंदेह संप्रेषण का माध्यम है। इसके द्वारा ही हम दूसरों तक पहुँचते हैं। भाषा मानव चेतना को जागृत करने का कार्य करती है। यह कहना अतिशयोक्तिपूर्ण नहीं होगा की प्रादेशिक भाषाओं में प्रदेश बोलते हैं

लेकिन हिंदी में सम्पूर्ण देश बोलता है। स्वाभाविक तौर पर हिंदी का कार्यान्वयन एवं प्रयोग सरल है। विश्व के 150 विश्वविद्यालयों में हिंदी पढ़ाई जाती है।

नवीनतम संचार सूचना युग में हिंदी में कम्प्यूटर पर कार्य करना आसान है। यूनिकोड द्वारा हिंदी संचार माध्यम में क्रांति का सूत्रपात हुआ है। हिंदी की वजह से ही प्रिंट मीडिया तथा दृश्य मीडिया का महत्व बढ़ा है। अधिकतर बैंकिंग कारोबार आम बोलचाल की और ग्राहक को समझ सकने वाली भाषा में होना चाहिए। भारतीय रिजर्व बैंक, अन्य सभी बैंक, को आपरेटिव बैंक तथा क्षेत्रीय ग्रामीण बैंकों में अपेक्षाकृत ज्यादा कार्य हुआ। हिंदी को बढ़ावा देने के लिए बैंक प्रतिष्ठान लगभग पिछले 20-25 वर्षों से अत्यधिक योगदान कर रहे हैं। आमतौर पर हिंदी में कार्य करने हेतु मानसिकता की आवश्यकता है। कठिनाई मानसिकता में है। अंग्रेजी अच्छी तरह नहीं आती फिर भी चूंकि वह अभिज्यात वर्ग की भाषा है, सबको बड़ी प्रिय है। अंग्रेजी शिक्षित होने का एक आधार स्तंभ बन गई है जो कि सरासर गलत है। कम पढ़े लिखे लोगों पर अंग्रेजी अच्छा प्रभाव डाल सकती है मगर वह उच्च शिक्षित वर्ग को भी अपने शिकंजे में ले



सकती है यह सोचनीय विषय है। हम अंग्रेजी से हुए आजाद लेकिन अंग्रेजी के हुए गुलाम। राजभाषा अधिनियम और राजभाषा नियम में कोई दण्डात्मक प्रावधान नहीं किए गए। अर्थ यह है कि राजभाषा कार्यान्वयन का उद्देश्य पारस्परिक सहयोग पर आधारित हो। लेकिन केवल निदेश और परिपत्रों के सहारे हिंदी का कार्यान्वयन संभव नहीं है। जरूरत है वास्तविक रूप से सहयोग देने का। यह न हो कि सहयोग देने का भरोसा दिया गया हो और दे रहे हैं असहयोग। यह उचित नहीं है।

संसार के सभी देश अपना काम अपनी भाषा में करते हैं। केवल भारत इसका अपवाद है। आजादी के 64 वर्ष बाद भी हम अपना काम इंग्लैण्ड की भाषा अंग्रेजी में कर रहे हैं। हमारी आत्मा कहीं बेहोश पड़ी है। उसे जगाना होगा और अपनी असली आवाज़ पर अब हिंदी को पूर्ण रूप से अपनाना होगा। इक्कीसवीं सदी में आई सूचना क्रांति ने समूचे विश्व को हिलाकर रख दिया। यह जनसंचार की प्रिय भाषा हिंदी की वजह से संभव



हो सका है। मल्टीनेशनल कंपनियों अपने उत्पाद को भारतीय बाजार में बेचने हेतु हिंदी विज्ञापन का सहारा लेती है। बहुराष्ट्रीय कंपनियां सीधे किसानों और व्यवसायियों से संपर्क कर रही है। किसी बिचौलिए की मध्यस्थता के बिना। यह सब हिंदी के कारण ही संभव हो सका है। अंतरराष्ट्रीय व्यापार मंडल प्रत्येक को अन्य की भाषा सीखने को बाध्य कर रहा है ताकि आपसी संवाद को सही तरीके से संप्रेषित किया जाए। देश के 70 करोड़ लोग इसी सरल भाषा के माध्यम से एक दूसरे से जुड़े हुए हैं। बैंकों में राजभाषा का कार्यान्वयन हो रहा है इसका सारा श्रेय वरिष्ठतम कार्यापालकों को जाता है क्योंकि यदि मुखिया न चाहे या महत्व न दे तो अनुपालन करना कठिन हो जाता है। बैंकों के एटीएम स्थापित हो जाने की वजह से बैंकों का अपने ग्राहकों से संपर्क कम हो रहा है। ऐसे में कम्प्यूटर की भाषा को समृद्ध करना होगा। अंग्रेजी सॉफ्टवेयर को तबज्जो न देकर हिंदी सॉफ्टवेयर को अंग्रेजी सॉफ्टवेयर की तरह विकसित करना होगा।

यह एक मात्र सुझाव है और मैं समझता हूँ कि यह सुझाव निश्चित तौर पर



हामें तुम्हारे देव की धान
हिन्दी अपनाकर तुम बनो महान
हिन्दी दिवस की शुभकामनाएँ

पहले भी सोचा गया होगा कि नियुक्ति पत्र में ही कर्मचारी/अधिकारी को स्पष्ट निदेश देना चाहिए कि आपको एक निश्चित अवधि 2 या 3 वर्ष में राजभाषा का कार्यसाधक ज्ञान प्राप्त कर लेना है। इसके लिए प्रोत्साहन योजनाओं को नए सिरे से तैयार करना होगा और एक मानक तरीके से लक्ष्य निर्धारित करने होंगे। इसे एक दिशा-निर्देश की तरह लागू किया जाना चाहिए। सरल हिंदी का प्रयोग और सरल भाषा में हिंदी का प्रशिक्षण भी आवश्यक है। हिंदी के प्रचलित शब्दों का प्रयोग होना चाहिए तथा आवश्यकता अनुसार ही बहुत सोच-समझ कर दूसरी भाषा में शब्दों को हिंदी में समाविष्ट कर प्रयोग करना चाहिए। अन्य भाषाओं के शब्दों की भरमार हिंदी में करने की वजह से मूल हिंदी कहीं खो न जाए इसके लिए चिंतित होना जरूरी है। सरल भाषा के नाम पर हिंदी की हिंगलिश करने जैसी स्थिति से बचना होगा। जाहिर है यह सुझाव अन्य भाषा के शब्दों को हिंदी में प्रविष्ट कर अहिंदी भाषियों की तरफ से आया होगा वरना हिंदी

भाषी लोगों को अन्य भाषा के शब्दों की हिंदी में आवश्यकता नहीं है। हिंदी में इतने सारे और समृद्ध शब्द हैं जो कि मूल संस्कृत से लिए गए हैं या मूल भारतीय भाषाओं से।

वास्तव में एक कारोबारी संस्था के लिए हिंदी का प्रयोग महज सरकारी कानून की वजह से नहीं बल्कि जरूरत के लिए भी होना चाहिए ताकि भाषायी माध्यम से ग्राहक समुदाय से बहुत ही समीप से संपर्क स्थापित किया जा सके। राजभाषा विषयक नियमों को अनुपालन करने/करवाने की जिम्मेदारी मुख्य कार्यपालक की होती है मगर विडंबना यह है कि यह जिम्मेदारी सबसे छोटे अधिकारी यानि कि राजभाषा अधिकारी पर डाल दी जाती है जिसकी कोई नहीं सुनता। उल्टे उसकी फजीहत अधिक होती है। दक्षिण भारत में स्थित कार्यालयों में राजभाषा अधिकारियों की स्थिति तो और भी दयनीय है। वहां सरकारी काम-काज की भाषा आज भी अंग्रेजी ही है तथा बहुत कम मात्रा में वहां भी स्थानीय भाषा का प्रयोग किया जाता है। अधिकांश कार्यपालक अंग्रेजी शिक्षण संस्थाओं में पढ़े होने के कारण वे हिंदी में काम-काज करने में दिक्कत महसूस करते हैं। हिंदी उनके लिए महज एक खानापूती का विषय है। लेकिन यदि वे उन्हें प्राप्त पत्रों पर चंद शब्दों की टिप्पणी हिंदी में लिखें तो उनके अधीनस्थ नीचे के अधिकारी अपने आप हिंदी में ही मसौदे को प्रस्तुत करेंगे। इस प्रकार की मिसाल यदि उच्च कार्यपालक प्रस्तुत करेंगे तो निश्चित ही राजभाषा के कार्य को बढ़ावा मिलेगा। आपको जानकर कैसा लगेगा जब ग्राहकों को पता चलेगा कि इस संस्थान/बैंक/कार्यालय में भाषाई विवाद के चलते सरकारी नियमों का पालन नहीं हो रहा है। घर की बात घर में रह जाए यह अच्छा है। इसलिए ग्राहक को भगवान स्वरूप मानकर उसके जज्जबातों का सम्मान करें। दूसरी तरफ जैसा कि मैंने कहा है राजभाषा के स्वरूप को हिंगलिश नहीं करना है।

केन्द्र सरकार के संस्थानों में हिंदी अधिकारी कार्यपालक एवं कर्मचारियों के बीच सेतु का कार्य करता है। वह एक ऐसा संपर्क अधिकारी है जो हमेशा सेवा करने के लिए तत्पर रहता है। अतः कार्यपालकों को स्वयं भी राजभाषा अधिकारियों के कार्य पर नजर रखनी चाहिए। उनके कार्य की भी समीक्षा होनी चाहिए। वरिष्ठ कार्यपालकों को चाहिए कि विभागवार बैठकों में राजभाषा विभाग की भी अलग से बैठक लें एवं कार्य की समीक्षा करें। सुझाव दें एवं अनुपालन सुनिश्चित करवाएं। राजभाषा विभाग को खुला छोड़ देना उचित नहीं है। इसी तरह संस्थान के प्रत्येक विभाग से यह सुनिश्चित किया जाना चाहिए कि वहां राजभाषा नियमों का कितना पालन हो रहा है। वर्ष में एक बार हिंदी दिवस कार्यक्रम से पूर्व प्रत्येक विभाग को वर्ष भर में राजभाषा विषयक किए गए कार्य पर पावर पाइंट प्रस्तुति देना अनिवार्य होना चाहिए जिससे कि सभी विभाग अपनी जिम्मेदारी समझें और स्वयं निदान करें कि राजभाषा विषयक कार्य में उन्हें कहां कठिनाई हो रही है या वे कितना सहयोग कर रहे हैं।



हम भारतीय बड़ी अजीब मानसिकता में जीते हैं। इस संबंध में मैं बॉलीवुड की चर्चा करना चाहूंगा। हिंदी फिल्मी लोग अक्सर मिश्रित अंग्रेजी बोलते हुए पाए जाते हैं। एक छोटे से 5 शब्दों के वाक्य में 4 शब्द अंग्रेजी जबकि वे हिंदी दर्शकों के हिंदी अभिनेता हैं। हिंदी की खाते हैं और अंग्रेजी का गुण गाते हैं। प्रचार माध्यमों से बात करते वक्त उन्हें आधी-अधुरी अंग्रेजी और हिंदी अटक-अटक कर उच्चरित करते हुए देखा जा सकता है। फिल्मकारों का युवा वर्ग पर बड़ा असर होता है। हर युवा अपने को किसी फिल्मकार से जोड़कर देखता है उसी स्टाइल में जीने की कोशिश करता



है। फिल्मकारों की जुबान पर तो बंदिश नहीं लगाई जा सकती लेकिन दर्शकों को स्वयं बात समझनी चाहिए कि वह स्वभाषा का अपमान कर रहे हैं। जनता और दर्शकों को उसकी भाषाशैली का अनुकरण नहीं करना चाहिए। हिंदी के साथ अंग्रेजी का विफल प्रयोग नहीं करना चाहिए। अंग्रेजी एक अतिथि भाषा है। उसका योग्य मान-सम्मान होना चाहिए। पिछले 150 वर्षों से अतिथि भाषा सम्मान भोग रही है फिर भी उसका दिल भरा नहीं है। बड़ी हठीली है, जाती नहीं, अतः अब वक्त आ गया है कि उसके बाल पकड़कर उसे इंग्लैण्ड का रास्ता दिखा दें। उसके स्थान पर हिंदी को पूरे मन से स्थापित करें साथ ही साथ प्रादेशिक भाषा के प्रयोग को भी बढ़ाएं। द्वितीय भाषा के रूप में अंग्रेजी का प्रयोग दायम दर्जे पर करने से किसी को कोई आपत्ति नहीं होनी चाहिए। हम अंग्रेजी का विरोध, विरोध करने के खातिर नहीं करते।

मैं यह नहीं मानता कि हिंदी किसी पर थोपी जा रही है। आज भी इतने सारे नियम-उपनियम होने के बावजूद हिंदी का वास्तव में कितना प्रयोग हो रहा है सब जानते हैं। आंकड़ों के खेल से दूसरों को भ्रमित किया जा सकता है मगर सच्चाई छुप नहीं सकती बनावट के वसूलों से। कड़ाई से निरीक्षण किया जाए तो अच्छे-अच्छे की पोल खुल जाएगी। यह निर्विवाद सत्य है कि अंकों में हिंदी का दिनों दिन प्रयोग बढ़ रहा है। निजी क्षेत्र के बैंक भी अपनी शाखाएं अर्धशहरी स्थानों पर खोल रहे हैं या छोटे बैंकों को मर्ज करा रही है। मगर हिंदी में कार्य करने में अभी बहुत पीछे हैं क्योंकि

उनका गरीब साधारण ग्राहकों से ज्यादा वास्ता नहीं है। जिस दिन निजी क्षेत्र की बैंकें गरीबों तक पहुंचेंगी उन्हें स्थानीय भाषा तथा राष्ट्रीय स्तर पर हिन्दी का प्रयोग करना ही होगा। इस संबंध में भारतीय रिजर्व बैंक के वर्तमान गवर्नर साहब का खयाल अति उत्तम लगता है। उन्होंने कहा है कि छोटे बैंकों को खोलने के लिए प्रोत्साहित किया जाना चाहिए। मगर यह खयाल/विचार राष्ट्रीय बैंकों के नेताओं को पसंद नहीं आयेगा क्योंकि वे राष्ट्रीय बैंकों के कारोबार का विभाजन नहीं चाहते। स्थानीय भाषायी प्रयोग के लिए छोटे बैंक खोलने चाहिए ऐसा नहीं है। लेकिन ऐसा जरूर है कि उनके द्वारा भारतीय भाषाओं का प्रयोग बढ़ेगा। सरकारी संरक्षण की क्षेत्रीय ग्रामीण बैंकें अपने लक्ष्य की पूर्ती न कर सकी इसलिए उन्हें बड़ा रूप दिया जा रहा है। छोटे-छोट ग्रामीण बैंकों को मिलाकर बड़ी इकाई के रूप में बड़ी क्षेत्रीय ग्रामीण बैंकों में परिवर्तित किया जा रहा है। इससे उनके व्यापक दर्जे के स्वरूप से राजभाषा का प्रयोग निश्चित ही बढ़ेगा। हिंदी भाषा के माध्यम से ग्राहकों के प्रेम को प्राप्त करना किसी भी व्यापारिक संस्थान का ध्येय होना चाहिए। यह राह संस्थान को निश्चित ही विकास के मार्ग पर बहुत दूर ले जाएगी। राजभाषा के साथ भारतीय भाषाओं का भी महत्व बढ़े हमें ऐसी तरकीब हर हाल में इस्तेमाल करनी होगी तभी हम अपनी धरोहर को बचा पायेंगे।

क्रोध



सुनील रसानिया
सहायक महाप्रबंधक

एक 12-13 साल के लड़के को बहुत क्रोध आता था। उसके पिता ने उसे एक दिन ढेर सारी कीलें देकर कहा कि जब भी उसे क्रोध आये वो घर के सामने लगे पेड़ में वह कीलें ठोक दे। पहले दिन लड़के ने पेड़ में 30 कीलें ठोकीं। अगले कुछ हफ्तों में उसे अपने क्रोध पर नियंत्रण करना आ गया। अब वह प्रतिदिन इक्का-दुक्का कीलें ही ठोकता था। उसे वह समझ में आ गया कि पेड़ में कील ठोकने के बजाय क्रोध पर नियंत्रण करना आसान था। एक दिन ऐसा भी आया जब उसने पेड़ में एक भी कील नहीं ठोकी। जब उसने पिता को यह बताया तो पिता ने उससे कहा कि सारी कीलों को पेड़ से निकाल दे। लड़के ने बड़ी मेहनत करके सारी कीलें पेड़ से निकाल दी। काम पूरा होने के बाद पिता बेटे का हाथ थामकर पेड़ के पास ले गया। पिता ने पेड़ को देखते हुए बेटे से कहा - 'तुमने बहुत अच्छा काम किया मेरे बेटे, किंतु पेड़ के तने पर बने इन सैकड़ों कीलों के निशान देखो। अब यह पेड़ उतना खूबसूरत नहीं रहा। हर बार तुम जब क्रोध करते थे तब इसी तरह के निशान दूसरों के मन पर बन जाते थे। किसी को आहत करके यदि माफी मांग भी लो तो भी घाव के निशान छूट जाते हैं अपने मन वचन कर्म से कभी ऐसा काम न करो जिससे किसी का मन आहत हो।



भारतीय अर्थव्यवस्था तथा आवास का महत्त्व



रामनारायण चौधरी,
उपप्रबंधक

आवास या भू-संपदा (रियल एस्टेट) क्षेत्र भारतीय अर्थव्यवस्था का एक महत्वपूर्ण क्षेत्र है। इसका हमारी अर्थव्यवस्था पर एक विशाल बहु आयामी प्रभाव है। यह आर्थिक विकास का एक बड़ा ईंजन है एवं रोजगार सृजन में कृषि के बाद दूसरा सबसे बड़ा क्षेत्र है। यह विशेष रूप से आवास और निर्माण क्षेत्र के साथ अर्थव्यवस्था के अन्य क्षेत्रों के विकास में उत्प्रेरक का कार्य करता है। सीमेंट, स्टील, ईंट, लकड़ी और भवन निर्माण सामग्री के रूप में लगभग 250 सहायक उद्योगों का प्रत्यक्ष व अप्रत्यक्ष रूप से रियल एस्टेट क्षेत्र पर अपनी वृद्धि के लिए निर्भर हैं। इस क्षेत्र का देश के सकल घरेलू उत्पादन (जीडीपी) में स्टीक योगदान आंकना काफी कठिन है। फिर भी एक अनुमान के मुताबिक यह क्षेत्र भारत के जीडीपी में 5-6% का योगदान देता आ रहा है। यही वजह है कि सरकार इस क्षेत्र के प्रति काफी सजग है। 2005 के बाद से भारतीय भू-संपदा क्षेत्र ने रोलर कोस्टर की सवारी के रूप में छवि बनाई है। इस रियल एस्टेट तथा आवास क्षेत्र दोनों एक अर्थ में अद्वितीय हैं। इसमें केन्द्रीय सरकार, राज्य सरकारों, बैंकों, गैर बैंकिंग वित्तीय संस्थाओं, आवास वित्त कंपनियों, सूक्ष्म वित्त संस्थाओं के व्यक्तिगत प्रत्यक्ष व अप्रत्यक्ष पूंजी के योगदान के बावजूद, इन दोनों क्षेत्रों की विशालता तथा जरूरत को देखते हुए इसमें अभी भी अपर्याप्त पूंजी उपलब्ध है। परिणामस्वरूप, भारतीय सरकार ने विगत वर्षों में सूलभ तथा निम्न आय आवास के विकास हेतु महत्वपूर्ण नीतिगत निर्णय लिए। भारत सरकार द्वारा प्रेस नोट संख्या-2 (2005) के द्वारा 100 फीसदी तक का विदेशी प्रत्यक्ष निवेश स्वतः मार्ग से आवास निर्मित बुनियादी ढांचे तथा निर्माण विकास परियोजनाओं में अनुमति प्रदान की ताकि देश की आवास वित्त क्षेत्र में भारी पूंजी की कमी को पाटने का काम किया जाए। नई तकनीकियों को बल मिले। इसी दिशा में एक और कदम उठाते हुए राष्ट्रीय आवास और पर्यावास नीति 2027 को लागू किया गया जिससे गरीबों के बीच किफायती आवास तथा तीव्र आवास की कमी के उन्मूलन के साथ विकास पर जोर दिया जा सके। इस नीति के तहत भूमि का निर्बाध रूप से उपलब्ध कराना, आवास वित्त बाजार का विस्तार तथा क्षेत्रीय विकास में निजी क्षेत्र की भागीदारी की सुविधाजनक बनाने के त्वरित समाधान पर बल दिया गया। इससे हित धारकों तथा इच्छुक संस्थानों का आवास वित्त क्षेत्र में निवेश हेतु आत्म विश्वास बढ़ा।

अचल संपत्ति का तात्पर्य भूमि तथा उसके ऊपर के हवाई क्षेत्र तथा इसके नीचे का क्षेत्र उस निर्मित भवन या संरचना से है। इसके अंतर्गत आवासीय मकान, वाणिज्यिक कार्यालयों सिनेमाघरों, होटल और रेस्तरां, खुदरा दुकानों, कारखानों तथा सरकारी इमारतों का निर्माण आदि-आदि शामिल किया जा सकता है। इतना ही नहीं, रियल एस्टेट भूमि, आवासीय और

गैर-आवासीय भवनों की खरीद, बिक्री और विकास भी शामिल है।

साथ ही, वाणिज्यिक बैंकों तथा आवास वित्त कंपनियों के माध्यम से व्यक्तिगत आवास ऋण वित्तपोषण की स्थापना के साथ, होम लोन वित्त के उपयोग में भारी विस्तार किया गया। हालांकि अभी भी रास्ता काफी अधूरा है तथा इस क्षेत्र में विस्तार की असीम संभावनाएं हैं।

इस तथ्य को संज्ञान लेते हुए भारत सरकार ने अपने वार्षिक बजट 2014-15 में सबके लिए आवास (Housing for all) मिशन के तहत आवास तथा भू-सम्पदा के विकास हेतु महत्वपूर्ण निम्नलिखित घोषणाएं की :-

- (क) राष्ट्रीय आवास बैंक (एनएचबी) द्वारा संचालित ग्रामीण आवास निधि/आरएचएफ को 8000 करोड़ रुपये प्रदान करना।
- (ख) निम्न लागत आवास की 4000 करोड़ रुपये तथा शहरी आवास को 50,000 हजार करोड़ रुपये प्रदान करना।
- (ग) देश में 100 नये स्मार्ट शहर बनाने हेतु 7060 करोड़ रुपये का आवंटन
- (घ) भू-संपदा (रियल एस्टेट) क्षेत्र में विदेशी प्रत्यक्ष निवेश को बढ़ाने हेतु नियमों को लचीला बनाना।
- (ङ) स्लम विकास की निगमित सामाजिक दायित्व के अंतर्गत लाना।
- (च) एसईबीआई (सेबी) के दिशा-निर्देश के अंतर्गत रियल एस्टेट निवेश ट्रस्ट (आरईआईटी) की शुरुआत तथा
- (छ) गृह ऋण (होम लोन) पर ब्याज भुगतान पर कटौती तथा आयकर अधिनियम के तहत विशेष छूट का प्रबंध
- (ज) बैंकों तथा वित्तीय संस्थानों जो गरीबों को ऋण देने से जोखिम आधार पर कतराते रहे हैं, उस दिशा में इन संस्थानों में विश्वास का





माहौल पैदा करने हेतु खासकर निम्न आय आवास हेतु ऋण जोखिम गारंटी निधि न्यास (credit risk gurantee fund Trust) की स्थापना एवं राजीव ऋण योजना की शुरुआत किया जाना।

भू-संपदा (रियल इस्टेट) तथा आवास क्षेत्र में विकास हेतु केन्द्र व राज्य सरकारों द्वारा उठाये गए कदमों के अलावा भारतीय रिजर्व बैंक तथा आवास क्षेत्र के शीर्ष नियामक "राष्ट्रीय आवास बैंक" की भूमिका काफी महत्वपूर्ण रही है। इसका प्रमाण है कि ये क्षेत्र, जो लगभग दो दशक पूर्व नवजात शिशु की तरह था अब इन समग्र वित्तीय क्षेत्र में एक सम्पन्न तथा जीवंत हिस्सा है। इन दशकों के दौरान दोनों नियामक संस्थाओं ने विभिन्न चुनौतियों का डटकर सामना किया तथा सरकार के सहयोग से इस क्षेत्र को वित्तीय क्षेत्र का प्रमुख खिलाड़ी बनाया।

जैसा कि ऊपर बताया गया है कि इन क्षेत्रों की कुछ समस्याओं में प्रमुख समस्या यह थी कि पूंजी का सीमित प्रवाह खासकर कम ब्याज दर तथा राष्ट्रीय आवास बैंक की 1988 स्थापना से पूर्व देश में लम्बी अवधि वाली इस क्षेत्र की भूमिका नगण्य थी तथा गिने-चुने एक-दो संस्थान एचडीएफसी तथा हडको की सीमित भूमिका थी। भारत सरकार द्वारा राष्ट्रीय आवास बैंक की स्थापना से कई प्रमुख वित्तीय संस्थानों ने प्रत्यक्षतः या अपनी आनुषंगिक कंपनियों बनाकर आवास वित्त क्षेत्र में प्रवेश किया। फिर भी बैंक अपनों को काफी समय तक अलग रखा। राष्ट्रीय आवास बैंक से पंजीकृत आवास वित्त कंपनियों तथा रा.आ.बैंक (एनएचबी) की समय-समय पर लाई गई कुशल नीति ने इस नवजात क्षेत्र का भरण-पोषण का काम किया तथा धीरे-धीरे यह क्षेत्र लोगों का ध्यान आकर्षित करने लगा। परिणामतः भारतीय अनुसूचित वाणिज्यिक बैंक अपने को रोक नहीं पाये। 1991 में आए उदारीकरण से इस क्षेत्र को विस्तार हेतु रास्ता मिला। यही वजह थी कि 1990 के दशक के अंतिम वर्षों तथा 2000 के दशक के प्रारम्भिक वर्षों में भारतीय बैंकों ने इस क्षेत्र में बड़े रूप में प्रवेश किया। इससे आवास वित्त तथा इस क्षेत्र में क्रांतिकारी विस्तार हुआ।

इसके परिणाम स्वरूप वाणिज्य बैंकों तथा आवास वित्त कंपनियों का आवास ऋण में निवेश उच्च से उच्च शिखर छुने लगा। भारत सरकार द्वारा भारतीय आयकर अधिनियम की धारा 80सी तथा 24 के तहत आवास क्षेत्र में निवेश को विशेष छूट प्रदान करना तथा वाणिज्यिक बैंकों द्वारा प्रदत्त पच्चीस लाख रुपये के आवास ऋण को प्राथमिक क्षेत्र ऋण के रूप में शामिल करने से आवास तथा भू-संपदा (रियल इस्टेट) क्षेत्र में मांग तथा पूर्ति दोनों को बल मिला। सरफेसी एक्ट, 2002 का लागू होना आवास वित्त क्षेत्र में क्रांतिकारी परिवर्तन साबित हुआ। इससे बड़े-बड़े औद्योगिक समूह टाटा, रिलायंस, इण्डिया बुल्स, मैगमा, इंडिया इन्फोलाइन भी अपनों को इस क्षेत्र से दूर नहीं रख पाये। एचडीएफसी, हडको, दीवान हाऊसिंग, एलआईसी हाऊसिंग, पीएनबी हाऊसिंग के अलावा इन ग्रुप की कंपनियों एनएचबी से पंजीकृत होकर बड़े पैमाने पर इस क्षेत्र की विस्तार में योगदान दे रही है। इसका मुख्य कारण है इस क्षेत्र में प्रदत्त ऋण का अपेक्षाकृत जोखिम भरा होना, लगभग 20% वार्षिक की वृद्धि होना, निवेश पर मुनाफा सुनिश्चित होना तथा गैर-निष्पादित आस्तियों (एनपीएएस) की सम्भावना पर्याप्त होना था।

भारत सरकार तथा उनके अधीन राष्ट्रीय बैंकों द्वारा लागू एक फीसदी ब्याज सब्सिडी योजना, (Interest Subsidy Scheme for Housing Poor) (आईएसएचयूपी) तथा राजीव आवास योजना के तहत कुछ खास तथा निम्न आय वर्गों को घर का सपना पूरा कराने हेतु महत्वपूर्ण कदम उठाये गये हैं इससे आवास की मांग तेजी से बढ़ रही है तथा भू-संपदा



(रियल एस्टेट) क्षेत्र को विस्तार का मौका मिल रहा है। इसी दिशा में राष्ट्रीय आवास बैंक द्वारा स्थापित 2009 में देश का प्रथम तथा एकमात्र आवासीय सूचकांक 'रेजीडेक्स' देश की विभिन्न महत्वपूर्ण शहरों में आवास की कीमत की चढ़ती-घटती स्थितियों को आवासीय मूल्यों के आधार पर जारी कर रही है। भारतीय रिजर्व बैंक ने भी देश में आवासीय स्टॉक को बढ़ाने हेतु आवासीय परियोजना ऋण को वाणिज्यिक भू-सम्पदा के दायरे से परिभाषित होने से हटा दिया है।

इन महत्वपूर्ण कदमों से वाणिज्यिक बैंकों तथा इन महत्वपूर्ण कदमों से वाणिज्यिक बैंकों तथा आवास वित्त कंपनियों द्वारा प्रदत्त समग्र ऋण 2010 के 4 लाख 60 हजार करोड़ से बढ़कर 2014 में 8 लाख 90 हजार करोड़ के आकड़े को स्पर्श कर लिया है। वर्तमान में राष्ट्रीय आवास बैंक से लगभग 60 आवास वित्त कंपनियों पंजीकृत है। एनएचबी के प्रवृत्ति एवं प्रगति रिपोर्ट-2013 (Trend & Progress Report 2013) (एचएफसीएस) मुताबिक समग्र आवास ऋण में एचएफसीएस का भाग 2012-13 में 46 फीसदी था जो लगभग 2 लाख 90 हजार 427 करोड़ के बराबर है। इसके बावजूद आवास की भारी कमी अभी भी है। यदि 2012 के अनुमानित आकड़ों पर गौर करें तो शहरी क्षेत्रों में लगभग एक करोड़ 88 लाख तथा ग्रामीण क्षेत्रों में चार करोड़ से ज्यादा आवासीय इकाईयों की जरूरत है। इन जरूरत मर्दों में मुख्यतः आर्थिक रूप से पिछड़े लोग (ईडब्ल्यूएस) तथा निम्न आय समूह (एलआईजी) शामिल है। इसका मुख्य कारण उनकी गरीबी के साथ-साथ आवास ईकाई का महंगा होना है। शहरीकरण तथा गांव से शहरों की ओर पलायन ने आवास की कमी को



और बढ़ा दिया है। इसका अन्य कारण रोजगार की कमी, महंगाई के कारण बचत में कमी तथा राजनेताओं एवं उसमें लगे एजेन्सियों का गंदा खेल भी हो सकता है।

चुनौतियां

भारत में आवास तथा भूमि अचल सम्पत्ति के क्षेत्र के तीव्र विकास में प्रमुख बाधाएं निम्नलिखित हैं:-

- (i) स्पष्ट भूमि पट्टा का अभाव
- (ii) इस क्षेत्र को उद्योग का दर्जा प्राप्त नहीं होना
- (iii) पर्याप्त वित्त स्रोत की कमी
- (iv) माल की लागत में लगातार वृद्धि
- (v) श्रम की कमी तथा श्रम मूल्य में लगातार वृद्धि
- (vi) अनुमोदन तथा प्रक्रिया संबंधी कठिनाइयां
- (vii) आवासीय प्रोजेक्ट का समय पर पूरा नहीं होना
- (viii) नीति निर्धारकों के सामने सटीक आंकड़ों का अभाव
- (ix) रियल एस्टेट/बिल्डर को नियामकों से परे रखना।



हाल ही में भारत सरकार तथा इसके संबंधित मंत्रालय/विभाग द्वारा तय लक्ष्य सबके लिए आवास-2022 (Housing for all by 2022) तथा 100 नये स्मार्ट शहरों का विकास इस बात की सूचक है कि देश में आने वाले वर्षों में आवास तथा रियल एस्टेट क्षेत्र का विकास उज्ज्वल है। इस लक्ष्य को प्राप्त करने हेतु उपरोक्त चुनौतियों को गम्भीरता से लेना होगा। बिल्डरों की मनमानी रोकने हेतु इसे किसी नियामक एजेंसी के अधीन

लाना होगा। आज बिना वजह आवास की कीमत मनचाहे वसूलना, समय पर आवास मुहैया न कराना, ठगी तथा जालसाजी द्वारा लोगों की गहरी तथा सपनों की कमाई को गवन कर जाना आदि घटनाएं आम बात है। इस हेतु बिल्डर तथा सरकारी एजेंसियों की सांठ-गांठ को खत्म करनी होगी। ग्रामीण क्षेत्र में गृह-ऋण नहीं देने की मुख्य वजह वहां जमीन का स्वत्व स्पष्ट नहीं होना है। राज्य सरकारों को इस दिशा में भूमि दस्तावेजों तथा इसके रिकार्ड के 'डिजिटलाइजेशन' पर ध्यान देना होगा। सरकार द्वारा विदेशी प्रत्यक्ष निवेश का इस क्षेत्र में अनुमति देने से प्राइवेट इक्विटी निधि का निवेश बढ़ा है। आरबीआई ने एसएलआर में 0.05 कमी करके सविधिक तरल अनुपात (Statutory Liquidity Ratio) बैंकों के पास फंड की उपलब्धता कराई है। अभी भी इस क्षेत्र में फंड की उपलब्धता में कमी न हो इस हेतु काफी ध्यान लाना होगा। सरसाई की स्थापना होने से आवासीय क्षेत्र में धोखाधड़ी काफी हद तक रोका जा सकता है। इस तरह चाहिए कि सरकार जमीन अधिग्रहण नियम प्रक्रिया को सरल तथा पारदर्शी बनाए जिसमें जमीन मालिकों का हित सुरक्षित हो तथा निर्माण कार्य हेतु जमीन भी आसानी से मिल सके। इसमें बिचौलियों को भारी मुनाफा पर अंकुश लगाया जा सके। एक क्षेत्र में तकनीकी अनुसंधान जैसे सौर ऊर्जा, ग्रीन हाउस, जल (वाटर) संरक्षण कम लागत पर मजबूत तथा टिकाऊ गृह निर्माण वाले तकनीक आदि पर जोर देना होगा।

क्रोध का खानदान



मोहित कौल
क्षेत्रीय प्रबंधक

क्रोध की लाड़ली बहन है..... ॥ जिद ॥
क्रोध की पत्नी है ॥ हिंसा ॥
क्रोध का बड़ा भाई है..... ॥ अहंकार ॥
क्रोध का बाप जिससे वह डरता है..... ॥ भय ॥
क्रोध की बेटियां हैं..... ॥ निंदा व चुगली ॥
क्रोध का बेटा है..... ॥ बैर ॥
इस खानदान की नकचढ़ी बहू है..... ॥ ईर्ष्या ॥
क्रोध की पोती है..... ॥ घृणा ॥
और क्रोध का दादा है..... ॥ द्वेष ॥
क्रोध के इस खानदान से सदैव दूर रहें और हमेशा खुश रहें।



आवास नीति



सौरभ शेखर झा,
पत्रकार एवं अनुवादक

वैसे तो आवास की समस्या दुनिया भर में मौजूद है लेकिन हमारे भारत वर्ष के ग्रामीण क्षेत्रों में यह समस्या अधिक है क्योंकि देश की 3/4 जनसंख्या गांवों में रहती है। संयुक्त राष्ट्र संघ के एक फैसले के अनुसार वर्ष 1987 को आवासहीनों के लिए आवास उपलब्ध कराने के उद्देश्य से उस वर्ष को अंतर्राष्ट्रीय वर्ष के रूप में मनाया गया था और इसके तहत हर देश में आवास नीति को नये सिरे से निर्माण करना तथा सन 2000 तक सभी गरीबों के लिए आवास उपलब्ध कराने का लक्ष्य रखा गया था। हमारे देश में आवास नीति तो बना ली गई लेकिन अभी तक सभी गरीबों के लिए आवास की व्यवस्था का जो सपना था वह पूरा नहीं हो सका है। मकान जो भी बनाये जा रहे हैं उनमें से अधिकतर मकानों में पानी, शौचालय, आदि की उचित सुविधा न होने के कारण निवासियों को कष्ट का सामना करना पड़ रहा है। एक अनुमान के अनुसार देश की आधी आबादी एक कमरे में 5-6 सदस्यों के साथ रह रहे हैं। इस स्थिति में रहने के कारण परिवार में अस्वस्थ वातावरण तो बनता ही है और साथ ही साथ बच्चों की पढ़ाई-लिखाई भी उचित ढंग से नहीं हो पाती है।

देश की विशाल जनसंख्या एवं इसमें तेजी से बढ़ोतरी, संयुक्त परिवार का ह्रास, आवासों के निर्माण में लाभार्थियों का पूर्ण रूप से सहभागिता का अभाव, सरकारी नीति, जंगल की बर्बादी आदि कारक हैं जो देश में आवास की समस्या को बढ़ावा दे रहे हैं। ग्रामीण क्षेत्रों में आवास उपलब्ध कराने के लिए राष्ट्रीय कार्यक्रमों में गृह-निर्माण को सर्वोच्च प्राथमिकता देने की आवश्यकता है। साथ ही साथ गैर-सरकारी संगठनों को भी इस क्षेत्र में अहम भूमिका निभाना होगा और महिलाओं का सक्रिय सहयोग भी प्राप्त करना होगा। इसके अलावा लाभार्थियों की भागीदारी एवं सरकारी कार्यक्रमों में पारदर्शिता लाना भी जरूरी होगा।

आवास नीति

संयुक्त राष्ट्र ने 1988 में सन 2000 के लिए विश्व की आवास नीति बनाई थी। इस सिलसिले में राष्ट्रीय आवास नीति जुलाई 1992 में संसद में प्रस्तुत की गई थी। अगस्त 1994 में संसद ने इसका अनुमोदन कर दिया। यह नीति विश्व की सन 2000 के लिए आवास नीति के अनुरूप सरकार द्वारा आवास के लिए सुविधा प्रदान करने के सिद्धांत पर आधारित है। इसका अर्थ है कि सरकार या उसकी सार्वजनिक इकाइयां आवास निर्माण

या आवास प्रदान करने का काम नहीं करेंगी। वे मुख्य रूप से आवास की सुविधाएं जुटाएंगी। राष्ट्रीय आवास नीति के अंतर्गत राज्य की सुविधा जुटाने की भूमिका में सभी लोगों को सस्ते या कम खर्च वाले आवास प्राप्त करने में सहायता करना, आवास क्षेत्र के लिए धन जुटाने में मदद करना, उचित लागत वाली तकनीकों और भवन निर्माण सामग्री का विकास करना और उसका प्रचार करना, कानूनी बाधाओं को दूर करके आवास निर्माण की गतिविधियां तेज करने के लिए अनुकूल वातावरण तैयार करना, रहने के लिए बेहतर वातावरण बनाने के लिए मूलभूत सुविधाओं को बढ़ाना आदि शामिल है। राष्ट्रीय आवास नीति का कार्यान्वयन कोई एक बारगी कार्य नहीं है। यह तो एक सतत प्रक्रिया है। केन्द्रीय, राज्य और स्थानीय स्तर पर विभिन्न सतत आधार पर कार्यान्वयन के लिए योजनाओं और कार्यक्रमों को बनाने में प्राथमिक भूमिका राज्यों को निभानी होगी। ये योजनाएं स्थानीय आवश्यकताओं और परिस्थितियों के अनुरूप होने चाहिए जिससे की राष्ट्रीय आवास नीति को लागू किया जा सके।

आवास समस्या के दुष्परिणाम



आवास की कमी व्यक्तियों को आसराहीन बना कर पतन की ओर मोड़ देती है। जिस कारण वे समाज के साथ समरस नहीं हो पाते हैं। औद्योगिक श्रमिकों और ग्रामीणों में आवास की समस्या अनेक बुराईयों को जन्म देती है। एक अध्ययन के अनुसार भारत की गन्दी औद्योगिक बस्तियों में लोगों का स्वास्थ्य खराब हो जाता

है। आवास समस्या के कारण श्रमिकों की कार्यकुशलता और उत्पादकता पर बुरा प्रभाव पड़ता है। समुचित आवास न होने के कारण वे मानसिक और शारीरिक रूप से बीमार रहते हैं। परिणामस्वरूप वे ठीक प्रकार से कार्य नहीं कर पाते हैं।

आवास की दयनीय दशा से लोगों के व्यक्तिगत और सामाजिक जीवन पर बुरा प्रभाव पड़ता है। छोटी जगह में अधिक लोगों के रहने, सफाई न होने, अंधेरा रहने के कारण बीमारियां बढ़ती हैं। बच्चे आकाल मृत्यु के शिकार हो जाते हैं। समुचित आवास न होने के कारण लोग भटकते रहते हैं। प्रवासी प्रवृत्ति को बढ़ावा मिलता है। यहां तक की लोग अपराधों में संलग्न हो जाते हैं। समाज की शांति और सुरक्षा को खतरा उत्पन्न हो जाता है इस प्रकार आवास की समस्या अनेक भयंकर बुराईयों की जड़ है। इस समस्या का समाधान करके लोगों को देश के विकास में अधिक सहभागी बनाया जा सकता है।

आवास समस्या का समाधान

- जनसंख्या की तीव्र वृद्धि आवास समस्या का प्रमुख कारण है।



इसलिए आवास समस्या पर संख्यात्मक दृष्टि से प्रभावी नियंत्रण के लिए जनसंख्या वृद्धि पर दृढ़ता से रोक लगाई जानी चाहिए। इससे बेरोजगारी, अपराधी खाद्य प्रदूषण व अशिक्षा आदि समस्याओं के निवारण में भी सहायता प्राप्त होगी।

- वित्त की कमी आवास निर्माण में सबसे बड़ी बाधा है। इसलिए सरकार को आवास हेतु सस्ते ऋण सुलभ कराने की व्यवस्था करनी चाहिए। गरीबी रेखा से नीचे जीवन – यापन करने वाले लोगों को कम लागत वाले सस्ते आवास उपलब्ध कराने चाहिए। इस कार्य में सहकारी आवास संस्थाएं, राज्यों की आवास विकास परिषदें तथा नगर विकास प्राधिकरण महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकते हैं।
- गंदी बस्तियों के उद्धार के लिए निश्चित समय सीमा वाले त्वरित कार्यक्रम बनाए जाने चाहिए, जिससे देश के मेहनतकश लोगों को नारकीय जीवन से मुक्ति दिला कर पतन से बचाया जा सके, और वे अच्छे नागरिक बन सकें।
- आवास नागरिकों के लिए सुरक्षा का ऐसा कवच है जो उन्हें तमाम बुराइयों से बचा कर नैतिक मूल्यों से जोड़ता है। लोगों को ऐसा आवास अवश्य मिलना चाहिए जिसमें वे चैन की सांस ले सकें। उन्हें भूख की खोज में बाहर न भटकना पड़े। उन्हें सुख की खोज में बाहर न भटकना पड़े। उनके बच्चों का बचपन गंदी नालियों और कूड़े के ढेरों में न खो जाए। उनके कदम अपराधों की ओर नहीं बढ़ने पायें। जनता के सुख और देश के विकास के लिए आवास समस्या का प्रभावी समाधान आवश्यक है।

2022 तक सभी को सस्ता मकान

भारत के संसदीय कार्य मंत्री जी ने हाल ही में कहा है कि सरकार 2022 तक सभी के लिए आवास उपलब्ध कराने के लक्ष्य के प्रति प्रतिबद्ध है। उन्होंने नई दिल्ली में आवास तथा शहरी गरीबी उपशमन मंत्रालय के वरिष्ठ अधिकारियों तथा हितधारक संगठनों जैसे – राष्ट्रीय आवास बैंक, इंडियन बैंकर्स एसोसिएशन, फिक्की, एसोचैम, सीआईआई तथा सीआईडीआई के प्रतिनिधियों के साथ उच्च स्तरीय बैठक भी की। उन्होंने कहा कि 2022 में भारत की स्वतंत्रता का 75वां वर्ष होगा और इस समय तक शहरी गरीब लोगों के मकान का सपना पूरा करना होगा। बाद में उन्होंने कहा कि सरकार का मुख्य जोर आने वाले वर्षों में आवश्यक सुविधाओं के साथ नियोजित आवास पर होगा क्योंकि 2050 तक भारत की 50 प्रतिशत आबादी शहरों में बसेगी।

यह चुनौतिपूर्ण कार्य है क्योंकि 12वीं योजना में सस्ते मकान तथा झुग्गी-झोपड़ी विकास के लिए मंत्रालय के पास 35 हजार करोड़ रुपये हैं जबकि आवश्यकता अधिक की है। इसी कारण से आवास क्षेत्र में

सार्वजनिक निजी भागीदारी तथा सीएसआर की जरूरत है। उन्होंने कहा कि कार्पोरेट, सार्वजनिक क्षेत्र के प्रतिष्ठानों, स्थानीय निकायों तथा एलआईसी और बैंकों जैसे वित्तीय संस्थानों को अपने कर्मियों के लिए सस्ते मकान उपलब्ध कराने की जिम्मेदारी लेनी होगी।

आवास परियोजनाओं के लिए पर्यावरण मंजूरी एक बड़ी बाधा है और इस पर संबंधित मंत्रालय एवं विभागों से बातचीत की जानी चाहिए। सभी हितधारकों की चिंताओं का समाधान निकालना चाहिए। आवास क्षेत्र की समस्याओं पर विचार के लिए राज्यों के आवास तथा शहरी विकास मंत्रियों की शीघ्र बैठक बुलाई जानी चाहिए।

हमारी आवास नीति

आवास राज्य सूची का विषय है लेकिन सामाजिक आवास योजनाओं और विशेष रूप से समाज के कमजोर वर्गों के लिए आवास सुविधाओं से संबंधित नीतियां बनाने और उनको लागू करने के तौर-तरीकों तथा कार्यक्रम तैयार करने की जिम्मेदारी केन्द्र सरकार की है। सन् 1998 में एक समान्वित आवास और पर्यावास नीति बनाई गई। इस नई नीति के अंतर्गत आश्रय उपलब्ध कराने के लिए स्थायी विकास, बुनियादी ढांचा और आवास क्षेत्र में निजी हिस्सेदारी आदि मुद्दों पर जोर दिया गया है। इसका मुख्य उद्देश्य आवास सुविधाओं की उपलब्धता के लिए अनुकूल वातावरण तैयार करना और हर वर्ष 20 लाख मकानों के निर्माण का लक्ष्य हासिल करना है। यह आवास के साथ-साथ सहयोग की प्राथमिकता और बुनियादी ढांचे के समकक्ष सुनिश्चित करने का प्रयास है। आवास और बुनियादी ढांचे की समस्याओं के लिए सशक्त लोक निजी हिस्सेदारी, इस नीति का केन्द्र बिन्दु है।

सरकार आर्थिक रियायतें देगी, कानूनी और नियामक आधार सुनिश्चित करेगी और एक अनुकूल माहौल तैयार करेगी। इस नीति का उद्देश्य जनसंख्या विस्फोट से विकट हुई आवास की कमी की समस्या का भी समाधान करना है। इसमें केन्द्र सरकार, राज्य सरकारों, स्थानीय प्रशासनों, वित्तीय संस्थानों, अनुसंधान मानकीकरण संस्थाओं और तकनीकी संस्थानों की भूमिका स्पष्ट रूप से परिभाषित की गई है। आवास राज्य सूची का विषय है इस नाते राज्य सरकारों की यह जिम्मेदारी बनती है कि स्थानीय निकायों और नागरिक संगठनों से परामर्श करके स्थानीय जरूरतों के अनुसार विशेष कार्य योजनाओं और कार्यक्रमों को तैयार करने में प्राथमिक भूमिका निभाएं। सरकार ने सभी के लिए आवास को प्राथमिकता का विषय माना है और इस क्रम में कमजोर वर्गों की जरूरतों को विशेष ध्यान में रखा गया है। प्रत्येक वर्ष 20 लाख अतिरिक्त मकानों के निर्माण को सुलभ बनाने का प्रस्ताव है तथा ऐसा करते समय आर्थिक रूप से कमजोर वर्गों, निम्न आय वर्गों, अनुसूचित जातियों तथा जनजातियों की जरूरतों पर विशेष ध्यान दिया जाएगा। 20 लाख मकानों में से 7 लाख मकान शहरी क्षेत्रों में तथा शेष 13 लाख मकान ग्रामीण क्षेत्रों में बनाए जाएंगे।



प्राकृतिक आपदा



रंजन कुमार बरून,
सहायक महाप्रबंधक

हाल ही में जम्मू एवं कश्मीर में आई भारी तबाही ने पूरी दुनिया को चौंका दिया। अभी यहां पर बचाव एवं राहत का कार्य पूरा भी नहीं हुआ था कि पूर्वोत्तर भारत में पुनः बाढ़ ने भारी जान-माल का नुकसान किया। भारत की तरह दुनिया भर के अनेक देशों में कहीं न कहीं प्राकृतिक आपदा आती रहती है। इनमें सबसे ज्यादा तबाही भारी वर्षा, समुद्री तूफानों, भूकंपों के कारण होती है जिसके परिणाम स्वरूप अनेक क्षेत्रों में बाढ़ एवं जल प्रलय जैसी भयानक परेशानियां खड़ी हो जाती हैं। बाढ़ एवं बरसात का प्रभाव बहुत ही दूरगामी एवं व्यापक होता है इसमें सबसे ज्यादा तबाही फसलों, जंगलों की बरबादी के रूप में होती है और सबसे ज्यादा जन-धन की हानि पहाड़ों के खिसकने अर्थात् भू-स्खलन से न केवल पहाड़ी मार्ग अवरुद्ध होते हैं बल्कि नदियों का प्रवाह रुक जाता है, फलतः कृत्रिम झीलें बन जाती हैं और इनके अचानक टूटने से निचले इलाकों में बाढ़ एवं जल प्रलय की स्थितियां बन जाती हैं।

पूरी दुनिया भर में, खासकर सभी पहाड़ी इलाकों में भारी बरसाती तूफान, बादलों के फटने, भूकंप, बाढ़, चक्रवात और बेतरतीब मानव गतिविधियों जैसी अनेक स्थितियों और चालक प्रक्रियाओं की विस्तृत विविधता से भूस्खलन क्रिया होती हैं। सीआरईडी के डाटा बेस के अनुसार 1990 और 1999 के बीच भूस्खलन और हिमस्खलन की वजह से मानव हताहतों की संख्या 8658 रही है, लेकिन यह अनुमान काफी कम प्रतीत होता है। अक्सर भूस्खलन बड़े पैमाने पर होते रहे हैं, इनकी वजह से दुनिया भर में संपत्ति, पर्यावरणीय नीति, मरम्मत, रखरखाव के कार्यों और बचाव के उपायों में वार्षिक संचयी नुकसान दसियों अरब अमरीकी डालर का होता है भूस्खलन की आवृत्ति भीषण वर्षा और भूकंप जैसी कारक घटनाओं से प्रभावित है।

हर वर्ष भूस्खलन की वजह से दुनिया भर में 5000 से अधिक लोग जिंदा दफन हो जाते हैं और 40 लाख (4 मिलियन) अमरीकी डालर का आर्थिक नुकसान होता है। महाद्वीपों में, भूस्खलन के कारण एशिया को अधिकतम क्षति होती है और एशियाई देशों में दक्षिण एशियाई देश सबसे बुरी तरह प्रभावित होते हैं तथा दक्षिण एशियाई देशों में भारत भूस्खलन से सबसे अधिक प्रभावित होने वाले देशों में से एक है। भारत का लगभग 15 प्रतिशत (लगभग 0.49 लाख वर्ग किमी.) क्षेत्र विभिन्न स्तरों के भूस्खलन के लिए खतरा जोखिम नाजुक क्षेत्र है, जहाँ मानव जीवन, आजीविका, पशुधन, आवास स्थान, संरचनाएं, बुनियादी सुविधाएं और बड़े पैमाने पर प्राकृतिक संसाधन अक्सर प्रभावित होते हैं। प्रत्यक्ष और अप्रत्यक्ष रूप से नुकसान के अलावा, भूस्खलन महत्वपूर्ण पर्यावरणीय क्षति, सामाजिक विघटन और सामरिक चिंता का कारण बनते हैं। भूस्खलन जम्मू एवं

कश्मीर, हिमाचल, उत्तराखंड, अरुणाचल, असम, मेघालय, मिजोरम, मणिपुर, नगालैंड, सिक्किम, त्रिपुरा, केरल, कर्नाटक, तमिलनाडु, आंध्र प्रदेश, गोवा, महाराष्ट्र, मध्य प्रदेश, छत्तीसगढ़, अंडमान एवं निकोबार और पुद्दुचेरी सहित 22 राज्यों और दो केंद्र शासित प्रदेशों में होते रहते हैं। हिमालय बेल्ट, नीलगिरी, पश्चिमी और पूर्वी घाट सबसे अधिक संवेदनशील क्षेत्र हैं। भूस्खलन एक गंभीर खतरा उत्पन्न करता है जो देश में मानव और वित्तीय नुकसान का कारण बनता है। अनुमान है कि हर वर्ष औसतन लगभग 500 जानें जाती हैं और लगभग 300 करोड़ रुपये का नुकसान होता है। इस वर्ष कश्मीर में आई प्राकृतिक आपदा का तो अभी तक ठीक से आकलन भी नहीं हो पाया है। कई हजार लोगों के मारे जाने की आशंका जताई जा रही है।

भूस्खलन हमेशा केवल अकेले ही नहीं होते, बल्कि भूकंप, बाढ़, चक्रवात, बिजली, मूसलधार बारिश, जंगल की आग, बांध/झील आदि टूटने जैसी अन्य आपदाओं के साथ या इनके परिणाम के रूप में भी हो सकते हैं। ऐसे मामलों में भूस्खलन के नुकसान को सामान्य तौर पर प्राथमिक आपदा के भीतर शामिल कर लिया जाता है और इसलिए, इन्हे अलग से नहीं दर्शाया जाता। इस प्रकार, भूस्खलन नुकसान के अधिकांश अधिसूचित अनुमान पूरे समाज पर भूस्खलन के वास्तविक प्रभावों की तुलना में काफी कम पाए जाते हैं।

बढ़ती हुई जनसंख्या, शहरीकरण और अस्थिर ढलानों पर विकासात्मक गतिविधियों के संदर्भ में मानव हस्तक्षेप के साथ, भूस्खलन मानव जीवन, भवनों, संरचनाओं, बुनियादी संरचनाओं और पर्यावरण के लिए बड़ा खतरा बनता जा रहा है। बदलती पर्यावरण, ग्लोबल वार्मिंग, हिमनदों के तेजी से पिघलने, अनिश्चित और असमान बारिश, अत्यधिक तापमान की स्थिति आदि भी अप्रत्याशित क्षेत्रों में इसके खतरे का विस्तार कर रहे हैं। दोषपूर्ण प्रबंधन के साथ-साथ बड़े पैमाने पर वनों की कटाई ने भी देश के कई क्षेत्रों में भूस्खलन के खतरे में वृद्धि की है। असुरक्षित स्थानों में विस्तार,



अवैज्ञानिक खनन, सड़कों, असुरक्षित बांधों का निर्माण और नदी प्रशिक्षण के काम में प्राकृतिक विशेषताओं की अनदेखी करने से संबंधित मानव गतिविधियाँ भूस्खलन की तीव्रता में वृद्धि करने में योगदान देते हैं। बड़े



पैमाने पर भूस्खलन जोखिम नक्शों के अभाव से लोग असतर्कता की हालत में, विशेष रूप से पहली बार भूस्खलन होने पर, इस आपदा के शिकार हो जाते हैं। आमतौर पर एक अकेले भूस्खलन के सीमित क्षेत्र और लोगों को प्रभावित करने की वजह से, भूस्खलन खतरों से होने वाले नुकसान के परिणाम को राष्ट्रीय महत्व की समस्या के रूप में नहीं देखा जाता है और इसे राष्ट्रीय आधार पर संबोधित नहीं किया जा रहा है। भूस्खलन के हानिकारक प्रभाव को कम करने के लिए समन्वित राष्ट्रीय दृष्टिकोण के अभाव का परिणाम अक्सर अधिक कीमत पर, सीखे गए महत्वपूर्ण सबक को लागू करने में राज्यों और स्थानीय सरकारी एजेंसियों की कम क्षमता के रूप में दिखाई देता है। परिणाम स्वरूप, एक राष्ट्रीय रणनीति की अत्यावश्यकता को महसूस किया गया और राष्ट्रीय आपदा प्रबंधन प्राधिकरण द्वारा राष्ट्रीय आपदा प्रबंधन नीति के माध्यम से भूस्खलन एवं हिमस्खलन पर दिशा निर्देश तैयार करने के लिए काम किया गया।

राष्ट्रीय भूस्खलन की समस्या से जुड़े मुद्दों की विविधता की जानकारी के लिए क्षेत्रीय विचार और संस्थागत क्षमता की महत्वपूर्ण विविधताओं एवं स्थानीय और क्षेत्रीय स्तरों पर जवाबदेही दोनों से उत्पन्न, हितधारकों की एक विस्तृत विविधता से प्राप्त जानकारी आवश्यक है। भूस्खलन मूल्यांकन, जांच, मानचित्र और प्रबंधन की प्रक्रिया को मजबूत बनाने का भूस्खलन के नुकसान को कम करने में उल्लेखनीय प्रभाव होगा। आपदाओं से निपटने का केंद्रीय संस्थान, एनआईडीएम, देश भर में आवश्यक गतिविधियों को प्रोत्साहित करने और भूस्खलन जोखिम प्रबंधन के विभिन्न पहलुओं पर प्रशिक्षण देने के लिए एक प्रमुख मंच बनाने तथा ऐसे संसाध्य व्यक्तियों/विशेषज्ञों (जो इस का एक नेटवर्क बनाने के लिए ऐसी परियोजनाओं को शुरू करने की योजना बना रहा है, गतिविधि में योगदान दे सकते हैं)। यह प्रभावी निर्णय लेने और पहाड़ी इलाकों में विभिन्न विकास और नियामक गतिविधियों के लिए सूक्ष्म स्तर के मानचित्र की योजना बनाने का मार्ग प्रशस्त करेगा।

भारत सरकार के इन संस्थानों का उद्देश्य पहाड़ी इलाकों और तटीय क्षेत्रों में भूस्खलन आपदा मुक्त बनाने के लिए निम्नलिखित दिशाओं में काम करना है :

भूस्खलन जोखिम विश्लेषण तकनीक के उपयोग को बढ़ावा देने के लिए राज्य और स्थानीय स्तर पर नुकसान में कमी के प्रयासों को निर्देशित करना।

विधियों के मूल्यांकन, मानकों की स्थापना और भूस्खलन खतरा नक्शे और आँकलन के लिए प्रक्रियाओं एवं दिशा निर्देशों को उन्नत करने में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाना।

भूस्खलन खतरों के शमन के लिए उपकरण उपलब्ध कराना और निगरानी तकनीकों एवं भूस्खलन प्रक्रिया की यांत्रिकी के पहलुओं पर बुनियादी अनुसंधान को बढ़ावा देना।

शिक्षा, प्रशिक्षण और भूस्खलन खतरों की जागरूकता में सुधार और निर्णायकों, पेशेवरों और आम जनता के लिए शमन विकल्प।

अंतःविषय और पारक्षेत्रीय भागीदारी दृष्टिकोण को शामिल कर एक

बहुजोखिम परिप्रेक्ष्य में विकास और पर्यावरण परिवर्तन के साथ भूस्खलन जोखिम प्रबंधन का एकीकरण करना एवं उसे मुख्यधारा में लाना।

कार्यान्वयन और प्रबंधन की योजनाएं बनाना जिन्हें एक प्रभावी राष्ट्रीय रणनीति के लिए व्यावहारिक आधार प्रदान कर स्थानीय स्तर पर लागू किया जा सके।

भूस्खलन जोखिम प्रबंधन के लिए विभिन्न हितधारकों के बीच विभिन्न स्तरों पर वकालत, नीतियों, दिशा निर्देशों और योजना का समर्थन।

राज्यों, जिलों और स्थानीय स्तर की सरकारों और गैरसरकारी संगठनों के साथ-साथ पेशेवर और अन्य हितधारकों के साथ व्यावहारिक साझेदारी विकसित करना।

भारत में भूस्खलन परिदृश्य

भूस्खलन हमारी बस्तियों और बुनियादी ढांचों, खेतों और मैदानों, सीमा



सड़कों और रेल पटरियों के बड़े हिस्सों, पनबिजली, पानी की आपूर्ति और संचरण, लाइन परियोजनाओं, हवाई रोपवे, खुली खदानों, सुरंगों, ऐतिहासिक इमारतों और पूजा/पवित्र स्थानों, तीर्थ मार्गों और पर्यटन स्थलों के लिए खतरा हैं। सार्वजनिक जागरूकता लाने और भूमि उपयोग की सावधानी पूर्ण योजना के द्वारा सुरक्षा की संस्कृति के प्रसार, समय पर और उचित इंजीनियरिंग हस्तक्षेप, ढलान और संबंधित उपयोगिताओं के सतर्कतापूर्ण रखरखाव, पूर्व चेतावनी, जन जागरूकता और तैयारियों के माध्यम से भूस्खलन के जोखिम को और कम किया जा सकता है। आपदाओं के प्रबंधन और प्रभावों को कम करने के लिए त्वरित प्रतिक्रिया की संस्कृति विकसित करने की सख्त जरूरत है।

पश्चिम बंगाल के दार्जिलिंग जिले में कर्सियांग नगर के आसपास सुरम्य पहाड़ी ढलानों पर स्थित चाय बागानों में जो भूस्खलन हुआ वह एशिया में होने वाला सबसे बड़ा स्खलन था। जनसंख्या के तेजी से बढ़ते दबाव में मानव बस्तियों, सड़कों, बांधों, सुरंगों, जलाशयों, टावरों और अन्य सार्वजनिक उपयोगिताओं में उत्तरोत्तर वृद्धि हुई है। आज हिमालय क्षेत्र में सड़कों का नेटवर्क की लम्बाई 50,000 कि.मी. से अधिक है। हिमालय क्षेत्र में अनेक बांध बनाये गये हैं। पहाड़ियों में अकेले गंगा और उसकी सहायक नदियों पर दो दर्जन से अधिक बांध परियोजनाएं हैं। पहाड़ी क्षेत्रों में अनेक सुरंगें तथा माइक्रोवेव, टीवी, प्रसारण और संचार टावर भी हैं। उदाहरण के



लिए, उत्खनन और खनन तथा वनों की कटाई दून घाटी को वृक्षरहित क्षेत्र बनाने के लिए जिम्मेदार हैं, इससे झिरौली (अल्मोड़ा) और चांडक (पिथौरागढ़) में ढलानों और उनसे जुड़े पर्यावरण को भारी क्षति हुई है।

जम्मू-कश्मीर, उत्तराखंड हिमालय में ऋषिकेश-बद्रीनाथ तीर्थयात्रा मार्ग पर, राष्ट्रीय राजमार्ग एनएच-1ए और एनएच-1बी पर, हिमालय में दार्जिलिंग और सिक्किम के कई क्षेत्रों, उत्तर-पूर्वी क्षेत्रों में दीमापुर-इम्फाल और शिलांग-सिलचर राष्ट्रीय राजमार्ग पर भूस्खलन होते रहते हैं। ये विनाशकारी रहते हैं और भारी आर्थिक नुकसान का कारण बनते हैं और एक लंबे समय से इस क्षेत्र के सामाजिक ताने-बाने को प्रभावित किया है।

भूस्खलन आपदाओं के परिणाम

भूस्खलन आपदाओं का समाज और पर्यावरण पर अल्पकालिक और दीर्घकालिक परिणाम होता है। पहले वर्ग में स्थल पर होने वाले जीवन और संपत्ति के नुकसान, दूसरे में कृषि योग्य भूमि की क्षति और कटाव तथा मिट्टी के क्षय के संदर्भ में पर्यावरण के परिदृश्य में बदलाव के स्थायी परिणाम को, जो जनसंख्या और प्रतिष्ठानों के स्थानांतरण का कारण बनता है शामिल किया जा सकता है। किसी भी अन्य आपदा की तरह,



समाज में सामाजिक-आर्थिक रूप से कमजोर वर्ग जो संवेदनशील क्षेत्रों में निवास करते हैं सबसे अधिक प्रभावित होता है। उसके पास आजीविका का अल्प स्रोत ही होता है, जो एक खतरे की वजह से समाप्त हो चुका होता है और ये भोजन और आश्रय रहित हो जाता है। इसके अलावा, घायलों और हताहतों की संख्या, प्रभावित परिवारों के संकट को और बढ़ा देती है। सबसे बड़ा नुकसान व्यक्तियों की संपत्ति का और सरकार के लिए ऐतिहासिक संरचनाओं के क्षति / विनाश के रूप में होता है।

देश के उत्तर-पूर्वी क्षेत्र में और विशेष रूप से हिमालय के क्षेत्र में अक्सर बरसात के मौसम में भूस्खलन से अवरोधों के कारण, एक साथ कई दिनों के लिए यातायात का रुकना, भूस्खलन प्रवण पहाड़ी इलाकों के गांवों और शहरों में रहने वाले लोगों के लिए अकथनीय परेशानी लाता है। भूस्खलन जलाशयों में गाद की भारी राशि पनबिजली और बहुउद्देशीय परियोजनाओं की प्रभावी आयु और क्षमता में भी कमी लाता है। भूस्खलन बांध बड़ी

धाराओं वाले क्षेत्रों में बाढ़ लाते हैं। जब यह बांध टूटता है, यह बहाव के क्षेत्रों में बाढ़ और बड़े पैमाने पर तबाही का कारण बनता है। इसके अलावा, भूस्खलन मलबे से सामान्य धारा प्रवाह में रुकावटों और विचलन की वजह से बाढ़ या स्थानीय कटाव की स्थिति पैदा हो जाती है। भूस्खलन बाढ़ और/या जलाशयों में पानी की क्षमता को भी कम करता है जिसके परिणामस्वरूप बांधों के ऊपर से पानी के बहाव की स्थिति पैदा कर सकता है, उदाहरण के लिए गोहाना और परेचु झील का फटना।

भारत में भूस्खलन जोखिम प्रबंधन

अब तक भारत में भूस्खलन खतरा प्रबंधन स्थान विशिष्ट समस्याओं और मलबे को हटाने और उन्हें ढलान पर या नीचे नदी में निष्पादन के तत्काल उपचारात्मक उपायों के कार्यान्वयन के तदर्थ समाधान तक सीमित था। वर्तमान प्रशिक्षण का उद्देश्य एक संस्थागत तंत्र के माध्यम से भूस्खलन खतरे का प्रबंधन और बाद में एक व्यवस्थित दृष्टिकोण द्वारा उनका अनुसरण करना है, जिसमें जोखिम, अरक्षितता और खतरे के आँकलन के तरीके सहित भूस्खलन समस्याओं के अल्पकालिक और दीर्घकालिक योजनाएं, और उपचार शामिल हैं।

भूस्खलन खतरा प्रबंधन में भूस्खलन से उत्पन्न खतरे को कम करने या उससे बचने के उपाय शामिल हैं। इस प्रक्रिया में सबसे महत्वपूर्ण भूमिका स्थानीय सरकारी तंत्र द्वारा निभाई जाती है। एक बार जब इस निकाय को अपने क्षेत्राधिकार के भीतर भूस्खलन घटना की संभावना के बारे में जानकारी प्राप्त होती है, तो यह उस क्षेत्र में रहने वाले समुदायों को संभावित खतरों के बारे में सचेत करने और जमीन मालिकों और इमारतों के दखलकारों को सुरक्षित स्थानों में पहुंचाने के लिए कदम उठाने की दिशा में कार्य करता है। इसके अलावा, इन उच्च जोखिम क्षेत्रों में आगे विकास से बचा जाना चाहिए। क्षेत्र में भूमि की उच्च कीमत और जनता के उदासीन रवये से हर भूस्खलन खतरा प्रवण क्षेत्र में शमन रणनीतियां संभव नहीं हो पाती हैं। सड़क निर्माण और रखरखाव एजेंसियों द्वारा भी उपचार के उपायों को लागू कर जोखिम को कम करने के प्रयास किए गए हैं। तथापि, किसी आपदा के आक्रमण से पहले उपलब्ध जानकारी का प्रसार करने की पूर्व कार्रवाई की जरूरत है और सभी राज्यों, विशेष रूप से नियमित रूप से बहुखतरों से प्रभावित होने वाले क्षेत्रों पर जोर दिया जाना चाहिए।

अच्छे भूस्खलन प्रबंधन-पालन के लाभ

सच तो यह है कि भू-स्खलन के लिए नाजुक क्षेत्रों में मानव बस्तियों को नहीं बसाया जाना चाहिए। जिन पर्वतीय क्षेत्रों में आवास बने हों या बनाए जाने हों, उन क्षेत्रों में भारी मात्रा में वृक्षा रोपण किया जाना चाहिए। पर्वतीय इलाकों में बनाए जाने वाले मकान/आवास पहाड़ी ढलाव, जल बहाव को ध्यान में रखते हुए स्टील की छड़ों से युक्त मजबूत पिलर के साथ नींव डालकर बसाया जाना चाहिए। इन बस्तियों में पानी एवं कीचड़ व मिट्टी के बहाव को पर्याप्त जगह दी जानी चाहिए। यदि हम आवास बनाते समय निर्माण सामग्री की गुणवत्ता, विन्यास स्वरूप एवं स्थानीय भूमि की बनावट आदि को ध्यान में रखकर आवास निर्माण करें तो कुछ हद तक ऐसी घटनाओं से होने वाले नुकसान एवं जानमाल को बचा सकते हैं।





मंगल मिशन



एस.के. पाटी,
सहायक महाप्रबंधक

भारत का मंगल ग्रह तक पहुंचने का सपना हकीकत में बदल गया है। भारत ने 24 सितंबर, 2014 बुधवार को एक नया इतिहास रचते हुए अपने पहले प्रयास में ही मंगल ग्रह की कक्षा में अपना पहला मंगलयान स्थापित कर दिया है। भारत इस कदम के साथ ही मंगल ग्रह पर अपनी मौजूदगी दर्ज कराने वाला विश्व का चौथा देश बन गया है। पश्चिमी देशों की तुलना में इस मिशन की लागत केवल 10-15 प्रतिशत मात्र थी। पूरा विश्व आज दांतों तले उगली दबाकर भौचक्का सा देख रहा है।

इस ऐतिहासिक उपलब्धि के मौके पर भारत के प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी भारत की बंगलुरु स्थित इसरो सेंटर में मौजूद थे। उन्होंने इसरो के वैज्ञानिकों समेत पूरे देशवासियों को इस सफलता पर बधाई दी। वे बुधवार सुबह 6:45 बजे से ही वैज्ञानिकों के साथ बैठकर पूरी प्रक्रिया को देख रहे थे। इसरो के एक शीर्ष अधिकारी ने बताया कि मोदी अंतरिक्ष विभाग के प्रमुख हैं और उन्होंने मंगलयान के मंगल ग्रह की कक्षा की स्थापना को देखने की इच्छा जताई। इसरो के अध्यक्ष के राधाकृष्णन ने प्रधानमंत्री मोदी को मंगल मिशन के बारे में पूरी जानकारी दी। कक्षा में प्रवेश के समय मंगलयान ग्रह की छाया में था और उसे सूर्य की रोशनी नहीं मिली यानी उसके सौर पैनल बेकार थे और यान बैटरी से मिलने वाली ऊर्जा के सहारे मंगल की कक्षा में प्रवेश कर गया।

दुनियाभर में सबसे सस्ता मंगल मिशन – इस मिशन की सबसे बड़ी विशेषता यह है कि यह अब तक का सबसे सस्ता मिशन है। कई देश जिस लागत पर चांद भी नहीं पहुंच पाए उससे कम लागत में भारत के वैज्ञानिकों ने इस अनूठे किंतु सत्य कारनामे को कर दिखाया। यह उपग्रह, जिसका आकार लगभग एक नैनो कार जितना है, तथा संपूर्ण मार्स ऑरबिटर मिशन की लागत कुल 450 करोड़ रुपये या छह करोड़ 70 लाख अमेरिकी डॉलर रही है, जो एक रिकॉर्ड है। यह मिशन भारतीय अंतरिक्ष अनुसंधान संगठन (इंडियन स्पेस रिसर्च ऑर्गेनाइजेशन या इसरो) ने 15 महीने के रिकॉर्ड समय में तैयार किया, और यह 300 दिन में 67 करोड़ किलोमीटर की यात्रा कर अपनी मंजिल मंगल ग्रह तक पहुंचा। यह निश्चित रूप से दुनियाभर में अब तक हुए किसी भी अंतर-ग्रही मिशन से कहीं सस्ता है।

आंध्र प्रदेश में समुद्रतट पर स्थापित और भारत के रॉकेट पोर्ट कहे जाने वाले श्रीहरिकोटा में इसी वर्ष जून के अंत में प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने भी टिप्पणी की थी, 'हॉलीवुड की साइंस फिक्शन फिल्म 'ग्रेविटी' का बजट

हमारे मंगल अभियान से ज्यादा है, यह बहुत बड़ी उपलब्धि है' उल्लेखनीय है कि मंगल तक पहुंचे अमेरिकी अंतरिक्ष एजेंसी नासा के नए मार्स मिशन 'मेवन' की लागत लगभग 10 गुना रही है।

अपने मिशन की कम लागत पर टिप्पणी करते हुए इसरो के अध्यक्ष, राधाकृष्णन ने कहा है कि यह सस्ता मिशन रहा है, लेकिन हमने कोई समझौता नहीं किया है, हमने इसे दो साल में पूरा किया है, और ग्राउंड टेस्टिंग से हमें काफी मदद मिली। मंगल ग्रह की सतह पर पहले से मौजूद सबसे ज्यादा चर्चित अमेरिकी रोवर यान 'क्यूरियोसिटी' की लागत दो अरब अमेरिकी डॉलर से भी ज्यादा रही थी, जबकि भारत की तकनीकी क्षमताओं तथा सस्ती कीमतों ने मंगलयान की लागत कम रखने में काफी मदद की। भारतीय मंगलयान दुनिया का सबसे सस्ता अंतर-ग्रही मिशन है, और इसकी औसत लागत प्रति भारतीय चार रुपये से भी कम रही है, यानि सिर्फ 450 करोड़ रुपये, तो, अब भारत नया उदाहरण पेश करते हुए तेज, सस्ते और सफल अंतर-ग्रही मिशनों की नींव डाल रहा है।

मंगल मिशन के खास तथ्य – भारत पहले प्रयास में मंगल ग्रह पर



पहुंचने वाला विश्व का पहला देश बना। नासा, ईएसए और रॉसकोसमॉस के बाद इसरो मंगलग्रह की कक्षा में जाने वाला तीसरा संस्थान बना। मंगल पर कदम रखने वाला भारत एशिया का पहला देश बना गया। इसके साथ ही इस क्लब में शामिल होकर क्लब का चौथा सदस्य बन गया। अभी तक अमेरिका, रूस और यूरोपीय संघ ही इस क्लब में शामिल थे। यह दुनिया का सबसे सस्ता सफल मंगल अभियान है। पीएम मोदी ने लॉन्च के वक्त कहा था कि इस मिशन की कीमत हॉलीवुड मूवी 'ग्रेविटी'



की प्रोडेक्शन कीमत से भी कम है। इसे श्रीहरिकोटा के सतीश धवन स्पेस सेंटर से 5 नवंबर, 2013 को पीएसएलवी-सी-25 से लॉच किया गया था। 450 करोड़ रूपए के प्रोजेक्ट को भारत सरकार ने 3 अगस्त, 2012 को मंजूरी दी थी। इस मिशन ने 12 फरवरी, 2014 को 100 दिन पूरे किए थे।

मंगल मिशन के पीछे के प्रमुख वैज्ञानिक - के. राधाकृष्णन: इसरो के चेयरमैन और स्पेस डिपार्टमेंट के सेक्रेट्री के पद पर कार्यरत हैं। इस मिशन का नेतृत्व इन्हीं के पास है और इसरो की हर एक एक्टिविटी की जिम्मेदारी इन्हीं के पास है।

एम. अन्नादुरई: इस मिशन के प्रोग्राम के डायरेक्टर के पद पर कार्यरत हैं। इन्होंने इसरो 1982 में ज्वाइन किया था और कई प्रोजेक्टों का नेतृत्व किया है। इनके पास बजट मैनेजमेंट, शैड्यूल और संसाधनों की जिम्मेदारी है। ये चंद्रयान-1 के प्रोजेक्ट डायरेक्टर भी रहे हैं।

एस. रामाकृष्णन: विक्रमसाराबाई स्पेस सेंटर के डायरेक्टर हैं और लॉन्च अथोरिजन बोर्ड के सदस्य हैं। उन्होंने 1972 में इसरो ज्वाइन किया था और पीएसएलवी को बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई थी।

एस.के. शिवकुमार: इसरो सैटेलाइट सेंटर के डायरेक्टर हैं। इन्होंने 1976 में इसरो ज्वाइन किया था और इनका कई भारतीय सैटेलाइट मिशनों में योगदान रहा है। इसके अलावा पी. कुंहीकृष्णन, चंद्रराथन, ए.एस. किरण कुमार, एमवाईएस प्रसाद, एस. अरुणन, बी. जयाकुमार, एमएस पन्नीरसेल्वम, वी. केशव राजू, वी. कोटेश्वर राव का भी इस मिशन में अहम योगदान रहा।

मानव मिशन को लगेगा पंख - मंगल मिशन के सफलता के करीब पहुंचने के बाद भारत अब चांद पर रोबोट उतारने और अंतरिक्ष में मानव भेजने के कार्यक्रमों पर तेजी से आगे बढ़ेगा। मिशन मंगल में इसरो ने अभी तक अपनी वैज्ञानिक क्षमताओं का शानदार प्रदर्शन किया है। माना जा रहा है कि इसके बाद इसरो के लिए चंद्रयान-2 और अंतरिक्ष में मानव मिशन भेजना ज्यादा कठिन लक्ष्य नहीं रह गया है।



लाल ग्रह के करीब पहुंचने के बाद मंगलयान के इंजन को चालू करने का परीक्षण भी सफल रहा है। इसरो के लिए यह सबसे बड़ा चुनौतीपूर्ण कार्य था क्योंकि करीब तीन सौ दिन से बंद पड़े इंजन को 21.5 करोड़ किलोमीटर की दूरी (रेडियो डिस्टेंस) से कमांड देकर चालू करना था।

इसके बाद इसरो के वैज्ञानिक अब नए अभियानों के लिए कमर कसेंगे।

चंद्रयान-2 - अंतरिक्ष विभाग के अनुसार, मंगल मिशन के बाद इसरो का अगला कदम चांद पर रोबोट उतारने का है। चंद्रयान-2 का निर्माण प्रगति पर है। लैंडर और रोवर के परीक्षण शुरू हो गए हैं। चंद्रयान-2 चांद के चारों ओर चक्कर लगाएगा और लैंडर की मदद से एक रोबोटनुमा उपकरण रोवर चांद की सतह पर उतरकर आंकड़े एकत्र करेगा।

2017 के बाद अंतरिक्ष में मानव मिशन - अंतरिक्ष विभाग के सूत्रों के अनुसार मंगलयान की सफलता से अंतरिक्ष कार्यक्रम में भारत का आत्मविश्वास बढ़ा है। इसलिए अंतरिक्ष में मानव मिशन भेजने की योजना पर अमल की दिशा में कदम बढ़ाए जाएंगे। इसके लिए इसरो ने पहले ही जरूरी अध्ययन कर लिए हैं। 2017 के बाद इस मिशन पर कार्य शुरू होगा और 2020 में इसरो अंतरिक्ष में मानव मिशन भेजेगा। पहले चरण में इन्हें करीब 500 किलोमीटर की ही दूरी तक धरती की निचली कक्षा में मानव मिशन भेजा जाएगा और उसके बाद यह दायरा बढ़ाया जाएगा। इस योजना पर करीब 12 हजार करोड़ रुपये के खर्च का अनुमान व्यक्त किया गया है।

उपग्रह-आदित्य-1 - इसके साथ ही इसरो सूर्य के इर्द-गिर्द भी अपना एक उपग्रह आदित्य-1 भेजने की योजना बना रहा है। इसका मकसद सौर ऊर्जा और सौर हवाओं पर अध्ययन करना है। इस मिशन में भी अब तेजी आएगी।

प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी ने कहा कि भारत के मंगल अभियान की सफलता 'इतिहास में मील का पत्थर' साबित होगी। भारत का मार्स ऑर्बिटर मिशन (एमओएम) मंगल ग्रह की कक्षा में सफलतापूर्वक प्रवेश कर गया।

मंगल अभियान की सफलता से प्रसन्न प्रधानमंत्री श्री मोदी ने कहा कि ये सभी उपलब्धियां इतिहास में मील का पत्थर साबित होंगी। प्रधानमंत्री ने कहा कि एमओएम को देश में निर्मित किया गया है। उन्होंने कहा कि भारत एकमात्र देश है, जिसने पहले प्रयास में यह सफलता अर्जित की है। आज की इस असाधारण सफलता के साथ ही इसरो ने शीर्ष समूह में स्थान पा लिया है, विश्व में सिर्फ तीन अन्य अंतरिक्ष एजेंसी ने इस लाल ग्रह पर जाने में सफलता पाई है।

प्रधानमंत्री ने कहा कि विश्व के 51 अभियानों में विश्वभर में सिर्फ 21 को ही सफलता मिली है, लेकिन हमने सफलता पाई है। उन्होंने कहा कि 67 करोड़ किलोमीटर की अदभुत यात्रा करते हुए हम मानवीय साहस और कल्पना के परे चले गए हैं।

प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी ने कहा कि हमने अनजान स्थान पर पहुंचने की हिम्मत की है और लगभग असंभव काम को संभव कर दिखाया है। श्री मोदी ने कहा कि आज एक इतिहास बना है। उन्होंने संसाधनों की कमी के बावजूद मिली इस सफलता पर देशवासियों और इसरो के वैज्ञानिकों को बधाई दी।





पहाड़, प्रकृति एवं पर्यावास



प्राची सिंह,
गार्गी कालेज

पृथ्वी के सबसे बुद्धिमान प्राणी मानव ने अपने भौतिक सुखों के लिए प्रकृति का जमकर दोहन किया। अन्य जगहों की भांति हिमालयी क्षेत्र में भी लोगों ने प्रकृति का दोहन किया। बिजली बनाने के लिए नदियों की धाराओं को रोककर बांध बनाए। अभी और 427 बांध बनाने हैं, इनमें से 100 बांधों पर काम चल रहा है। इन परियोजनाओं के लिए पहाड़ों को छलनी कर दिया गया। जंगलों की अंधाधुंध कटाई की गई। हिमाचल एवं उत्तराखंड जैसे राज्यों में 1970 में 84.9 फीसदी जंगल थे। 2000 में घने जंगल 75.4 फीसदी बचे। एक अनुमान के अनुसार, यह 2100 तक 34 फीसदी रह जाएगा। इसके अलावा सड़क और अन्य निर्माण कार्यों के लिए पहाड़ों को विस्फोटों से तोड़ा गया। जिससे रिक्टर स्केल पर चार तीव्रता का भूकंप होता है। इससे भूस्खलन में बढ़ोतरी होती है। साथ ही पहाड़ों में अवैध तरीकों से खनन होता है। इतना ही नहीं इस निर्जन स्थान पर भूमाफिया, बिल्डरों, ठेकेदारों, नेताओं और नौकरशाहों के गठजोड़ द्वारा लगातार अपने हितों की पूर्ति के लिए बिना किसी सुरक्षा मानकों की चिंता किए अपार्टमेंट और होटलों का निर्माण किया गया। इन इलाकों में बस्तियां बसने से तापमान और प्रदूषण में वृद्धि हुई, जो बादल फटने और ग्लेशियर पिघलने का कारण बना।

विशेषज्ञों की मानें तो हिमालय क्षेत्र को सबसे ज्यादा नुकसान जल विद्युत परियोजनाओं ने पहुंचाया है। एक बांध के लिए 5 से 25 किलोमीटर लंबी सुरंगें बनाने के लिए विस्फोटों का सहारा लिया गया। यह विस्फोट भूस्खलन के लिए सर्वाधिक जिम्मेदार है। विशेषज्ञों ने बताया कि बांधों के निर्माण के लिए पहाड़ों पर किए जा रहे बेतहाशा डायनामाइट विस्फोटों से जर्जर हो चुके पहाड़ों की भीतरी जलधाराएं रिसने लगी है। इससे पेड़ों को मिलने वाली नमी कम हो गई है। जिससे पहाड़ों की हरियाली घट रही है। इसलिए विस्फोटों पर सख्ती से रोक लगनी चाहिए। इसके अलावा हिमालयी राज्यों का विकास मॉडल भी पहाड़ों के अनुरूप नहीं है। अगर इस मॉडल को नहीं बदला गया तो ऐसी आपदाएं आगे भी होंगी।

सदियों से कश्मीर को धरती का स्वर्ग माना जाता रहा है, और यहां आए जल-प्रलय ने इस बात को साबित कर दिया कि स्वर्ग भी नरक बनने का सामर्थ्य रखती है। बड़ा सवाल यह है कि धरती के इस स्वर्ग को नरक बनने का सामर्थ्य किसने दिया? कश्मीर में जल-प्रलय के पीछे आखिर कौन सी शक्ति काम कर रही है? हमें इन सवालों से जूझना होगा और इससे सबक सीखना होगा।

जम्मू-कश्मीर में आई बाढ़ यहां बीते करीब छह दशकों में आई सबसे बड़ी प्राकृतिक आपदा है। आखिर ऐसा क्या हुआ कि धरती का स्वर्ग कहलाने

वाले इस इलाके को नरक जैसे हालात का सामना करना पड़ रहा है? जानकारों का मानना है कि श्रीनगर और आसपास के इलाकों के अधिकारियों ने स्था नीय झीलों और जलाशयों के संरक्षण में बेहद लापरवाही बरतकर इस तरह की आपदा को दावत दी। राज्य सरकार की ओर से कराए गए कई अध्ययन और कुछ वैज्ञानिक रिपोर्ट्स में इस बारे में सचेत भी किया गया, लेकिन इस खतरनाक आहट के संकेत को न ही समझा और न ही कोई कदम उठाया गया। जलप्रलय के नतीजे हमारे सामने हैं।

प्राकृतिक संसाधनों के लगातार दोहन की वजह से जलवायु में आ रहा परिवर्तन इस तरह की आपदाओं को बल प्रदान करता है। सेंटर फॉर साइंस एंड एनवायरमेंट (सीएसई) की एक रिपोर्ट के मुताबिक, बीते 110 साल में देश में प्राकृतिक आपदाओं का सालाना औसत करीब 140 गुना बढ़ा है। जीआईएस लैब और जम्मू-कश्मीर स्टेपट रिमोट सेंटर के अध्ययन के मुताबिक, श्रीनगर में मौजूद 50 प्रतिशत से ज्यादा झील और अन्य जलाशय बीती शताब्दी में लुप्त हो गए। ये जलाशय बाढ़ का बहुत सारा पानी अपने अंदर समा सकते थे। ज्यादा नहीं, एक शताब्दी पहले श्रीनगर शहर का बहुत सारा इलाका जलाशयों, झीलों से घिरा हुआ था। वैज्ञानिकों ने 1911 से 2004 के बीच झीलों के सिकुड़ने की सैटेलाइट स्टडी की। इसके मुताबिक, श्रीनगर में जलाशयों के सूखने की वजह से शहर की आबोहवा पर बुरा असर पड़ा है।

रिपोर्ट के मुताबिक, बाढ़ के दौरान जलाशयों में रेत खनन के साथ बढ़ते



अतिक्रमण, मिट्टी पाटे जाने, पौधरोपण, निर्माण कार्य की वजह से श्रीनगर में मौजूद जलाशय लगातार खत्म होते गए। इनके खत्म होने से जो सबसे बड़ी समस्या शहर के सामने आई, वह ड्रेनेज या जल निकासी की समस्या पैदा हुई। वैज्ञानिकों का कहना है कि हाल के सालों में घाटी में दो-तीन दिन की बारिश से झेलम नदी में बाढ़ का खतरा मंडराने लगता है, लेकिन दो-तीन दशक पहले ऐसा नहीं होता था।

पहले नदी के करीब के इलाकों में वही रहते थे, जिनकी आजीविका नदी से जुड़ी होती थी। ऐसे में बाढ़ आदि की चेतावनी मिलने पर उन्हें तुरंत



इलाका छोड़ने के लिए कहा जाता था। रिहाइशी इलाके ऊंचे जगह पर बनाए जाते थे। पहले जो जमीनें प्राकृतिक ढंग से नदी का पानी सोखते थे, उन पर अब इंसानी कॉलोनियां बस गई हैं। इसके अलावा, पानी निकासी की जगहों पर पक्की सड़कें बन गई हैं। इसके अलावा इलाके में लगे हाइड्रोपावर प्रोजेक्ट भी इस आपदा के लिए जिम्मेदार हैं। इन परियोजना की वजह से नदियों पर बांध बनाने, वनों की कटाई, नदियों के दिशा मोड़ने की प्रवृत्ति बढ़ी। इन्हीं प्रक्रियाओं की वजह से भूस्खलन और अचानक बाढ़ आने की घटनाओं में वृद्धि हुई है।

जल प्रलय के पीछे एक प्रमुख वजह यह भी माना जा रहा है कि मानसूनी बारिश के स्तर का अंदाजा लगाना मौसम वैज्ञानिकों के लिए लगातार मुश्किल होता जा रहा है। उदाहरण के तौर पर, श्रीनगर में 5 सितंबर को होने वाली औसत बारिश का स्तर 0.4 मिमी होता है, लेकिन इस साल यह 49 मिमी रही जो औसत से करीब 122 गुना ज्यादा है। अब इतने बड़े अंतर का आंकलन कोई कैसे कर सकता है। कहने को तो कह दिया जाता है कि यह सब जलवायु परिवर्तन की वजह से हो रहा है, लेकिन इस जलवायु परिवर्तन के पीछे जो मानवीय अतिक्रमण की कहानी लगातार फल-फूल रही है उसको दफन करना ही होगा।

वैज्ञानिकों ने चेतावनी दी है कि वर्तमान हालात के मद्देनजर तत्काल प्रभावी कदम नहीं उठाए गए तो बहुत देरी हो जाएगी। सेंटर फॉर साइंस एंड एनवायरनमेंट (सीएसई) की मानें तो सरकार बस यह कहकर खानापूर्ति कर रही है कि इस तरह की घटनाएं असंतुलित मानसून और पश्चिमी विक्षोभ का नतीजा हैं, लेकिन यह मानकर सरकार हालात की गंभीरता को नजरअंदाज कर रही है। सरकार प्राकृतिक त्रासदियों के पीछे की सही वजह जानने की कोशिश नहीं कर रही है। पर्यावरण मंत्रालय



पारिस्थितिकी तंत्र और प्राकृतिक संसाधनों के संरक्षण की दिशा में पर्याप्त ध्यान नहीं दे रही है।

यहां हमें कुछ और चीजें समझनी जरूरी है। हम भारतीय कितनी निर्दयता से पीड़ा से छटपटाती अपनी धरती पर घाव पर घाव बना रहे हैं। स्थान-स्थान पर उसे काट रहे हैं। वनों का विनाश कर उसे नंगा कर रहे हैं। नदी-नालों के अविरल प्रवाह में बाधा पर बाधा डाले जा रहे हैं। क्लाउड बर्स्ट के कारण बृहद हिमालय की तलहटी की पट्टी के हजारों

गांव बार-बार प्राकृतिक विपदाओं की त्रासदी भोग रहे हैं, झेल रहे हैं। यही वह पट्टी है, जो जब-जब भूकंपों से डोलने लगती है, कांपने लगती है तो पहाड़ टूटते हैं, ढालें सरकती हैं और धरती धंसती है।

मौसम विज्ञानी सालों साल से कहते आ रहे हैं कि जलवायु परिवर्तनों के कारण अब देश में मानसूनी वर्षा असमान रूप से होगी और अतिवृष्टि या अनावृष्टि का दुष्प्रक्र चला करेगा। हिमालय के उत्तराखंडी अंचल हों या हिमाचल प्रदेश की पहाड़ी वादियां हो या फिर जम्मू कश्मीर में जल प्रलय



का जो नजारा हमने हाल में देखा, इस खतरे का अनुमान पहले से ही जताया जा रहा था। लंबे-लंबे समय तक सूखा पड़ने के बाद जब वर्षा होती है तो अनवरत मूसलाधार पानी बरसता है। और तब उफनती-उमड़ती नदियां विनाशकारी बन जाती हैं।

वर्ष 2009 में जिला पिथौरागढ़ के मुन्स्यारी-तेजम क्षेत्र में और 2010 तथा 2012 में गढ़वाल की भागीरथी और अलकनंदा घाटियों में प्रकृति के अकल्पनीय प्रकोप को कभी भुलाया नहीं जा सकता। जम्मू कश्मीर में जिस तरह का जल प्रलय हमने सितंबर महीने के शुरू में देखा, सदियों तक लोग इसे जेहन में रखेंगे। लेकिन जेहन में रखने से क्या? मूसलाधार वर्षा के आघात और उमड़ती-उन्मादिनी सरिताओं एवम् नदियों के कटाव के कारण पर्वतीय ढालें टूट-टूट कर फिसल रही हैं, धंस रही हैं। भूस्खलनों की विभीषिका थमती ही नहीं है। एक अनुमान के मुताबिक, भारतीय हिमालय के अलग-अलग क्षेत्रों में साल 2008 तक करीब 2,10,000 कि.मी. लंबी सड़कों का निर्माण किया जा चुका है। सड़कों का जाल बिछाने का एक परिणाम यह हुआ है कि हिमालय की धरती के प्रभावित क्षेत्रों में कटाव-घिसाव सामान्य से डेढ़-दो हजार गुना बढ़ गया है।

यथार्थ की परवाह किए बिना हम नदियों के प्राकृतिक मार्गों में अवरोध खड़े कर रहे हैं, उनके प्रवाह में बाधा डाल रहे हैं, कालोनियां एवं घर बना रहे हैं, ऊंचे-ऊंचे होटल खड़े कर रहे हैं, दुकानों की कतारें लगा रहे हैं। जब उफनती-उमड़ती नदी अपने पूरे जोश में होती है, उफान में होती है तब अपने मार्ग की बाधाओं को हटाती-मिटती बहती है। यही हुआ है जम्मू कश्मीर में झेलम और चिनाब नदी में जल प्रलय, उत्तराखंड के



मंदाकिनी, अलकनंदा, पिंडर, सरयू, रामगंगा, धौली (दारमा) और काली की घाटियों में। उनके प्राकृतिक मार्गों में बने गांव, मकान, होटल, पुल सभी बह गए। क्या गांव, क्या शहर सभी उजड़ गए। आक्रांत, असहाय, बेसहारा लोगों का सर्वस्व नष्ट हो गया। निश्चित रूप से हमें इन सब



मानवजनित विकृतियों से पार पाना होगा। समय रहते अगर नहीं सुधरे तो वो दिन जरूर आएगा जब पूरी मानव जाति के अस्तित्व पर ही सवालिया निशान खड़ा हो जाएगा। यहां पर मैं किसी शायर के शेर को थोड़ा बदलकर कहना चाहूंगी—

**सदियां बीत जाती हैं लोगों को, केवल एक घर बसाने में,
रूठे जो कुदरत तो एक क्षण काफी है, सब कुछ उजड़ जाने में॥**

चार धामों में से एक केदारनाथ धाम, जिसकी यात्रा करके कोई भी आस्तिक व्यक्ति खुद को धन्य समझता है। मानो उसने ईश्वर का दर्शन पालिया हो और उसके सारे कष्ट दूर हो गए हों। हर भक्त जीवन में एक बार इस देवभूमि पर एक बार जरूर आना चाहता है। इस चाह में लाखों लोग माकूल समय का इंतजार करते हैं। इस धाम की यात्रा के लिए मई और जून का महीना उचित माना जाता है। इसी को ध्यान में रखकर लाखों श्रद्धालु दुर्गम रास्ते को पार करते हुए केदारनाथ धाम पहुंचते। लेकिन होनी कुछ और थी। प्रकृति ने अपना मूड बदला। इन पहाड़ी इलाकों में कई जगह बादल फटे जिससे मौत का सैलाब आ गया। पानी की तेज धार ने 1200 साल पुराने मंदिर के इलाके में कहर बरपाना शुरू कर दिया। जब तक लोग कुछ समझ पाते तब तक हजारों लोगों को यह सैलाब अपने साथ बहा ले गया। बचे लोग किसी तरह ऊंचे स्थान की ओर भागे। इस यात्रा पर गए हर किसी ने अपनों को खोया। नजरों के सामने माता, पिता, भाई, बहन, पत्नी, पुत्र को इस जल प्रलय में दम तोड़ते देखा गया। इसके बाद इससे आई बाढ़ और भूस्खलन से सारे रास्ते अवरुद्ध हो गए। बचे लोग पहाड़ों पर जिंदगी और मौत से अभी भी संघर्ष कर रहे हैं। भले ही अपनी ओर से सरकार यथासंभव राहत और बचाव कार्य कर रही है।

सवाल यह उठता है यह त्रासदी आई क्यों? इसके लिए जिम्मेदार कौन है?

इसका जवाब एक दम सीधा और सरल है। जिस तरह किसी सरकार को सुचारु रूप से चलाने के लिए एक सिस्टम बनाया जाता है और उसके कुछ नियम कायदे होते हैं। अगर उसमें छेड़छाड़ होता है तो पूरा तंत्र अव्यवस्थित हो जाता है। अराजकता फैल जाती है। उसी तरह प्रकृति के भी अपने नियम कायदे हैं। उसमें छेड़छाड़ होने से उसका विकट रूप उत्तराखंड की त्रासदी के रूप में सामने आता है। बेमौसम बरसात, बाढ़, भूकंप, ग्लोबल वार्मिंग जैसे प्राकृतिक आपदाओं से रू-ब-रू होना पड़ता है।

भारत के संत समाज ने उत्तराखंड में आई भीषण प्राकृतिक आपदा का मूल कारण गंगा, यमुना एवं व्यास जैसी नदियों के साथ खिलवाड़ को बताया है। वह मानते हैं कि विकास के नाम पर बड़े-बड़े बांध, सुरंग और नहर परियोजनाएं निर्मित की गई हैं, इन्हीं कारणों से हिमालय पर जलप्रलय आया है। इन्होंने कहा था— केंद्रीय और प्रांतीय शासन तंत्र नहर-बांध एवं सुरंग परियोजनाओं के माध्यम से प्रकृति से छेड़छाड़ कर रहा है। एक दिन प्रकृति अपना बदला जरूर ले लेगी। आज जरूरत इस बात की है कि आपदा से सचेत होकर प्रकृति से हो रहे छेड़छाड़ को रोका जाए। पहाड़ी प्रदेशों के अधिक भीड़-भाड़ वाले शहरों और पहाड़ पर बसे शहरों के प्रदूषण और तापमान का बराबर अध्ययन किया जाए। पहाड़ों के अवैध खनन पर रोक लगाई जाए। भू-स्खलन वाले स्थानों को चिन्हित किया जाए। चिन्हीकरण के आधार पर इन क्षेत्रों में लोगों को जाने से रोका जाए। जो लोग इन इलाकों में बसे हैं उन्हें दूसरी एवं सुरक्षित जगह बसाया जाए। पहाड़ी क्षेत्रों में हो रहे निर्माण कार्य को रोककर उनके लिए प्रकृति के अनुकूल अलग से पर्यावास नीति बनाई जाए। इस संबंध में जो नियम-कानून हों उनका सख्ती से पालन कराया जाए। प्रकृति हमारी मां है। हम उनके बच्चे हैं। उनकी छांव में सुखी पूर्वक जीवन यापन करने के लिए उन्हें बचाना जरूरी है। इसलिए केन्द्र एवं राज्य सरकारों के



साथ-साथ हम सभी का कर्तव्य बनता है कि अपनी मां (प्रकृति) की रक्षा करें। अभी भी हमें 'देर आये दुरस्त आए' की नीति अपनानी चाहिए, अन्यथा यह लाकोक्ति सच साबित होगी— "समय चूकें पुनि का पछतावे— का वर्षा जब कृषि सुखावे"



राष्ट्र प्रेम



मेणका राणा,
सहायक प्रबंधक

इससे शायद ही किसी को हैरानी हो कि कुछ लोगों ने प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी की अमेरिका यात्रा को असफल करार दिया है।

उसकी मानें तो मोदी जी तो चीयरलीडर्स लेकर अमेरिका गए थे और वहां हल्ला-हंगामा कर खाली हाथ देश लौट आए। कुछ और लोगों की ओर से यह सवाल पूछा जा रहा है कि आखिर प्रधानमंत्री अमेरिका से क्या लेकर आए? इस सवाल के जवाब में मोदी जी के समर्थकों के पास बहुत कुछ बताने को है तो उनके विरोधियों के पास उनसे असहमत होने के तमाम तर्क हैं। पता नहीं मोदी जी के समर्थक और आलोचक भारत और अमेरिका के बीच बनी समझ-बूझ के नतीजे सामने आने का इंतजार करेंगे या नहीं, लेकिन इस इंतजार में उसे ओझल नहीं किया जाना चाहिए जो हासिल हो चुका है। मोदी जी ने अमेरिका यात्रा के जरिये देश-दुनिया को यह बताया कि अपनी भाषा, संस्कृति और संस्कार का सम्मान कैसे किया जाना चाहिए? अमेरिका यात्रा के दौरान उन्होंने नवरात्र के अपने उपवास जारी रखे और इसकी परवाह नहीं की कि इससे बराक ओबामा समेत उनके अन्य मेजबान क्या सोचेंगे? कोई और नेता होता तो बहुत संभव है कि वह अपनी ऐसी धार्मिक मान्यता को लेकर सकुचाता-शर्माता और उसे छिपाता भी। मोदी मजे से अपने मेजबानों के समक्ष केवल पानी पानी पीते रहे।

यह पहले से तय हो गया था कि नरेंद्र मोदी जी संयुक्त राष्ट्र महासभा में हिंदी में ही भाषण देंगे। इसे नई अनोखी बात नहीं कहा जा सकता, क्योंकि इसके पहले अटल बिहारी वाजपेयी भी ऐसा कर चुके थे। नई अनोखी बात यह हुई कि संयुक्त राष्ट्र के मंच से भारतीय प्रधानमंत्री ने योग की बात की। इसके बाद उन्होंने ग्लोबल सिटिजंस फेस्टिवल में अंग्रेजी में भाषण अवश्य दिया, लेकिन वहां भी वह ठेठ भारतीय परिधान में थे और उनके वक्तव्य में संस्कृत का एक श्लोक भी शामिल था। नरेन्द्र मोदी जी चाहते तो अमेरिकी दौरे के समय कई अवसरों पर अंग्रेजी में संबोधन कर सकते थे, खासकर वहां जहां उन्हें सवालियों का जवाब देने के बजाय सिर्फ अपनी बात रखनी थी, लेकिन उन्होंने ऐसा नहीं किया। उन्होंने ओबामा के साथ शिखर वार्ता के बाद भी अमेरिका से हुए समझौतों की जानकारी हिंदी में दी। इस दौरान वह हिंदी में लिखा वक्तव्य पढ़ रहे थे। वह अंग्रेजी में लिखा वक्तव्य भी बहुत आसानी से पढ़ सकते थे, लेकिन उन्होंने दुनिया को हिंदी में अपनी बात सुनाई। नरेंद्र मोदी जी पहले ऐसे प्रधानमंत्री हैं जो देश-दुनिया को यह बता रहे हैं कि बिना अंग्रेजी के भी शासन चलाया जा सकता है। भारत में शासन के साथ-साथ कूटनीति और विदेशी नीति की भी भाषा हिंदी हो सकती है, यह दुनिया ने पहली बार जाना तो मोदी जी के कारण ही। चूंकि न्यूयार्क के प्रतिष्ठित मेडिसन रक्वायर गाडन में उनके समक्ष उपस्थित श्रोता-दर्शक भारतीय मूल के ही थे इसलिए वहां प्रधानमंत्री भारतीयता के रंग में रंगे नजर आए। उन्हें देखने-सुनने आए लोग भारतीय होने के

गर्वीले भाव से भरे हुए थे। भारतीयों और साथ ही अमेरिकियों को पहली बार किसी भारतीय प्रधानमंत्री के मुख से वसुधैव, कुटुंबकम, सर्वे भवंतु सुखिनः जैसे शब्द सुनने को मिले। अमेरिका में इसके पहले शायद की कभी भारत माता की जय की वैसी गूंज सुनी गई हो जैसी मोदी जी की न्यूयार्क यात्रा के दौरान सुनाई दी।

इस पर गौर करें कि हमारे यहां कई कथित सेक्युलर विचारक ऐसे हैं जिन्हें भारत माता की जय कहना नहीं सुहाता। उनकी मानें तो गंगा, योग, भारत माता की जय, हिंदी, संस्कृत आदि तो बस राष्ट्र प्रेमियों के एजेंडे का हिस्सा है। कुछ लेखक-विचारक तो यह साबित कर भी रहे हैं कि मोदी जी ने इसी कारण अमेरिका में इन सब पर अपना ध्यान केंद्रित किया। वे इसी तरह की कोशिश पहले भी कर चुके हैं। जब दिल्ली के रामलीला मैदान में लोकपाल को लेकर अन्ना हजारे के अनशन के दौरान भारत माता की जय के नारे लगे थे तो कुछ लोगों को बड़ा कष्ट वह इस नतीजे पर पहुंच गई थी कि अगर आप लोकपाल पर सहमत हैं तो आपको भारत माता की जय कहना होगा। मानो ऐसा कहना हेय हो। ऐसे लोगों को तब भी बहुत कष्ट हुआ था जब लोकसभा चुनाव में जीत के बाद श्री नरेंद्र मोदी जी वाराणसी में तिलक लगाए हुए गंगा आरती करते दिखे थे। इस पर आश्चर्य नहीं कि कुछ लोग ऐसा कोई निबंध लिखने में जुटे हों कि श्री नरेंद्र मोदी जी किस तरह बहुसंख्यकवाद का प्रदर्शन कर रहे हैं। इसमें भी कोई संदेह नहीं कि लोकसभा चुनाव में प्रबल जीत के बावजूद सेक्युलर खेमे के अंग्रेजियतपरस्त लोगों को प्रधानमंत्री हिंदी प्रवक्ता के तौर पर श्री नरेंद्र मोदी जी पच नहीं रहे। ऐसा लगता है उनके विशिष्टता बोध को गहरी ठेस लगी है। अंग्रेजी मीडिया के एक हिस्से का सुर और स्वभाव देखें तो यह साफ नजर आएगा कि वह मोदी जी के प्रति पूर्वाग्रह-दुराग्रह से ग्रस्त हैं। ऐसे लोग मोदी सरकार की हर नीति और कार्यक्रम के बारे में कुछ इस तरह लिखते-बोलते हैं - यहां तक तो ठीक है, लेकिन.....। योजना तो अच्छी है, लेकिन। भूटान दौरा तो ठीक रहा, लेकिन देखते हैं नेपाल में क्या करते हैं मोदी? पता नहीं मोदी जी के सफल बताए जा रहे अमेरिकी दौरे के बाद ऐसे लोग क्या करते हैं?

कोई मूढ़ मति और परम दुराग्रही हो भारत स्वच्छ अभियान की आलोचना कर सकता है, लेकिन कुछ लोग इस अभियान को मिशन इंपासिबिल यानी असंभव कार्य करार देकर खुश हो रहे हैं। वे यह भी बता रहे हैं कि किस तरह गांधीनगर औ अहमदाबाद अभी भी गंदा है। जी हां, जिस तरह कुछ लोगों की सुई 2002 में अटकी हुई है उसी तरह कुछ लोग मोदी जी को अभी भी गुजरात के मुख्यमंत्री के तौर पर देख रहे हैं। वे यह भी कह रहे हैं कि मोदी के स्वच्छ भारत अभियान का बनारस पर शायद ही कोई असर पड़े। उन्हें शायद स्वच्छ भारत अभियान के विफल होने का बेसब्री से इंतजार है। जो भी हो, जिन्हें मोदी सरकार के कार्यकाल में कुछ होता नहीं दिखाई दिया है वे चाहे तो यह देख सकते हैं कि उनकी सरकार ने किस तरह भारतीय होने के भाव को ऊंचा उठाया है। मोदी जी का राष्ट्र प्रेम अपने आप नजर आता है। चलो कुछ अच्छी शुरुआत तो हुई जो साधारण जनमानस के इच्छानुरूप है। आज मोदी जी साधारण से साधारण भारतवासियों की पहली पसंद बन चुके हैं। उनकी लोकप्रियता के लिए किसी लाइसेंस या शिफारिश की आवश्यकता नहीं।





स्वास्थ्य एवं तनाव



डा. अमर सिंह सचान
राजभाषा अधिकारी

हृदय संबंधी बीमारियों के लिए भारत सबसे अधिक मरीजों वाला देश बन चुका है। यहां के दिल्ली, मुंबई, चेन्नई एवं कोलकाता जैसे शहरों में सर्वाधिक मामले पाए जाते हैं। आज हृदय विकारों का सबसे बड़ा कारण एक तरफ जहां हमारा खान-पान जिम्मेदार है, वहीं दूसरी ओर प्रदूषण का बढ़ता प्रभाव, काम का तनाव, आर्थिक चिंताएं एवं व्यस्त जीवन-शैली भी बहुत अधिक जिम्मेदार है। आज काम की व्यस्तता के कारण मानव का सर्वाधिक समय पुस्तकों, कंप्यूटरों, ई-उपकरणों तथा टीवी के सामने गुजरता है जिसका नतीजा यह होता है कि खेलकूद जैसे स्वस्थ आमोद-प्रमोद के साधन खत्म हो चुके हैं। इसके साथ ही भारतीय खान-पान में तैलीय पदार्थों, घी की भरपूर मात्रा के साथ-साथ मसालेदार, तीखा चटपटा एवं नमकीन भोजन भी अधिक खाया जाता है जिसका परिणाम विभिन्न प्रकार के हृदय विकारों के रूप में प्रकट होता है। हृदय यानि दिल की सेहत को बरकरार रखने की शुरुआत घर से होती है। घर में कुछ स्वास्थ्यकर वस्तुओं को रखकर और टेलीविजन, स्मार्ट फोन और वीडियो गेम्स आदि के इस्तेमाल को सीमित कर आपके और परिवार के अन्य सदस्यों को हृदय रोगों और स्ट्रोक से बचाया जा सकता है। इस संदर्भ में कुछ सुझावों का पालन करना आपके लिए लाभप्रद है।

स्वास्थ्यवर्धक आहार एवं फलादि

- घर में मौसमी फल और ताजी हरी सब्जियां रखें और खान-पान में इन्हें वरीयता दें। मिठाई के स्थान पर मीठे फल खाएं।
- जहां तक संभव हो, फास्ट फूड्स से परहेज करें। पिज्जा, समोसा और चिप्स और कोल्ड ड्रिक्स से बसा, शर्करा और नमक पाए जाते हैं, जो कालांतर में सेहत के लिए नुकसानदेह साबित होते हैं।
- खाद्य पदार्थों में तेल की मात्रा को सीमित करें। प्रति व्यक्ति, प्रति माह लगभग आधा लीटर तेल का प्रयोग करें। विभिन्न प्रकार के तेलों का इस्तेमाल करें। जैसे सूर्यमुखी, जैतून (ओलिव), ग्राउंड नट्स और सरसों का तेल।
- खाने की टेबल पर कई प्रकार के व्यंजन न रखें। ऐसा करने भूख से अधिक खाना खाने की संभावना बढ़ जाती है।

धूम्रपान करें बंद – वयस्कों को धूम्रपान की लत छोड़ देनी चाहिए और उन्हें घर में धूम्रपान नहीं करना चाहिए। इससे आपकी और बच्चों की

सेहत पर अच्छा असर पड़ेगा। साथ ही, आप बच्चों के समक्ष भी अच्छा उदाहरण पेश करेंगे। आम तौर पर बच्चे धूम्रपान और शराब सेवन के मामले में अपने अभिभावकों की नकल करते हैं। धूम्रपान के अलावा तम्बाकू के अन्य पदार्थों का सेवन भी बिल्कुल न करें।

खेलकूद में सक्रिय रहें

- घर में टेलीविजन और वीडियो गेम्स ज्यादा न देखें। आउटडोर गेम्स में सक्रिय रूप से भाग लें।
- प्रति सप्ताह कम से कम पांच से छह बार 45 से 60 मिनट तक टहलें। तैराकी व साइक्लिंग करें या फिर जिम जाएं। नियमित योगा व व्यायाम करें।
- अपने घर की बागवानी, छत एवं आंगन की सफाई खुद करें तथा घर के अन्य काम खुद करें। बाजार, दुकान या सब्जी बाजार तक पैदल जाएं।

समुदाय-समाज की जिम्मेदारी

- जिस जगह आप रह रहे हैं, वहां के स्थानीय लोगों की यह जिम्मेदारी है कि वे अपने आसपास के परिवेश में कोई स्थान निश्चित करें। एक ऐसी जगह जहां पर लोग आपस में बात कर सकें। हंसी-मजाक कर सकें।
 - स्कूल-कॉलेजों में शारीरिक शिक्षा और खेलों पर विशेष ध्यान दिया जाना चाहिए।
 - व्यायाम और अन्य शारीरिक गतिविधियों के लिए खेल के मैदान, पार्क और टहलने के लिए फुटपाथ होने चाहिए।
 - समाज के लोग इस बात को सुनिश्चित करें कि स्कूलों, दफ्तरों, कार्य-स्थलों और अस्पतालों में फास्टफूड्स के बजाय कम खर्चीले पोषक तत्वों से युक्त आहार उपलब्ध कराया जाए।
- अन्य सुझाव—दिल की सेहत के लिए स्वास्थ्यकर माहौल बनाने के लिए आपको अपने स्तर पर या सामूहिक रूप से कुछ पहल करनी होगी। जैसे—
- लोगों को प्रेम से सिगरेट छोड़ने के लिए प्रोत्साहित करें। कार्यस्थलों में धूम्रपान पर प्रतिबंध के संदर्भ में आवाज बुलंद करें।
 - खेल मैदानों या स्कूलों के पास स्थित तंबाकू उत्पादों की





दुकानों के खिलाफ संबंधित प्रशासनिक अधिकारी से शिकायत करें।

- लंच के वक्त लिफ्ट के बजाय सीढ़ियों का इस्तेमाल करें।

सरकार का दायित्व

दुनिया के विभिन्न देशों की सरकारें भी कुछ नियम-कायदे बनाकर दिल की सेहत के लिए स्वास्थ्यकर माहौल तैयार करने में मदद कर सकती है। जैसे :-

- टेलीविजन और रेडियो पर फास्टफूड्स के विज्ञापनों पर पाबंदियां लगायी जा सकती है और इनके स्थान पर स्वास्थ्यकर खान-पान को बढ़ावा दिया जा सकता है या फिर विज्ञापन के नीचे धूम्रपान की भांति चेतावनी दिखाना अनिवार्य किया जा सकता है।



- दुर्भाग्यवश अस्वास्थ्यकर खाद्य पदार्थों और शीतल पेयों के विज्ञापनों पर बहुत ज्यादा धन खर्च किया जाता है, जबकि बढ़ती उम्र के बच्चों और नवयुवकों पर इन विज्ञापनों का असर काफी तेजी से होता है। इसलिए सरकारों को इस संदर्भ में सोचना चाहिए।
- तंबाकू, शराब और अन्य अस्वास्थ्यकर खाद्य पदार्थों पर टैक्स बढ़ाकर लगाने के लिए कानून बनाए जाने चाहिए।
- ऐसी सुविधाएं प्रदान की जाएं ताकि समय रहते हृदय रोगों का पता चल सके। जिन रोगों में हृदय रोगों के होने का खतरा (जैसे मधुमेह रोगी) ज्यादा है उन्हें, समुचित लागत पर कारगर चिकित्सा सुविधाएं उपलब्ध करायी जाएं।
- हृदय रोग होने की स्थिति में अपने डॉक्टर से इलाज के विभिन्न विकल्पों के बारे में विस्तृत रूप से परामर्श लें।

- स्थानीय स्तर पर प्रति सप्ताह स्वास्थ्य जांच शिविरों का आयोजन किया जाए।

उपर्युक्त कदमों को उठाकर और इस संदर्भ में सुझावों पर अमल कर इस साल वर्ल्ड हार्ट डे के लक्ष्यों को काफी हद तक पूरा किया जा सकता है। हालांकि इन लक्ष्यों को सौ फीसदी पूरा करने में लंबा वक्त लग सकता है।

फिर भी हम-आप एक अच्छी शुरुआत कर सकते हैं। मौजूदा संदर्भ में एक विशेष महत्वपूर्ण तथ्य यह है कि दुनिया भर में दक्षिण एशियाई देशों में हृदय धमनी रोग (कोरोनरी आर्टरी डिजीज) से संबंधित सबसे ज्यादा मामले सामने आते हैं।

दुनिया में सबसे ज्यादा मधुमेह रोगी भारत में मौजूद है। हृदय रोग के साथ मधुमेह का होना किसी पीड़ित व्यक्ति के स्वास्थ्य के अलावा समाज व समुदाय की उत्पादकता

पर भी प्रतिकूल प्रभाव डालता है। इसलिए हृदय को दुरुस्त रखने के लिए हमें अपने परिवेश के माहौल को भी स्वास्थ्यकर बनाना होगा।



हृदय रोगों के जोखिम को जानें

- बीमारी के बगैर कभी-कभार डॉक्टर के पास चेकअप के लिए जाएं। ब्लडप्रेसर, कोलेस्ट्रॉल और ग्लूकोज लेवल, वजन और बॉडी मास इंडेक्स से संबंधित जांचें कराएं। ये परीक्षण विशेष रूप से इसलिए महत्वपूर्ण हैं, क्योंकि तमाम परिवारों के सदस्यों में 60 साल की उम्र से कम वाले लोगों में हाईब्लड प्रेशर, हृदय रोग, डाइबिटीज और स्ट्रोक सरीखी समस्याएं पायी जाती हैं।
- एक बार जब हृदय रोगों के जोखिम को जान जाते हैं, तब आप हृदय की सेहत में सुधार के लिए अपने डॉक्टर के परामर्श से कोई खास योजना बना सकते हैं। जरूरत पड़ने पर आपका डॉक्टर कुछ जरूरी परीक्षण कराने का परामर्श दे सकता है। इसके अलावा वह जरूरत पड़ने पर इलाज के विकल्प का प्रारूप भी सुझा सकता है।
- अपने वजन को नियंत्रित करना सुनिश्चित करें।
- तनावयुक्त रहना दिल को स्वस्थ रखने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। सकारात्मक सोच से स्वयं को जहां तक संभव हो, तनावयुक्त रखने का प्रयास करें। योग व ध्यान करें। संगीत सुनने से भी तनाव कम होता है।





अहंकार



अक्षय कुमार,
सहायक प्रबंधक

आज पूरी दुनिया में सभी देशों, समुदायों एवं लोगों के बीच एक परस्पर दौड़ सी लगी हुई है। हर व्यक्ति अपने से कमजोर के कंधे पर पैर रखकर ऊपर चढ़कर आगे बढ़ जाना चाहता है। यह दौड़ अपने भौतिक सुख, अपने यश, नाम एवं प्रसिद्धि के लिए करता है या फिर अपनी अतृप्त लालसाओं, कामनाओं व वासनाओं की पूर्ति के लिए करता है। लेकिन इस दुनिया में बहुत से ऐसे लोग भी हैं जो अपने धर्म, मजहब को सबसे ऊंचा, बेहतर एवं पाक मानते हुए पूरे विश्व में डंका बजाना चाहते हैं, फिर चाहे उसके लिए उन्हें धन, बल एवं शक्ति के साथ अनैतिक साधनों का सहारा ही क्यों न लेना पड़े। वे लोग यह मानने को तैयार नहीं होते कि दुनिया में सभी धर्मों का मूल भाव मनुष्य जाति को सद्भावपूर्ण जीवन डगर पर चलना सिखाता है। सच तो यह है कि जो धर्म खुद को दूसरों से बेहतर साबित करना चाहता है, वह कभी भी सर्वोष्ठ धर्म नहीं हो सकता है। जो धर्म या पंथ मानव को परस्पर लड़ने, मरने—मारने या हत्या करने के लिए उकसाता हो, वह कभी भी सच्चा धर्म नहीं हो सकता। सच्चा धर्म मानव को सुमार्ग पर चलकर सज्जनता का पाठ पढ़ाता है दूसरों को आदर देना सिखाता है ब्रह्मांड के हर पदार्थ, जीव व अंश में पूज्य एवं आदर का भाव पैदा करता है। लेकिन कई लोग जानकर भी, स्वार्थवश या अहंकार वश संमार्ग की बजाय कुमार्ग पर ही चलते हैं और दूसरों को भी चलाते हैं। इसे समझने के लिए लोक कथा पर्याप्त साबित हो सकती है।

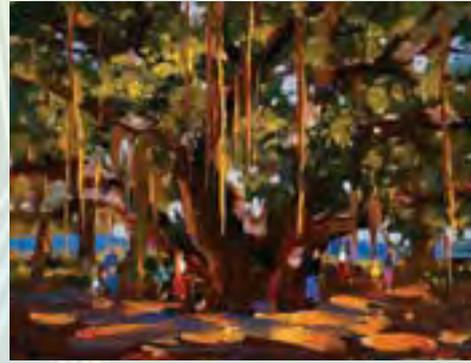
एक बरगद के पेड़ पर बहुत सारे पक्षी मिलजुल कर रहते थे। एक दूसरे का सुख—दुख बांटना उनकी आदत बन गई थी। बस एक मोर था जो किसी से बात नहीं करता था। सब उसके घमंडी स्वभाव से परेशान थे, लेकिन उसकी सुंदरता पर मुग्ध थे। वे उसकी खूब तारीफ करते। उसे तरह—तरह से रिझाते, हर बात उससे पूछते, पर मोर में दिनोदिन उनका तिरस्कार करने की आदत बढ़ती जाती। एक दिन एक छोटी सी गौरैया मस्ती में गाती हुई चोंच में एक बड़ा दाना ले आई। उसे मजे से खाते देख पक्षी उससे पूछने लगे — यह दाना कहां से लाई? उसने बता दिया। फिर क्या था, सब अपने—अपने लिए दाना ले आए और खाने लगे। लेकिन मोर वैसे ही बैठा रहा। अब सब सोचने लगे कि मोर को दाने का पता कौन बताए। सबने गौरैया से ऐसा करने को कहा तो उसने कहा — ‘मोर मुझसे पूछेगा तभी बताऊंगी।’ पक्षी बोले — ‘मोर घमंड के कारण पूछेगा नहीं, इसलिए दाना नहीं खा पाएगा।’ तो न खा पाए। न तो वह बीमार है, न जंगल की भलाई में किसी बड़े काम में लगा हुआ है। फिर उसे इतना महत्व देने की क्या जरूरत है। हमारे महत्व न देने से उसकी सुंदरता घट तो न जाएगी। अगर घट भी गई तो हमारा या जंगल का क्या बिगड़

जाएगा?’ सभी ने गौरैया का सुझाव माना। इससे न केवल उनके बीच का तनाव खत्म हुआ, मोर भी सारा माजरा समझ गया।

समाज के उत्थान या पतन में सामूहिकता का बहुत बड़ा हाथ होता है। इसकी पहल व्यक्ति ही करता है। जैसे आवश्यकता से अधिक भोजन शरीर में जमा होकर व्याधियों का कारण बनता है, उसी प्रकार अधिक महत्व मन में जम कर अहंकार को जन्म देता है। निरंतर मिलने वाले अनावश्यक सम्मान के कारण कोई भी व्यक्ति स्वयं को दूसरों से श्रेष्ठ समझने लगता है। इसकी निरंतरता भंग होने पर आक्रामक हो जाना भी स्वाभाविक है। यह व्यक्ति और समाज दोनों के लिए कई स्तर पर हानिकारक है। आज महिलाओं पर हो रहे जघन्य अपराध परिवार द्वारा लड़कों को दिए गए अनावश्यक महत्व का परिणाम भी है। ऊंचे पद के लिए चल रही अंधी दौड़ समाज द्वारा इनके आधार पर सम्मान दिए जाने का परिणाम है।

सम्मान पाने की भूख हर व्यक्ति की स्वाभाविक मनोवृत्ति होती है। इंसान वही बनना या करना चाहता है जिसे लोग प्रशंसा की दृष्टि से देखते हैं। किसान, प्लंबर को भी वही सम्मान मिले जो डाक्टर, प्रशासनिक अधिकारी या विधायकों को मिलता है तो विद्यार्थी स्वयं अभिरूचि के अनुसार व्यवसाय चुनने लगेंगे।

आज भी दुनिया भर में आई संचार क्रांति ने जहां देशों एवं समुदायों की दूरियां मिटा दी हैं, वहीं इस क्रांति ने लोगों के बीच खुद को अधिक



लोकप्रिय या शक्तिशाली बनकर मशहूर होने की प्रवृत्ति को भी तेजी से बढ़ावा दिया है। आजकल तो लोग अपने को मशहूर बनाने के लिए ऐसी—ऐसी शर्मनाक, औछी, छिछोरी एवं अश्लील हरकतें करने लगे हैं कि जितना भी भर्त्सना की जाए, वह कम होगी। आज कल सोशल नेटवर्किंग साइटों पर लोग अपनी नग्नता के फोटो, वीडियो डाल रहे हैं तो कुछ लोग हिंसा, कत्ल एवं घृणास्पद कारनामों के वीडियो डाल रहे हैं। फोटो जारी कर रहे हैं। मजे की बात यह है कि इन्हें लोकप्रियता भी मिल रही है। अच्छे कामों या प्रेरणादायक चीजों से अधिक गंदे, अश्लील एवं नग्नता वाली चीजों का ज्यादा ध्यान मिलता है। पूरे विश्व एवं समाज को सोचने की जरूरत है कि एक स्वस्थ समाज, समुदाय एवं मानव जाति के लिए क्या आवश्यक है और क्या हितकारी है। हमें किस चीज को महत्व देना चाहिए, किसको नहीं।



भारतीय पूजा पद्धति



आशिष जैन,
उप प्रबंधक

आज तक जो बात हमारे देशवासी दबी-दबी आवाज में कहते थे कि हमारी संपूर्ण पूजा पद्धति एवं संस्कृति प्रकृति की संरक्षक है, उसी बात को हमारे देश के प्रधानमंत्री महोदय ने बड़े ही गर्व के साथ नपे तुले शब्दों में विश्व के सबसे बड़े मंच संयुक्त राष्ट्र संघ से पूरी दुनिया को बता दी कि हमारी भारतीय पूजा-पद्धति एवं हमारी सांस्कृतिक विरासत का हर पक्ष प्रकृति के प्रेम एवं उसके संरक्षण से जुड़ा है। हम सभी प्रकृति में ही अपने ईश्वर या गॉड की देखते हैं। हमारी संस्कृति का हर पहलू किसी न किसी रूप में प्रकृति से जुड़ा है। हमारा देश भू-मंडल के हर जोखिम एवं अजैविक तत्व की पूजा व अर्चना करता है फिर चाहे वह पेड़-पौधे हो या फिर पहाड़ हो या नदियां या कुआं हो या सरोवर। यह सारी बातें अक्षरशः सत्य भी है हम भारतीयों ने सही मायने में "बसुधैव कुटुंबकम" की सूक्ति को अपना कर साकार किया है। हम प्रकृति को ही सृष्टि का आदि स्वरूप मानते हैं, जिसमें सभी ईश्वरीय रूप समाहित माने गए हैं।

इस वर्ष नवरात्र से पहले जम्मू कश्मीर में आए भीषण जल सैलाब के कारण जो प्राकृतिक त्रासदी हुई, अरबों-खरबों की सम्पत्ति देखते-देखते नष्ट हो गई तथा अनेक लोगों को अपने आत्मीयजनों से बिछुड़ने का दुख सहना पड़ा। ऐसी संकट की घड़ियों में पूरा देश सृष्टि की अधिष्ठात्री प्रकृति परमेश्वरी से प्रार्थना करता है कि प्राकृतिक आपदाओं का कहर शांत हो तथा जिस प्रकृति देवी ने कश्मीर को धरती का स्वर्ग बनाया है, उसके प्राकृतिक सौन्दर्य की पुनः बहाली हो।

प्रकृति क्या है? प्राकृतिक प्रकोप क्यों उभरते हैं? और उन प्राकृतिक प्रकोपों से मुक्ति का उपाय क्या है? ये कुछ ऐसे शाश्वत प्रश्न हैं जिनका मानव के अस्तित्व से गहरा संबंध है। 'दुर्गासप्तशती' नामक ग्रंथ में इन समस्याओं से छुटकारा पाने के लिए प्राकृतिक आपदाओं की दुर्गति से बचाने वाले 'दुर्गातिनाशिनी' 'नवदुर्गा' का मातृभाव से उपासना का विधान आया है। 'दुर्गासप्तशती' का पर्यावरण वैज्ञानिक फलितार्थ यही है कि शुभ और निशुभ नामक खूंखार राक्षसों का महाशक्ति ने बंध इसलिए किया क्योंकि ये असुर इन्द्र की प्राकृतिक राज्य व्यवस्था ही अपने कब्जे में कर लेना चाहते थे। पर्यावरण विरोधी इन शक्तियों ने पृथ्वी, अग्नि, जल, वायु, आकाश नाम के प्राकृतिक तत्वों को भी अपने नियंत्रण में ले लिया था। ऐसे संकटकाल में जब ब्रह्मांड की पूरी प्राकृतिक व्यवस्था आसुरी शक्तियों के हाथ में आने से असंतुलित होने लगी तो पर्यावरण संरक्षण की चिंता करने वाली देवशक्तियों ने हिमालय जाकर विश्व पर्यावरण की रक्षा

के लिए जगदम्बा से प्रार्थना की।

आज समूचे हिमालय क्षेत्र में भूकम्प, भूस्खलन, सूखा, अतिवृष्टि, अनावृष्टि आदि प्राकृतिक आपदाओं के पिछले पांच-छह वर्षों के रिकॉर्ड बताते हैं कि अंधाधुंध विकास के कारण हिमालयी प्रकृति तनाव के दौर से गुजर रही है। पर्यटन उद्योग तथा अंधविकासवाद के नाम पर जिस प्रकार हिमालय के प्राकृतिक संसाधनों का दोहन और व्यापारिक धरातल पर उनका दुरुपयोग हो रहा है, उससे भी हिमालयी प्रकृति रुष्ट है। विडम्बना यह भी है कि राज्य सरकारें हो या केन्द्र सरकार - प्रकृति द्वारा दिए जा रहे आपदाओं के संकेतों को समझने की उन्हें न तो चिन्ता है और न आपदा प्रबंध के ठोस उपाय करने के संसाधन ही उनके पास हैं। उत्तराखंड और जम्मू-कश्मीर दोनों स्थान हिमालयी क्षेत्र की प्राकृतिक



दृष्टि से अत्यन्त संवेदनशील जोन के अंतर्गत आते हैं। हिमालय की यह मौसम वैज्ञानिक संवेदनशीलता न केवल भारत बल्कि हमारे पड़ोसी देश चीन और पाकिस्तान सहित समूचे एशिया महाद्वीप के लिए भी चिंता का विषय है।

पर्यावरण संतुलन की दृष्टि से पर्वतराज हिमालय की प्रधान भूमिका है। यह पर्वत मौसम नियंत्रण होने के साथ-साथ विश्व पर्यावरण को नियंत्रित करने का भी केन्द्रीय संस्थान है। हिमालय क्षेत्र के इसी राष्ट्रीय महत्व को उजागर करने के लिए देवी के नौ रूपों में हिमालयी प्रकृति को 'शैलपुत्री' के रूप में सर्वप्रथम स्थान दिया गया है। नवरात्र के पहले दिन 'शैलपुत्री' की विशेष पूजा-अर्चना की जाती है। प्रकृति के सच्चिदानन्दमय ब्रह्मास्वरूप को अभिव्यक्त करने वाली देवी का दूसरा नाम 'ब्रह्माचारिणी' है। प्रकृति देवी का तीसरा रूप 'चन्द्रघंटा' प्रकृति के आह्लादकारी स्वरूप का द्योतक है। प्रकृति का चौथा रूप 'कूष्मांडा' के नाम से अभिप्रेत है। ब्रह्मांड को उत्पन्न करने के कारण यह देवी 'कूष्मांडा' कहलाई। त्रिविध आपदाओं और प्रकृति प्रकोप का संचालन तंत्र देवी के इसी चौथे रूप में समाया है। देवी का पांचवां रूप 'स्कन्दमाता' का है। इस देवी की गोद में स्कन्द नामक बालक विराजमान है। 'स्कन्दमाता' प्रकृति को माता के



समान देखने का भाव अभिव्यक्त करती है। हर वर्ष नवरात्र के शुभागमन पर 'स्कन्दमाता' का ध्यान करते हुए यही कामना की जाती है कि 'मनुष्य जाने या अनजाने स्वार्थवश प्रकृति के प्रति अपराध करता रहता है। प्रकृति माता अपने इन कुपुत्रों के अपराध क्षमा कर दें। कारण, 'कुपोत्रो जायेत् क्वाचिदपि कुमाता न भवति' अर्थात् पुत्र कुपुत्र हो सकता है पर माता कुमाता कभी नहीं होती। देवी का छटा रूप 'कात्यायनी' है। कात्यायन ऋषि की तपस्या से प्रसन्न होकर उनके आश्रम में ब्रह्मा, विष्णु और शिव के तेज से कात्यायनी देवी का प्रादुर्भाव हुआ था। विन्ध्यपर्वतवासिनी इसी देवी ने दुष्ट दानवों का विनाश किया था। देवी का सातवां रूप 'कालरात्रि' या 'महाकाली' के रूप में उपास्य है। प्रलय तथा विध्वंस के प्राकृतिक प्रकोप देवी के इसी भयावह रूप की अभिव्यक्ति हैं। देवी का आठवां रूप 'महागौरी' के नाम से जनश्रुत है। दुर्गाष्टमी के दिन इसी लोककल्याणी महाशक्ति की पूजा का विशेष अनुष्ठान होता है। दुर्गा की नौवीं शक्ति 'सिद्धिदात्री' कहलाती है। विश्व के सभी कार्यों को साधनेवाली देवी के इस रूप को सर्वार्थसाधिका प्रकृति भी कहा जाता है।

वास्तविक समस्या यह है कि जिस प्रकृति की गोद में रच बस कर मनुष्य ने 'जीओ और जीने दो' की सभ्यता सीखी थी, आज अन्धविकासवाद के धरातल पर वह उसी प्रकृति के संसाधनों को लूटने-खसोटने की योजनाएं बना रहा है। चिंता की बात है कि भारत जैसे वृक्षपूजक देश में पर्यावरण की रक्षा करने वृक्षों और वनों को बहुत तेजी से सफाया हो रहा है। जिसके कारण पूरे देश में भूजल का स्तर गिरता जा रहा है। नदियों की मातृभाव से पूजा करने वाले देश में नदियों को प्रदूषण से मुक्त करने की चिंता न राज्य सरकारों को है और न धार्मिक संस्थाओं को विडम्बना यह भी है कि आज राज्य सरकारों ने अन्धविकासवादी एवं पर्यावरण विरोधी शासन नीतियों को लागू करते हुए हिमालय क्षेत्र में प्राकृतिक अपदाओं को आमंत्रित करने में अहम भूमिका का निर्वाह किया है। वनों की अंधाधुंध कटाई, डायनामाइट विस्फोट से हिमालय की गिरि कन्दराओं की तोड़-फोड़ तथा पर्यावरण विरोधी विशालकाय बांध योजनाओं से समूचे हिमालयी पर्यावरण की पारिस्थितिकी निरन्तर बिगड़ती जा रही है तथा ग्लोबल वार्मिंग का राक्षस हिमालय के ग्लेशियरों को लील जाना चाहता है। विकास की इसी उपभोक्तावादी पश्चिमी सोच के कारण भारत जैसे प्रकृति पूजक देश में तरह-तरह की प्राकृतिक आपदाएं विस्फोटक रूप लेती जा रही हैं इसलिए 'दुर्गासप्तशती' का पर्यावरण वैज्ञानिक चिन्तन आज पहले से भी अधिक प्रासंगिक हो गया है।

'भारतराष्ट्र' कोई जाति, धर्म, अथवा नस्ल विशेष के अनुयायियों द्वारा संगठित नहीं बल्कि प्रकृति समाराधकों का प्राचीन राष्ट्र है। आज से आठ हजार वर्ष पहले ऋग्वेद में 'धर्म' की जो सनातन परिभाषा दी गई है, उसके अनुसार कोई भी व्यक्ति और राष्ट्र यदि अपना भौतिक एवं आध्यात्मिक विकास चाहता है तो उसे सर्वप्रथम ब्रह्मांड को संचालित करने वाले 'ऋत' एवं 'सत्य' नामक प्रकृति के नियमों तथा संसाधनों की रक्षा को अपना प्रधान 'धर्म मानना होगा - 'तानि धर्माणि प्रथमान्यासन।' इसलिए आज हिमालय के पर्यावरण की रक्षा को राजधर्म की चेतना से

नहीं बल्कि राष्ट्रधर्म की अपेक्षा से वरीयता देने की आवश्यकता है। शायद मार्कंडेय ऋषि को भी चिंता थी कि अन्ध विकासवाद की आसुरी नीतियां एक दिन पूरे विश्व के पर्यावरण को न लील जाए। इसी संकट से बचाने के लिए आश्विन मास में शारदीय नवरात्र का आयोजन होता है ताकि पर्यावरण संरक्षण की भारतीय परंपरा को चिरंतन रूप दिया जा सके। इसे नवदुर्गा के देवशास्त्रीय रूप से इसलिए जोड़ा गया है ताकि धर्म और प्रकृतिविज्ञान के समन्वय से व्यक्ति और राष्ट्र दोनों का कल्याण हो सकें।

ठीक इसी प्रकार यदि भगवान शिव के स्वरूप की सांकेतिक व्याख्या करें तो हम पाते हैं कि उनके शीश में जहां एक ओर चंद्रमा विराजमान है वहीं उनकी जटाओं में गंगा भी समाहित है। जो समस्त मानव के लिए पूजनीय बन जाती है। इसी प्रकार शिव के गले में सर्पों की माला भी प्रकृति प्रेम को दर्शाती है। कुल मिलाकर भगवान शिव स्वयं प्रकृति रूपी आदि शक्ति के ही एक स्वरूप है।

हम भारतीय जिस सनातन धर्म की बात करते हैं, वह किसी व्यक्ति विशेष के द्वारा निर्मित किसी एक ग्रंथ पर आधारित नहीं है, बल्कि यह प्रकृति के एक अंग के रूप में अतंत काल से मानव की यात्रा के साथ चल रहा है। इसमें प्रकृति के हर सकारात्मक पहलू को शामिल किया गया। इसीकारण सूर्य, चन्द्र सहित अनेक ग्रहों की उपासना एवं पूजा को शामिल किया गया जो उसकी महत्ता को दर्शाता है। वैदिक काल से ही सनातन धर्म में क्षिति, जल, पावक गगन, समीर जैसे पांचों तत्वों का वर्णन किया गया है। इन पांचों की परिपूर्णतः से ही जगत एवं जीव का अस्वित्तव कायम है, यदि इनमें किसी भी एक तत्व की कमी हो जाएगी तो प्रकृति में असंतुलन होना



अवश्य संभावी है। यदि यह कहा जाए कि हमारी भारतीय पूजा-पद्धति एवं संस्कृति में विश्व की किसी भी पूजा पद्धति या संस्कृति से अधिक मात्रा में पर्यावरण एवं प्रकृति संरक्षण की महत्ता पर जोर दिया गया है तो यह बात कतई अतिशयोक्ति नहीं कही जा सकती। यही कारण है कि सनातन धर्म के अलावा भारत में जन्में या प्रादूर्भूत हुए बुद्ध, जैन एवं सिख धर्म भी सत्य, अहिंसा, शांति के साथ-साथ "सर्वधर्म समभाव" का नारा देते हुए समस्त जगत, जीव एवं मानव जातियों के कल्याण की कामना करते हैं। विश्व शांति की कामना करते हैं।



कल, आज-कल



नारायण सहाय,
प्रबंधक

हम सबने अक्सर पढ़ा और सुना है कि हमारे देवतागण जैसे कि इन्द्र, कुबेर, वरुण आदि ऐरावत या पुष्पक से चलते थे, जिसे बाद में रावण ने छीन लिया था। इसी प्रकार विष्णु, शिव और ब्रह्मा आदि भी गरुण, नंदी एवं हंस जैसे वाहनों से चलते थे। यदि हम इस बात को सच माने कि वे सब उड़कर चलते थे, तो इसमें कोई आश्चर्य नहीं होना चाहिए, वास्तव में यह सभी वायुयान ही थे और इन सबके अपने-अपने नाम रहे होंगे। भारत को पौराणिक विवरण यह दर्शाता है कि प्राचीनकाल में भारत विज्ञान की चरम प्रगति पर था। वह ऐसा विज्ञान था जो हमारी कल्पना से बाहर का है। तब हम क्यों न माने कि हमारा देश अंतरिक्ष विज्ञान में भी अग्रणी था। आज यदि विज्ञान से बरबस कराई जा सकती है तो हम क्यों न माने कि हमारे देवता एवं अवतार पुरुषों ने बाणों से वर्षा, तूफान या अग्नि को न उत्पन्न किया हो। भारत ने पहले भी विज्ञान में चरम प्रगति पाई थी और आज भी मंगल मिशन के साथ यह जता दिया है कि स्वदेशी प्रयासों से अंतरिक्ष विज्ञान के चरम स्वरूप को प्राप्त कर सकते हैं।

लगभग पचास साल पहले केरल के थुंबा अंतरिक्ष केन्द्र से भारत ने पहला रॉकेट दागा था और आज भारत का मंगलयान भारत की महत्वाकांक्षा का नया प्रतीक है। आधुनिक भारत की जो भी सफलता की कहानियाँ हैं, उनमें भारतीय अंतरिक्ष कार्यक्रम का नाम बहुत ऊपर है। मंगलयान को छोड़ दें, तो भी इसरो के नाम कई कामयाबियाँ हैं। हमारा चंद्रयान चंद्रमा तक पहुंचने में कामयाब हो चुका है और अंतरिक्ष में उपग्रह स्थापित करने में भारत एक प्रमुख देश की हैसियत पा चुका है। कुछ बड़ी नाकामियाँ भी हैं। इनमें सबसे बड़ी नाकामी जीएसएलवी का परीक्षण नाकाम होना है। जीएसएलवी रॉकेट अंतरिक्ष में हमारी पहुंच का दायरा बढ़ा देता है, क्योंकि उससे अंतरिक्ष यान ज्यादा दूरी तक आसानी से भेजा जा सकता है। मंगलयान के बारे में भी पहले यही सोचा गया था कि इसे जीएसएलवी के जरिये अंतरिक्ष में भेजा जाएगा। लेकिन जीएसएलवी के परीक्षण लगातार नाकाम हुए, इसलिए यह तय किया गया कि इसे पीएसएलवी के जरिये ही भेजा जाए, जिसमें इसरो को महारत हासिल है। इसीलिए मंगलयान कई दिनों तक धरती के चक्कर लगातार काट रहा और इस बीच उसके रॉकेट की शक्ति बढ़ाई जाती रही, ताकि वह धरती की कक्षा से बाहर निकलने लायक शक्ति जुटा सके। लेकिन अंतरिक्ष कार्यक्रमों में नाकामियों की जो दर है, उसके मुकाबले इसरो का रिकार्ड बहुत अच्छा है। यह भी याद रखन चाहिए कि इसरो ने दूसरे देशों से कुछ मदद हासिल की है, पर भारत का अंतरिक्ष कार्यक्रम बहुत हद तक स्वदेशी है। इसके अलावा, भारत का अंतरिक्ष कार्यक्रम बहुत किफायती है। इसका अंदाज इस बात से लग सकता है कि 'नासा' का जो 'मैवन' दो दिन पहले मंगल की कक्षा में दाखिला हुआ है, उस पर मंगलयान से लगभग दस गुना खर्च आया है। अपनी ढेर सारी कामयाबियों और कुछ नाकामियों के साथ भारत के अंतरिक्ष कार्यक्रम को विज्ञान के क्षेत्र में भारत का आदर्श कार्यक्रम होना चाहिए। अगर भारतीय विज्ञान के विराट व्यक्तित्व सर चंद्रशेखर वेंकटरमन जीवित होते, तो शायद वह भी इस कार्यक्रम से खुश

होते। लेकिन विज्ञान के अन्य क्षेत्रों में जो स्थिति है, खासकर विज्ञान की शिक्षा की जो गत है, उससे रमन तो क्या, कोई वैज्ञानिक खुश नहीं हो सकता। इसरो की कामयाबी बताती है कि भारतीय वैज्ञानिक कामयाबी पा सकते हैं और साधनों की कमी को अपने हुनर और अपनी कल्पनाशीलता से पूरा कर सकते हैं। लेकिन यह प्रवृत्ति हमें विज्ञान के दूसरे क्षेत्रों में क्यों नहीं दिखाई देती, खासकर उन क्षेत्रों में, जिनका सीधा रिश्ता हमारे समाज की तरक्की और नागरिकों की बेहतरी से है, मसलन स्वास्थ्य और खेती?

स्वास्थ्य व्यवस्था और खेती की भारत में जो हालत है, उसे देखकर यह याद करना पड़ता है कि इनका रिश्ता सिर्फ व्यापार से नहीं, विज्ञान से भी है। इस वक्त भारत कई स्वास्थ्य मानकों पर बांग्लादेश, श्रीलंका और यहां तक पाकिस्तान से भी पीछे है, जबकि ये तमाम देश पिछले लंबे दौर से राजनीतिक उथल-पुथल और हिंसा का शिकार रहे हैं। आर्थिक संसाधनों के मामले में भी ये देश भारत से मीलों पीछे हैं। भारत में जो लोग गरीबी की रेखा से जरा-सा ऊपर हैं, उनके गरीबी में पुनः धकेले जाने की एक बड़ी वजह स्वास्थ्य सुविधाओं का महंगा और अप्राप्य होना है। अपनी स्वास्थ्य समस्याएं हल करने में हमने वैज्ञानिक समझ का सहारा नहीं लिया। इसका एक उदाहरण यह भी है कि भारत में लगभग 80 प्रतिशत स्वास्थ्य सेवाएं निजी क्षेत्र में हैं, और दूसरा उदाहरण यह है कि चिकित्सा शोध के मामले में भारतीयों का रिकार्ड जीरो से कुछ ही ऊपर होगा।

यही स्थिति खेती की है। सीवी रमन चाहते थे कि भारतीय वैज्ञानिक भारत की समस्याएं हल करें, इसके लिए वह खेती से सीधे जुड़े क्षेत्रों पर शोध करने के हिमायती थे। भारत में हरित क्रांति के बाद खेती के क्षेत्र में कोई बड़ा हस्तक्षेप नहीं दिखता, न ही बदलती परिस्थितियों में भारतीय खेती की बेहतरी के लिए कोई वैज्ञानिक नजरिया दिखता है। सिंचाई और जल प्रबंधन में कोई सूझबूझ नहीं दिखती। ऐसी नाकामियों के उदाहरण तमाम क्षेत्रों में



देखे जा सकते हैं, जिनमें विज्ञान का इस्तेमाल होता है। यह इसलिए भी अजीब है, क्योंकि कई क्षेत्रों में भारत ने शोध और विकास का काम बहुत पहले शुरू कर दिया था। जिन देशों ने हमसे बहुत बाद में शुरुआत की, वे हमसे बहुत आगे निकल गए। एक बड़ा उदाहरण रक्षा अनुसंधान का है, जहां हम अपनी तमाम रक्षा जरूरतों के लिए अब भी आयात पर निर्भर हैं।

यह सवाल भी उठता है कि ऐसा क्यों है कि भारत में रहकर विज्ञान का नोबेल पुरस्कार जीतने वाले एकमात्र वैज्ञानिक सीवी रमन को यह पुरस्कार आजादी



के पहले मिला था। आजादी के बाद जिन भारतीय वैज्ञानिकों को यह पुरस्कार मिला, उन सबने विदेशों में रहकर अपना काम किया। जगदीश चंद्र बोस और सत्येन बोस जैसे वैज्ञानिक, जो नोबेल पुरस्कार के पूरे-पूरे हकदार थे, वे भी आजादी के पहले ही हुए। क्या इसका अर्थ है कि आजादी के पहले भारत में विज्ञान के क्षेत्र में काम करने के लिए बेहतर परिस्थितियां थीं, जो आजादी के बाद बदतर हो गईं? एक बड़ी वजह शायद यह थी कि आजादी के पहले हुए ये लोग गहरे अर्थों में देशभक्त थे। नारे लगाने वाले नहीं, बल्कि ऐसे देशभक्त, जो विज्ञान की तरक्की को अपने देश की बेहतरी और सम्मान से जोड़ते थे। तब हम अंग्रेजों के गुलाम थे, इसलिए यह भावना भी बहुत तीव्र थी। इन लोगों में यह साबित करने की तीव्र इच्छा थी कि हम दुनिया से पीछे नहीं हैं। आजादी के बाद इस तरह की गहरी, विनम्र और रचनात्मक देशभक्ति की जगह नारे लगाने वाली देशभक्ति ने ले ली और इस तरह विज्ञान का भारतीय जमीन से रिश्ता टूट गया। इससे एक नुकसान यह भी हुआ कि हमने विज्ञान को पूरी तरह पश्चिमी चीज मान लिया और यह मान लिया कि विज्ञान के क्षेत्र में जो कुछ भी होना है, वह पश्चिम में ही होगा, हम उसकी नकल भर कर सकते हैं।

मंगलयान के बाद भी उम्र देशभक्ति की एक लहर आनी है, या कि वह शुरू हो चुकी है। चीन का मंगल पर यान भेजने का एक प्रयास नाकाम हो चुका है, इसलिए हम इसे चीन पर अपनी जीत की तरह देखेंगे। जैसे खेलों में हम पाकिस्तान ग्रंथि से पीड़ित हैं, वैसे ही चीन के प्रति जबर्दस्त आकर्षण और उतनी ही जबर्दस्त आशंका भारतीयों में है। लेकिन हमारी कामयाबी चीन के खिलाफ नहीं है, यह पाकिस्तान के खिलाफ भी नहीं है और न पश्चिम के खिलाफ है, वह हमारी अपनी जड़ता के खिलाफ है। भारत के लिए चुनौती बाहर से नहीं, अपने से ही है। इसरो की कामयाबियों पर खुद होते हुए अगर हम अपने आप से यह सवाल पूछ सकें कि दूसरे क्षेत्रों में ऐसा क्यों नहीं हो सकता, तो हम इस चुनौती की आंखों में आंखें डालकर देखना शुरू कर सकते हैं।

आज भारत सरकार सिर्फ वैज्ञानिकों को ही प्रोत्साहित करने की दिशा में प्रयास नहीं कर रही, बल्कि वह नई पीढ़ी तथा बच्चों के मन में भी विज्ञान एवं अंतरिक्ष विज्ञान के प्रति रुचि पैदा करने के लिए अनेक प्रोत्साहन कार्यक्रम प्रारंभ कर रही है यूं तो अपने देश में पहले भी कई प्रोत्साहन कार्यक्रम थे, परंतु बच्चों एवं युवाओं को उनसे जोड़ने के लिए तीव्र एवं प्रगाढ़ प्रयास नहीं किए गए। यह बात हम सब को जाननी एवं समझनी आवश्यक है कि हमें प्रत्येक चीज को देश एवं समाज के हित के साथ जोड़कर आगे बढ़ानी होगी। इसी प्रकार यदि हम प्रत्येक प्रयास एवं कर्तव्य को देश प्रेम एवं देश भक्ति के साथ जोड़ कर आगे बढ़ाएं तो हमारी युवा पीढ़ी में नया जोश पैदा होगा और हम देश प्रेम के भाव से ही भ्रष्टाचार एवं दुराचरण चरित्रपतन जैसी समस्याओं से भी निजात पाने में मदद मिलेगी। यह देश प्रेम ही था जिसने विश्व युद्ध द्वितीय के बाद पूरी तरह से तबाह होने के बाद तेजी से विकसित होने एवं विश्व मानचित्र में सर्वोच्चता पर खड़े होने में मदद की थी। यही बात चीन पर भी लागू होती है, जो देश छठवें, सातवें दशक में अज्ञान एवं अंधकार तथा अफीम के नशे के गर्त में डूबा था, वही देश प्रेम की भावना से आज विश्व की प्रथम शक्ति बनने की ओर है। हम सब भारतवासी यदि मां भारती के प्रति समर्पित होकर यह बीड़ा उठा लें कि हम जहां हैं, वहीं से हर काम अपने देश और समाज की प्रगति के लिए करेंगे तो वह दिन दूर नहीं होगा जब हम विश्व पटल के सर्वोच्च शिखर पर होंगे। मंगल मिशन हमें यही संदेश देता है कि हम कल आगे थे और कल भी आगे होंगे।

चिंताओं का बोझ

एक फकीर एक ट्रेन में सवार हुआ और थर्ड क्लास के डिब्बे में जाकर बैठा। अपनी पेटी सिर पर रख ली, पेटी के ऊपर अपना बिस्तर रख लिया, बिस्तर के ऊपर अपना छाता रख रहा था। पर पास-पड़ोस के लोगों ने कहा, यह क्या कर रहे हो? नीचे रख दो सामान, आराम से बैठो। उस फकीर ने कहा कि मैं सोचता हूँ, टिकिट तो सिर्फ मैंने अपने लिए ली है। इसलिए ट्रेन पर ज्यादा वजन डालना अनैतिक होगा। इसलिए वजन अपने सिर पर रख रहा हूँ। उन लोगों ने कहा, पागल हो गए हैं। आपके सिर पर रखिए तो भी ट्रेन पर तो वजन पड़ेगा ही। इसलिए नाहक अपने सिर को और वजन क्यों दे रहे हैं? नीचे रखिए और आप आराम से बैठिए। ट्रेन तो वजन ढोएगी ही—चाहे सिर पर रखिए और चाहे नीचे रखिए। उस फकीर ने कहा कि मैं तो समझता था अज्ञानी होंगे इस कमरे में, यहां तो ज्ञानी हैं। नीचे वजन रखा। उन लोगों ने कहा, हम समझे नहीं। तो उस फकीर ने कहा कि जिंदगी में मैंने सभी लोगों को अपने सिर पर वजन रखे देखा, जो वजन परमात्मा पर छोड़ा जा सकता था। मैंने हर आदमी को सारी चिंताओं का बोझ अपने सिर पर लिए हुए चलते देखा, पहाड़ के पहाड़, जो कि चांद-तारों पर छोड़े जा सकते हैं, जिन्हें कि हवाएं उठा लेतीं। लेकिन हर आदमी को मैंने इतनी उदासी और परेशानी से भरा देखा, जो कि फूल उठा लेते, हवा के झोंके उठा लेते, चांद-तारे उठा लेते, सारा जगत उठा लेता। लेकिन हर आदमी अपना बोझ लिए चल रहा है। तो मैंने सोचा कि इस डिब्बे में कहीं आप लोग नाराज न हों, तो मैंने सामान ऊपर रखा था। लेकिन आप तो ज्ञानी हैं। पर उन्होंने कहा कि इस डिब्बे में ही हम ज्ञानी हैं, जहां तक जिंदगी की गाड़ी का सवाल है, वहां तो हम अपना बोझ अपने सिर पर ही रखते हैं। उन्होंने कहा कि अपने सिर पर रखना ही पड़ेगा, क्योंकि हमारे अतिरिक्त और हम किसके सिर पर रखेंगे? योग कहता है, किसी के सिर पर बोझ नहीं रखना है। बोझ किसी के सिर पर है ही नहीं। सिर्फ उन्हीं के सिर बोझिल हो जाते हैं जो इस सत्य को नहीं जान पाते कि जीवन संयुक्त है, जीवन इकट्ठा है। श्वास हवाओं पर निर्भर है। प्राण की गरमी तारों पर, सूर्यो पर निर्भर है। जीवन का होना सृष्टि के क्रम पर निर्भर है। मृत्यु का होना जन्म का दूसरा पहलू है। यह सब हो रहा है। हम इस सबको सिर पर उठा कर रख लेते हैं। योग कहता है, अगर हम इसे देख पाएं कि हम एक बड़े जाल के बीच एक छोटे से तंतु से ज्यादा नहीं हैं।

‘आशो’



मीडिया की प्राथमिकताएं



संजीव कुमार सिंह,
उप प्रबंधक

पिछले कुछ दिनों से मीडिया के सभी स्वरूपों में हर तरु एक ही शोर है। जम्मू-कश्मीर की बाढ़ की तस्वीरें, सेना की भूमिका, आपदा प्रबंधन, जल, वन और पहाड़ से जुड़ी समस्याएं अभी देशव्यापी बहस का मुद्दा बनी हुई हैं। यही हाल पिछले वर्ष केदार घाटी में हुई भयावह त्रासदी के समय भी था। लेकिन थोड़ा विचार कीजिए, क्या आपने इससे पहले कभी जम्मू-कश्मीर में जल, जंगल, जमीन, पहाड़ के संकट तथा उस कारण आम लोगों के जीवन में पैदा होने वाली मुसीबतों पर कोई बहस सुनी है? आज का सच यही है कि देश के वास्तविक मुद्दे विमर्श और चिंतन से लगभग गायब हैं। सभी सार्वजनिक मंचों पर ऐसे मुद्दे छापे हुए हैं, जिनका आम जनता या धरातल से ज्यादा सरोकार नहीं है। इस कारण आम लोगों में मीडियाकर्मियों और तथाकथित बुद्धिजीवियों कार्यकर्ताओं के प्रति खीझ और असम्मान का भाव गहरा होता जा रहा है। किसी भी देश के लिए यह चिंता की बात होनी चाहिए। अगर आप वास्तविक मुद्दों को राष्ट्रीय विमर्श से दूर रखेंगे और गैरजरूरी बातों में देश को उलझाए रखेंगे तो इसका परिणाम क्या होगा? वे सारी समस्याएं बढ़ती जाएंगी, विकराल होती जाएंगी और एक दिन जब ये भीषण त्रासदियों के रूप में सामने आएंगी तो हम इनके बारे में अपनी-अपनी सुविधा वाली जगहों पर क्रांतिवीर बनकर बहस करते नजर आएंगे। आज कोई भी मीडिया का स्वरूप गंभीर विषयों को उठाने के लिए अध्ययन एवं अनुसंधान नहीं करता। बल्कि सभी एक साथ काग सभा की तरह एक ही विषय को उठाकर कांव-कांव कर रहे होते हैं। कुछ मीडिया हाउस तो कुछ राजनीतिक पार्टियों के लिए परोक्ष रूप से हिमायत कर रहे होते हैं। यहां तक कि उनके द्वारा उठाए गए बिंदु भी एक तरफा या पूर्वाग्रही होते हैं।

इस बेफिक्री के उदाहरण देश भर में देखे जा सकते हैं। बिहार में संपूर्ण क्रांति से जुड़े एक सम्मेलन में काफी संख्या में किसान आए थे। वे कहने लगे कि हमने इतनी अच्छी फसलें पैदा कीं, लेकिन बोरा नहीं होने से सारा अनाज चूहे खा रहे हैं, रखने की जगह ही नहीं है। किसानों के लिए परंपरागत तरीके से अपना अनाज रखने की यह समस्या देशव्यापी है। पश्चिम बंगाल की जूट मिलें बोरा बनाती थीं तो किसानों को पर्याप्त मात्रा में बोरा उपलब्ध रहा करता था। उस दौरान किसी ने शायद ही सोचा हो एक दिन बोरे का भी संकट आ जाएगा। पैकेजिंग की हजारों कंपनियां खुल गई हैं, पर बोरा बनाने वाले कारखाने बंद हो रहे हैं। इसकी जगह प्लास्टिक के बोरे आ चुके हैं। इतनी बड़ी समस्या पर कोई बहस नहीं। अगर बहस होती तो पता चलता कि जूट की खेती क्यों कम हो गई, जूट मिलें दुर्दशा की शिकार क्यों हुई हैं, क्या बांग्लादेश से जूट मैटीरियल

हमारे यहां आना चाहिए.....आदि। या फिर किसानों को फिर से जूट की खेती से कैसे जोड़कर फायदा पहुंचाया जा सकता है।

जब कोई किसान आत्महत्या कर ले तो वह खबर बन जाती है, पर किसानों की समस्याएं मुख्य बहस या समाचार का केन्द्र बिंदु कभी नहीं बनतीं। गांव और किसान हर बहस, हर समाचार से गायब हैं। क्या आपने हाल के वर्षों में ऊंच-नीच और छुआछूत को खत्म करने पर कोई जोरदार बहस सुनी है? कहीं जातीय या महजबी संघर्ष हो जाए, कुछ लोग मारे जाएं तो वह घटना जरूर खबर बनती है, मीडिया एवं कर्ताओं का सारा ध्यान एक दूसरे पर दोषारोपण करने तक सीमित रह जाता है। लेकिन वे स्थितियां हमारी चर्चा के केन्द्र में कभी नहीं आतीं जो ऐसी घटनाओं के लिए जिम्मेदार हैं। राजनीति में भी विचाराधारा, सिद्धांत, आदर्श आदि पर बातचीत बंद हो चुकी है। राजनीति का स्तर क्या हो, नेता किसे होना चाहिए, नेतृत्व का अर्थ क्या है, जैसे गंभीर सवाल भी हमारी चर्चा के केन्द्र में नहीं आते। इसका परिणाम यह है कि जिन लोगों ने जनता के बीच कभी काम नहीं किया, जिन्हें जनता जानती तक नहीं थी, वे लोग राजनीति के हीरो बन जाए। नेता की जगह हमारी राजनीति में बयानबाजों एवं प्रवक्ताओं की फौज खड़ी हो गई है। उनका एक ही मकसद है किसी तरह टीवी पर आना। जनता के बीच जाकर काम करने और फिर लोकप्रियता पाने का रास्ता काफी कठिन है। उसमें ख्याति और प्राप्ति की निश्चित संभावना नहीं है। ऐसे में भला किसी को जनता के बीच काम करने की प्रेरणा कहां से मिलेगी? स्वाभाविक रूप से ज्यादातर पार्टियों में जनाधारविहीन नेताओं की संख्या बढ़ गई है और वे नीति निर्माण पर भी हावी हैं। जो एनजीओ चलाने वाले केवल फंड लेकर काम करते हैं, उनको हमने समाजसेवी और विशेषज्ञ बना दिया, जो सच्चे समाजसेवी और विशेषज्ञ हैं, वे पूरी तरह उपेक्षित हैं।

एक समय था जब न इतने चैनल थे, न अखबार। बावजूद इसके, लोग आराम से समाचार सुनते थे और देश की घटनाओं का ठीक-ठाक विवरण उन्हें



मिल जाता था। आज फास्ट खबरों की बमबारी में संपूर्ण समाचार मिलना मुश्किल है। अखबारों ने अपना इतना स्थानीयकरण कर दिया है कि एक जिले की खबर दूसरे जिले तो क्या, दो पड़ोसी बस्तियों में एक की खबर दूसरी तक नहीं पहुंचती। हालत यह है कि किसी जिले में कोई तगड़ा आंदोलन चल रहा हो, लोग जीने-मरने की लड़ाई में पूरी शिद्दत से जुटे हों, फिर भी आसपास के लोगों को इसके बारे में कोई जानकारी नहीं होती। ऐसे में आंदोलन जोश-खरोश से शुरू होते हैं, पर जल्द ही उनकी जान निकल जाती है। प्रश्न है कि आखिर रास्ता क्या है? पुराने आदर्श



और महान पूर्वजों के उदाहरण मौजूदा माहौल में असर खो चुके हैं। इसलिए घूमफिर कर बात आम जनता की ओर ही आती है। जनता का दबाव ही इस स्थिति को बदल सकता है। हालांकि समस्या का एक पहलू यह भी है कि मीडिया से लोगों की अपेक्षा छिछले मनोरंजन तक सिमट गई है। बावजूद इसके, विवेकशील लोगों की पहल के जरिए जनता के विवेक को जगाने की कोशिश हमें हल की ओर ले जा सकती है। आज कल के आंदोलन भी मुख्यतः टी.वी. या मीडिया अभिमुख होते हैं। हर आंदोलन की भीड़ टी.वी. कैमरों को देखते ही बौखाला से जाते हैं और भीड़ के बीच खुद को उग्र दिखाने की होड़ मच जाती है। कई बार देखने में आया है कि आंदोलन या सामाजिक संघर्ष के अभियान शांतिपूर्ण ढंग से चल रहे होते हैं और न्यूज चैनल के कैमरों को देखते हुए हिंसक रूप ले लेते हैं। यहां पर इन चैनलों की जिम्मेदारी बनती है कि वे ऐसे अंशों को न दिखाएं, तो धीरे-धीरे इस प्रवृत्ति में कमी आ सकती है। लेकिन आप कल में चैनल मूल विषय को पीछे छोड़कर ऐसी गैर जिम्मेदारान एवं भड़काऊ फुटेज को दिखाने में अधिक रूचि दिखाते हैं।

मीडिया पर अक्सर यह दोष भी लगता रहा है कि वे संतुलित एवं तटस्थ होकर समाचारों को प्रस्तुत नहीं करते बल्कि वे एक पूर्वाग्रह से ग्रस्त होते हैं। यह आरोप चाहे पूरी तरह से शत-प्रतिशत सच न हों, पर इन्हें निराधार भी कहा नहीं जा सकता और न ही इस सच को नकारा जा सकता है। अक्सर देखने में आया है कि न्यूज चैनलों के एंकर जहां एक पक्ष को बोलने का पूरा मौका देते हैं, वही दूसरे पक्ष को बीच भी रोक देते हैं और पूरी बात नहीं कहने देते। यहां पर यह साफ पता चलता है कि पूरी बहस एक पक्षीय है और जब बहसकर्ता एंकर से सहमति नहीं दिखाता वो उसकी बात बीच में ही काट दी जाती है। इसी प्रकार कुछ मीडिया हाऊस खुलकर सत्ता पक्ष या प्रतिपक्ष का विरोध करते हैं या समर्थन और अपनी सुविधानुसार रिपोर्ट बनाने एवं पेश करते हैं। उदाहरण के तौर पर पिछले चार महीनों से हरी सब्जियां पिछले कई वर्षों के मुकाबले सस्ती चल रही है लेकिन इन चैनलों का कैमरा आलू और प्याज की कीमत पर टिका रहता है। उन्हें चार माह में तीन बार घंटे पेट्रोल के दाम नहीं दिखते, उन्हें वर्षा की कमी और सब्जियों की घटती उपज के बावजूद स्थिर कीमतें नहीं दिखती। यह तो एक बानगी भर है। मीडिया के लिए सिद्धांतहीन एवं स्वार्थपूर्ण राजनीतिक गठजोड़ बहस का मुद्दा नहीं बनते, भले ही उसमें राजनीतिक अधोपतन दिखता हो।

आज समय आ गया है कि मीडिया तटस्थ भाव से काम करें। समाज, देश एवं दूर-दराज के क्षेत्रों के उन अनछुए पक्षों पर प्रकाश डाले, जहां सरकार एवं उसकी सेवाएं नहीं पहुंच रही या जहां शिक्षा, विकास एवं प्रगति का उजाला नहीं पहुंचा है। मीडिया को अपनी बहस ऐसे मुद्दों पर केन्द्रित करनी चाहिए, जो देश के विकास, प्रगति, जातीय समरसता लाने एवं असमानता को दूर करने में बाधा पैदा करते हों। मीडिया को उन दूर-दराज के हीरोज (अगुवाओं) की कार्यशैली एवं उनके कठिन प्रयासों पर प्रकाश डालना चाहिए ताकि उनके काम देश की मुख्य धारा का हिस्सा बने और अधिक से अधिक लोग लाभ उठा सकें। आप मीडिया को अभियानों का आलोचक नहीं समीक्षक एवं समन्वयक बनना चाहिए, उनकी सिर्फ कमियां ही नहीं बल्कि सकारात्मक पहलों एवं पक्षों को भी

दर्शाना चाहिए। मीडिया को यह सदैव ध्यान रखना चाहिए कि देश, समाज एवं सरकार के प्रति उसकी क्या भूमिका हो, उसकी सही एवं तथ्य पूरक प्राथमिकताएं क्या होनी चाहिए। उद्देश्यहीन या भटका हुआ मीडिया न तो देश हित में ठीक है और न ही समाज व समुदाय के हित में।



मिट्टी की पूजा



संजय

एक बार एक विदेशी मेहमान देश के प्रथम राष्ट्रपति डॉ० राजेन्द्र प्रसाद से मिलने पहुंचा। डॉ० प्रसाद के सेवक ने आगंतुक को बताया कि राजेन्द्र बाबू अभी पूजा कर रहे हैं, इसलिए वह कृपया प्रतीक्षा करें। विदेशी मेहमान कुछ देर बैठा रहा, फिर उसके भीतर उत्सुकता जागी। वह देखना चाहता था कि आखिर राजेन्द्र बाबू किस तरह पूजा कर रहे हैं, हालांकि वह अंदर जाने से कतरा रहा था। लेकिन उससे नहीं रहा गया। आखिरकार वह वहां पहुंच ही गया। वहां जाकर वह राजेन्द्र बाबू को पूजा करते हुए देखने लगा। राजेन्द्र बाबू ने मिट्टी की एक डली के सामने श्रद्धापूर्वक हाथ जोड़े और सिर झुकाया। यह देखकर उसके आश्चर्य का ठिकाना न रहा। राजेन्द्र बाबू पूजा से उठे तो सामने विदेशी आगंतुक को पाकर प्रसन्न हो गए और उसे बैठक में ले गए। वह आगंतुक के चेहरे के भाव को देखकर ही समझ गए कि उसके भीतर उनकी पूजा को लेकर कोई न कोई सवाल उठ रहा है। बैठक में पहुंचते ही सबसे पहले आगंतुक ने उनसे मिट्टी की डली को पूजने का कारण पूछा और इसके पीछे के दर्शन को स्पष्ट करने को कहा। राजेन्द्र बाबू उसकी जिज्ञासा मिटाते हुए बोले, 'मिट्टी की यह डली भारत की पवित्र माटी की प्रतीक है। हमारे यहां मिट्टी को ईश्वर की नियामत माना गया है। इस पवित्र मिट्टी व नदियों के जल के माध्यम से ही हम असंख्य उपयोगी द्रव्य प्राप्त करते हैं, इसलिए हम भारतीय प्रकृति के कण-कण में ईश्वर के दर्शन करते हैं। भारतीय संस्कृति के अनुसार मानव, पशु-पक्षी, कंकड़-पत्थर सब में ईश्वर विराजमान है। यही भारतीय संस्कृति की विशेषता है।'



गुरु मंत्र



सौरभ सील,
सहायक महाप्रबंधक

स्वामी विवेकानन्द ने जब शिकागो में आयोजित धर्म संसद में 'सर्वधर्म समभाव' एवं "वसुधैव कुटुंबकम्" की भावना को आगे रखते हुए अपना व्याख्यान दिया तो सारा विश्व न केवल हस्प्रभ रह गया बल्कि इसे यह मानना पड़ा कि वास्तव में भारत के धर्म एवं संस्कृति में विश्व गुरु बनने की क्षमता है। उस दिन से पहले तक जो लोग भारत को अज्ञान के अंधकार में डूबा देश मानते थे, उनकी सोच में भी बदलाव आया।

स्वामी विवेकानन्द ने सत्य की खोज में जो बातें कहीं हैं, वे हर व्यक्ति के जीवन में अब भी महत्व रखती हैं। हालात से डरकर भागना स्वामीजी ने कभी नहीं सीखा। वे हमेशा ही हालात का मुकाबला करने की प्रेरणा देते थे। विषम से विषम और दुरुह से दुरुह परिस्थिति में भी व्यक्ति को अपना सम्मान नहीं खोना चाहिए। उनका मानना था कि हर व्यक्ति जो ब्रह्म का प्रतीक है, अद्भूत, अलौकिक शक्तियों का स्वामी है। अगर कोई व्यक्ति ठान ले तो कितने भी खराब हालात क्यों न हों, उन पर नियन्त्रण रख सकता है और हालात को अपने पक्ष में ढाल सकता है। अलग-अलग मौके पर स्वामी विवेकानन्द ने अपने शिष्यों को भी ऐसे अनेक मंत्र दिये जो उन्हें पराजय के भय से दूर होकर आगे बढ़ने की प्रेरणा देते रहे। ऐसे ही कुछ गुण यहां पर प्रस्तुत हैं —

गुण - 1 "हे सखे। तुम क्यों रो रहे हो? विश्व की हर एक शक्ति तो तुम्हीं में है। भगवन आप खुद अपने आप को विकसित तो करो। देखो, तीनों लोक तुम्हारे पैरों के नीचे हैं। तुम्हारे पास आत्मा की प्रबल शक्ति है, इसलिए डरो मत। तुम्हारा नाश नहीं हो सकता। तुम्हें कोई भी नष्ट नहीं कर सकता, इसलिए बिलकुल भी डरो मत। इस संसार से, इस भवसागर से पार उतरने का एक ही उपाय है और वह उपाय यही है कि जिस पर तुम चल रहे हो, उसी पथ पर चलकर संसार के सभी लोग भवसागर को पार करते हैं। यही श्रेष्ठतम पथ है। यही श्रेष्ठ पथ मैं तुम्हें दिखाता हूँ।"

गुण - 2 "यदि तुम लोग कमर कसकर अपने लक्ष्य को पाने के लिए जुट जाओ तो छोटे-मोटे की तो बात ही क्या, बड़े से बड़े दिग्गज बह जाएंगे। तुम केवल एक हुंकार मात्र से इस दुनिया को पलटने का सामर्थ्य रखते हो। आप जो भी कर रहे हो, यह तो उसका केवल प्रारम्भ है। इसलिए किसी क साथ विवाद नहीं करो। हिल मिलकर रहना सर्वोत्तम है। यह दुनिया भयावह है और किसी पर भी विश्वास नहीं है, ऐसा सोचना उचित नहीं। डरने का भी कोई कारण नहीं है। आप जिस दिशा में जा रहे हो, इस दृढ़ संकल्प के साथ जाओ कि मां काली मेरे साथ है। इस संकल्प मात्र से

ऐसे कार्य होंगे कि तुम खुद चकित हो जाओगे। फिर भय किस बात का? किसका भय? वज्र जैसा हृदय बनाओ और अपने कार्य में जुट जाओ।"

गुण - 3 अपने लक्ष्य की ओर हमेशा बढ़ते चलो। तुमने बहादुरी का काम किया है। शाबाश! आगे बढ़ते ही चलो। हिचकने वाले पीछे रह जाएंगे और अगर तुम बिना हिचके आगे बढ़े तो एक ही छलांग में सब के आगे पहुंच जाओगे। जो केवल अपने हित में लगे हुए हैं, वे न तो अपना हित कर पाएंगे और न ही दूसरे का। इसलिए ऐसा शोरगुल मचाओ कि आपकी आवाज दुनिया के कोने-कोने में फैल जाए। कुछ लोग ऐसे हैं, जिन्हें अपना काम करने के लिए तो समय का अभाव रहता है लेकिन दूसरों की त्रुटियां खोजने में इनके पास समय की कोई कमी नहीं होती। ऐसे लोगों की परवाह किए बिना अपने लक्ष्य को पाने में जुट जाओ। अपनी शक्ति के अनुसार आगे बढ़ो। 'नहीं है, नहीं है' कहने से तो सांप का विष भी नहीं रहता। नहीं, नहीं कहने से तो नहीं हो जाना पड़ेगा, इसलिए मैं कहता हूँ कि आगे बढ़ो और तूफान मचा दो।

गुण - 4 यदि तुम अपनी अंतिम सांस भी ले रहे हो तो भी किसी से न डरना। जब तक ईश्वर की कृपा हम पर है, इस धरती पर हमारी उपेक्षा कौन कर सकता है? इसलिए किसी भी बात से तुम उत्साहहीन नहीं होना। इसलिए लोग तुम्हारी स्तुति करें या निन्दा, जय-जयकार के नारे



लगाए या हाहाकार के, तुम पर लक्ष्मी की कृपा बनी हो या नहीं बने, तुम्हारा देहान्त आज होने वाला हो या एक युग के बाद, कभी भी किसी भी अवस्था में अपने न्याय के पद से विचलित नहीं होना।

गुण - 5 क्या इस तरह का दिन कभी आएगा कि परोपकार के लिए जान चली जाएगी? यह दुनिया कोई बच्चों का खिलवाड़ नहीं। बड़े आदमी वे हैं जो अपने हृदय से दूसरों का रास्ता तैयार करते हैं। यही हमेशा-हमेशा से होता आया है। अपना पूरा जीवन समर्पित करके कोई व्यक्ति सेतु का निर्माण करता है और हजारों आदमी उस सेतु के ऊपर से नदी पार करते हैं।



गुण – 6 प्रेम की ही विजय होती है। अधीर होने से काम नहीं चलेगा। उहरो, धीरज रखो, विजय अवश्यम्भावी है। हो सकता है कि आपको सार्वजनिक हित की रक्षा के लिए अपना सब कुछ छोड़ना पड़े। बड़े से बड़े जहाज भी छोटी-छोटी त्रुटियां करने पर डूब जाते हैं, इसलिए सावधान रहना। कभी भी दूसरों के अत्यन्त छोटे अधिकारों में भी हस्तक्षेप नहीं करना। दूसरों के धर्म से कभी भी द्वेष नहीं करना। हम सब लोग सब धर्मों को सत्य समझते हैं और उन धर्मों का सत्य भी समझते हैं इसलिए पूरी शक्ति से और धीरज से अपने लक्ष्य की ओर बढ़े चलो।

गुण – 7 तुम्हारे लिए नीतिपरायणता और साहस को छोड़कर औ कोई धर्म नहीं है। कोई भी धार्मिक मत-मतांतर तुम्हारे लिए नहीं है। पूर्ण नीतिपरायण और साहसी बनो। प्राणों के लिए भी कभी न डरो। कायर लोग ही पापाचरण करते हैं, वीर पुरुष कभी भी पापानुष्ठान नहीं करते। वीर पुरुष तो कभी अपने मन में भी पाप का विचार नहीं लाते, इसलिए प्राणिमात्र से प्रेम करने का प्रयास करो। तुममें कभी भी कायरता, पाप, असदाचरण और कमजोरी नहीं आनी चाहिए। कभी पीछे मुड़कर मत देखो। भाग्य बहादुर लोगों का ही साथ देता है। हमेशा अपार शक्ति, अपरिमित उत्साह, अमिट साहस और असीम धैर्य से आगे बढ़ो। तुम सभी महत्वपूर्ण कार्य सम्पन्न कर सकते हो।

गुण – 8 बिना पाखण्डी और कायर बने सबको प्रसन्न रखो। पवित्रता और शक्ति के साथ अपने आदर्श पर दृढ़ रहो। चाहे तुम्हारे सामने कैसी भी बाधाएं क्यों न हों, कुछ समय बाद संसार तुमको मानेगा ही।

गुण – 9 धीरज रखो और मृत्युपर्यंत विश्वासपात्र रहो। आपस में न लड़ो। रुपए-पैसे का व्यवहार शुद्ध भाव से करो। बिना ईमानदारी, भक्ति और विश्वास के महान कार्य नहीं किए जा सकते, इसलिए प्रत्येक कार्य में सफलता के लिए ईमानदारी, शक्ति और विश्वास का पथ चुनो।

गुण – 10 किसी काम को न टालो। कोई भी चुनौती आने पर टालने की कोशिश न करो क्योंकि अगर आपने उस काम को टाला तो उससे आप किसी बड़ी उपलब्धि से वंचित रह सकते हैं, इसलिए टालने की प्रवृत्ति छोड़ो औ प्रत्येक कार्य में ईश्वर को खोजने की कोशिश करो। वह आपके इर्द-गिर्द ही कहीं नजर आएगा।

गुण – 11 पारवलंबी न रहो, दूसरों पर निर्भर रहना भी बुद्धिमानी नहीं होती। बुद्धिमान व्यक्ति को अपने ही ऊपर दृढ़ता से खड़े रहकर कार्य करना चाहिए। यही लक्ष्य प्राप्ति का एक प्रमुख मंत्र है।

गुण – 12 सभी के लिए सहयोगी बनो। किसी को उसकी योजनाओं में हतोत्साहित नहीं करो। आलोचना की प्रवृत्ति को पूरी तरह छोड़ दो। यदि कोई सही मार्ग पर अग्रसर हो रहा है तो उसकी आलोचना नहीं करो बल्कि सहायता करो और यदि उस मार्ग में या उस कार्य में कोई गलती नजर आए तो नम्रतापूर्वक उस गलती के प्रति उसे सजग करो। दूसरों की आलोचना ही सब दोषों की जड़ है।

राजभाषा



डॉ. सुनीता सोमदेवे

हिंदी को भारत माता की बिंदी बनाई जाए,
देशी भाषाओं को उसमें समाया जाए।
अंग्रेजी भी मस्तिष्क में संजोई जाएं
हर हाल में हिंगलिश को हटाया जाए।
लाखों लोग हिंदी की हिमायत करते हैं
पर बहुप्रयोग अंग्रेजी का करते हैं।
हिंदी का विद्वान हस्ताक्षर अंग्रेजी में
जैसे मुंह में राम और छुरी बगल में।
सभी भारतीय भाषाएं हमारी हैं
इन्हें सीखने की जिम्मेदारी हमारी है।
अहिन्दी भाषियों को हिंदी सीखना है
हिंदीवालों को भी देशी भाषाएं सीखना है।
हम भारतीय भाषाओं को सीखें
बहुभाषी विद्वान बनकर दिखें।
तमिल, गुजराती, कन्नड लिखें
मलयालम, तेलगु, कश्मीरी सीखें।
देश में भाषाई विवाद न हो
राजभाषा पर विषाद न हो।
विरोध के लिए विरोध न हो
भारत की राजभाषा हिंदी हो।



सेहत का खज़ाना



विनीत सिंघल

सहायक महाप्रबंधक

आपने अपनी रसोई में मेथी का इस्तेमाल तो खूब किया होगा। बाजार में आसानी से उपलब्ध होने के बावजूद लोग इसके फायदों से अनजान हैं, लेकिन क्या आपको पता है मेथी के ये दाने कितने फायदेमंद हैं। ये बालों की डैंड्रफ को तो दूर करता ही है साथ ही ये चेहरे के लिए पेट के लिए और यहां तक कि पथरी की बीमारी में भी काफी फायदेमंद है। आइए आज आपको मेथी के फायदों के बारे में जानकारी देते हैं।

डैंड्रफ भी हो जाएगी दूर : डैंड्रफ (रूसी) होना बालों की एक आम समस्या है। यह सिर की त्वचा रूखी-सूखी होने और डेड स्किन सेल्स की वजह से होती है। इससे छुटकारा पाने के लिए आपने अब तक कई एंटी-डैंड्रफ शैंपू का इस्तेमाल कर लिया है लेकिन फिर भी यह समस्या नहीं जा रही है तो हम आपको इसका घरेलू उपाय बता रहे हैं। बालों से डैंड्रफ दूर करने के लिए मेथी दाने बुत असरदार होते हैं। इसके लिए मेथी के दानों को मुलायम होने के लिए रात भर पानी में भिगो दें। सुबह इसको पीसकर पेस्ट बना लें। आप चाहें तो इसमें दही मिलाकर पेस्ट को स्कैल्प और बालों की जड़ों पर अच्छे से लगाएं, साथ ही मसाज भी करें। अब इसे 30 मिनट बाद धो लें।

बाल होते हैं मजबूत : मेथी के दाने बालों की जड़ों को मजबूत करते हैं और डैमेज्ड हेयर को पुनर्जीवित करते हैं। इसमें प्रोटीन होता है, इसलिए मेथी दानों को अपनी डाइट में शामिल करने से बाल हेल्दी और खूबसूरत बनेंगे। इसके लिए भीगी हुई मेथी के पेस्ट में एक या दो बड़ा चम्मच नारियल तेल या जैतून के तेल को मिलाकर बालों में लगाएं। सूखने के बाद इसे पानी से धो लें।

पाचन में फायदेमंद : मेथी के दानों के सेवन से पेट दर्द और जलन दूर होती है। साथ ही पाचन क्रिया भी दुरुस्त होती है पाचन संबंधी समस्या को दूर करने के लिए मेथी दानों के पेस्ट में कसी हुई अदरक मिलाएं और खाने से पहले एक बड़ा चम्मच इस पेस्ट को खाएं। इससे पेट से संबंधित रोग दूर होंगे।

डायबीटीज भी करती है कंट्रोल : मेथी के दानों से ब्लड शुगर कंट्रोल होता है। इसमें मौजूद एमीनो एसिड तत्व पैन्क्रियाज में इंसुलिन

के स्राव को बढ़ाता है जो शरीर से ब्लड शुगर लेवल कम करता है। स्टडी के अनुसार डायबीटीज के रोगियों द्वारा मेथी दानों के सेवन से फायदा होता है। इसके लिए मेथी के दानों को रात भर पानी में भिगोकर रख दें और सुबह इसे छानकर इसका पानी पिएं। ऐसा करीब दो महीने तक लगातार करने से डायबीटीज में काफी हद तक आराम मिलेगा।

किडनी के लिए फायदेमंद : मेथी के सेवन से किडनी भी स्वस्थ होती है। पथरी के इलाज में मेथी फायदा करती है इस जादुई औषधि से पथरी पेशाब के साथ शरीर से बाहर निकल जाती है। मेथी के दानो को एक छोटे चम्मच नींबू के रस और शहद के साथ खाने से बुखार में काफी हद तक आराम मिलता है।

पिंपल्स भी हो जाएंगे दूर: मेथी दाने पिंपल्स और ब्लैकहेड ट्रीटमेंट के लिए फायदेमंद है। इसके लिए मेथी के दानों को पीस कर पेस्ट बना लें और इसमें थोड़ा शहद मिलाएं। अब इसे मिक्सचर को रात में सोने से पहले पिंपल्स पर लगाएं और सुबह गुनगुने पानी से चेहरा धो लें। इस उपाय को लगातार करने से कुछ ही दिनों में आपको फर्क नजर आएगा।

वजन कम करने में उपयोगी: मेथी के दानों में फाइबर की मात्रा ज्यादा होती है। खाली पेट मेथी दानों को चबाने से एक्सट्रा कैलरी बर्न होती है। इसका दूसरा उपाय है कि सुबह दो गिलास मेथी का पानी पिएं। मेथी का पानी बनाने के लिए एक बड़ा चम्मच मेथी के दानों को दो गिलास पानी में रातभर भिगो दें और सुबह इसे छानकर पी लें।

टमाटर – सिर्फ स्वाद में ही खट्टा-मीठा नहीं होता, बल्कि टमाटर कई तरह के औषधीय गुणों से भी भरपूर होता है। टमाटर एंटी-ऑक्सीडेंट और खासकर लाइकोपीन से भरपूर होता है। टमाटर में प्रोटीन, विटामिन, वसा आदि तत्व विद्यमान होते हैं। यह सेवफल व संतरा दोनों के गुणों से युक्त होता है। कार्बोहाइड्रेट की मात्रा कम होती है इसके अलावा भी टमाटर खाने से कई लाभ होते हैं। पौष्टिक तत्वों से भरपूर टमाटर हर मौसम में फायदेमंद है। इसे सब्जी में डालें या सलाद के रूप में या किसी और रूप में यह आपके लिए बेहद फायदेमंद साबित होगा। टमाटर खाने से भूख बढ़ती है। इसके अलावा टमाटर पाचन शक्ति, पेट से संबंधित अनेक समस्याओं को दूर करता है। टमाटर खाने से पेट साफ रहता है और इसके सेवन से रोग प्रतिरोधक क्षमता मजबूत होती है। त्वचा के लिए टमाटर खाने से सनबर्न और टैन्ड स्किन में फायदा होता है। टमाटर में पाया जाने वाला लाइकोपीन तत्व त्वचा को अल्ट्रावायलेट किरणों से बचाता है।

डायबीटीज रोगियों के लिए टमाटर खाना बहुत फायदेमंद होता है। हर रोज एक खीरा और एक टमाटर खाने से डायबीटीज रोगी को लाभ मिलता है। टमाटर आंखों व पेशाब संबंधी रोगों के लिए भी फायदेमंद है।





टमाटर खाने से लीवर और किडनी की कार्यक्षमता को बढ़ाता है। हर रोज टमाटर का सूप पीने से लीवर और किडनी को फायदा होता है। यदि आप टमाटर जैसा लाल दिखना चाहते हैं तो अपने भोजन में टमाटर का सेवन शुरू कर दीजिए। टमाटर को कच्चा, पकाकर और सूप के रूप में इस्तेमाल किया जा सकता है। किसी न किसी तरह से आप टमाटर को आप हर रोज इस्तेमाल करते हैं। टमाटर खाने से कैंसर का खतरा कम होता है। टमाटर खाने से त्वचा जवां दिखती है और त्वचा से संबंधित बीमारियां नहीं होती हैं। यानी टमाटर आपको जवां दिखाता है। ब्लड प्रेशर के मरीजों के लिए भी टमाटर बहुत फायदेमंद होता है। आइए हम आपको बताते हैं कि टमाटर में क्या-क्या गुण हैं और कैंसर से बचाव के लिए यह कितना फायदेमंद है।

टमाटर के नियमित सेवन से पेट साफ रहता है। टमाटर इतने पौष्टिक होते हैं कि सुबह नाश्ते में केवल दो टमाटर संपूर्ण भोजन के बराबर होते हैं और सबसे बड़ी बात तो यह है कि इनसे आपके वजन में जरा भी वृद्धि नहीं होगी। इसके अलावा यह पूरे शरीर के छोटे-मोटे विकारों को दूर करता है। जो लोग अपना वजन कम करने के इच्छुक हैं, उनके लिए टमाटर एक वरदान है। एक मध्यम आकार के टमाटर में केवल 12 कैलोरीज होती है, इसलिए इसे पतला होने के भोजन के लिए उपयुक्त माना जाता है।

चना – आयुर्वेद में यह कहा जाता है कि अगर आप फुर्तीले बने रहना चाहते हैं तो चने का सेवन नियमित रूप से करना शुरू कर दीजिये। बस एक मुट्ठी चना से आप स्वस्थ और ताकतवर बने रह सकते हैं। चना बहुत



पौष्टिक होता है। चना चाहे भूना हुआ हो या अंकुरित किया हुआ, इसे खाना शरीर के लिए बहुत फायदेमंद होता है। चने में कार्बोहाइड्रेट, प्रोटीन, नमी, चिकनाई, रेशे, कैल्शियम, आयरन और विटामिन्स पाए जाते हैं। चना आपको सुंदर और तेज दिमाग वाला बनाता है। इसमें कार्बोहाइड्रेट, प्रोटीन, नमी, चिकनाई, रेशे, कैल्शियम, आयरन और विटामिन्स पाए जाते हैं। खून की कमी, कब्ज, डायबिटीज और पीलिया जैसे रोगों में चने का प्रयोग लाभकारी होता है। बालों और त्वचा की सौंदर्य वृद्धि के लिए चने के आटे का प्रयोग हितकारी होता है।

चने में 27 और 28 फीसदी फॉस्फोरस और आयरन होता है। यह न केवल रक्त कोशिकाओं का निर्माण करते हैं बल्कि हीमोग्लोबिन बढ़ा कर किडनियों को भी नमक की अधिकता से साफ करते हैं। एक कटोरा चना

खाने से 28 ग्राम रेशा आपके शरीर में जाता है, जिससे पेट संबन्धी सारी शिकायते दूर रहती हैं साथ ही कब्ज हो या फिर पेट का कैंसर, दोनों ही नहीं होते।

चने में अंकुरण के 7 दिन बाद तक मिनरल्स और विटामिन्स भर पूरा मात्रा में रहते हैं। इन्हें 7 दिनों के अन्दर ही खा लेना अच्छा है। अंकुरित दाने सलाद के रूप में कच्चे या उबाले हुये दोनों तरीके से खाये जा सकते हैं, या आप इनसे अपनी मन पसन्द कोई डिश भी बनाकर खा सकते हैं। सलाद के रूप में कच्चे या उबाले हुये दोनों तरीके से खाये जा सकते हैं।

चने को गरीबों का बादाम कहा जाता है क्योंकि ये सस्ता होता है लेकिन इसी सस्ती चीज में बड़ी से बड़ी बीमारियों से लड़ने की क्षमता है। चने से बालों का गिरना भी रूकता है क्योंकि इसमें मौजूद प्रोटीन बालों को मजबूती प्रदान करते हैं। उबले चने को सिर्फ नमक के साथ मिला कर खाने से आपका वजन भी कम हो सकता है। वैसे भी कहा गया है कि 'जो खाये चना वो रहे बना'।

परमानंद

**“जिस मरण से जग डरे मेरे मन आनंद
कब मरू कब पाऊ पूरण परमानंद”**

संभवतः कबीर संसार में एक मात्र ऐसे संत हुए जिन्हें मरकर भी परमात्मा से मिलन स्वीकार था। अर्थात् मरने पर यदि परमात्मा के दर्शन होते हैं तो कबीर उसके लिए भी तैयार थे। प्रश्न था परमात्मा से साक्षात्कार। 'कहे कबीर मैं पूरा पाया।' कबीर को आधा-अधुरा परमात्मा नहीं चाहिए था। उनकी जिज्ञासा थी कि पूर्ण रूप से परमेश्वर के दर्शन हो। उसी में परमानंद की झलक पाने के लिए वे कुछ भी करने को तैयार थे। कबीर बहुत ही विपरीत परिस्थिति में जीएं। उनके जाति पर प्रश्न चिन्ह था, वे साधनहिन थे। किसी तरह कपड़ा बुन जीविका चलाते और परमात्मा के भजन में लीन रहते। उन्हें अनेक प्रकार की यातनाएं और दुःख सहन करना पड़ता परंतु वे सादे सरल जीवन जीने वाले परमात्मा के सच्चे भक्त थे तभी ओशो ने बुद्ध, महावीर और कबीर पर जितना अंग्रेजी में प्रवचन दिया उससे ज्यादा हिंदी में। उनके अनोखे प्रवचन संसार की अनमोल धरोहर है। अनमोल तो कबीरवाणी भी है। विपरीत परिस्थिति में कबीर कितना कुछ कर सके। आज तुम्हारे पास साधन है, परिस्थितियां तुम्हारे अनुकूल हैं। तुम ज्ञानी हो इसका तुम्हें एहसास है फिर तुम्हारा सृजण कबीर की तरह क्यों नहीं है? अपने सृजन शक्ति को पहचानो और बुद्ध बनो, कबीर बनो तथा वर्धमान की तरह महावीर बनो। स्वयं का कल्याण करो। संसार तुम्हें भी हजारों-लाखों वर्ष याद रखेगा।

स्वामी तथागत भारती



ध्यान और योगसन



प्रभात रंजन,
उप प्रबंधक

ध्यान लगाने के लिए किसी भी शांत सी जगह पर चटाई बिछाकर पद्मासन की मुद्रा में बैठकर मुंह को उत्तर या पूर्व दिशा में करके पूरे शरीर और मन को आराम दें। समान

रूप से सांस लेते हुए आंखों को बंद करके बिल्कुल शांत मन से अपने ईष्ट देवी-देवताओं पर ध्यान लगा लें। अब मन ही मन में अपने मुरुमंत्र या किसी पवित्र मंत्र का जाप करें। फिर मन में सोचें कि आपके ईष्ट देवी-देवता आपकी दोनों भौंहों के बीच या आंख में या दिल में मौजूद है। माहौल को पवित्र बनाने के लिए धूपबत्ती या अगरबत्ती जला लें तथा ध्यान से पूर्व प्रार्थना कर लें। जब आप अपने मन को एक जगह लगाकर मंत्र का जाप करेंगी तो आपके मन में अपने ईष्ट देवी-देवता नजर आएंगे। यह सब करने के लिए पहले मन को एक जगह लगाना पड़ता है और फिर ध्यान लगता है। अब आंखों को बंद करके पैरों के पंजों से शुरू करके अपने पैरों, पेट, स्तनों, भुजाओं, गर्दन, चेहरे और मुंह के जबड़ों से होते हुए मांसपेशियों को आराम दें। नाक से हवा को पेट तक लें जाएं जो सांस के साथ ऊपर-नीचे होता रहे। अपनी सांस लेने की क्रिया को जागृत रखें तथा उसके साथ-साथ ओम का जाप करें। फिर अपने शरीर की मांसपेशियों को ढीला छोड़ते हुए एक ही रफतार में सांस लेते हुए ओम का जाप करें। ये सब करते हुए मन में बेकार के विचार आएंगे पर ऐसे विचारों को मन से निकाल दें। अगर ऐसे विचार दोबार आते हैं तो उन पर ज्यादा विचार ना करें तथा ओम का जाप करती रहें। शुरुआत में अगर आप 10 मिनट पर ध्यान लगा सकते हैं तथा बाद में उसका समय बढ़ाते जाएं। अगर ध्यान लगाना है तो पूरी निष्ठा तथा श्रद्धा के साथ करें।

अब आप ये सोच रहे होंगे कि ध्यान लगाकर हमें क्या चीज मिल सकती है। ध्यान लगाने से हमारा भटकता हुए मन भगवान की ओर लग जाता है। दूसरा ध्यान लगाने से आपको खुद की भंगुरता महसूस होगी तथा पूरी तरह ध्यान में लगाने के बाद आपको पूरे योगी की प्राप्ति होगी। ऐसे में आप अपने ईष्ट देवी-देवताओं के साथ पूरी तरह सामंजस्य बिठाकर ब्रह्मा में लीन हो सकेंगी। ध्यान लगाते समय शुरुआत में हो सकता है कि आपके मन में अजीब और बुरे विचार आए तो ऐसे समय में गहरी सांस लें और ओम का जाप करती रहें तथा ध्यान की जगह पर भजन गाती रहें। थोड़ी देर बाद जब आपको लगता है कि आपके मन से ऐसे विचार निकल गए हैं तो फिर ध्यान लगा सकती हैं। ध्यान आपको ईश्वर के बिल्कुल करीब पहुंचा देता है। जिस तरह से मन बुरी संगतों में रम जाता है वैसे ही ये ईश्वर में भी लीन हो जाता है। जब आप अपने आपको ईश्वर के बिल्कुल करीब महसूस करती हैं तब आपका अपना जीवन खुशियों भरा और सारे दुखों से दूर नजर आएगा। इस तरह से आपको ध्यान लगाने से आपको मन को काबू करने की, किसी भी मुश्किल घड़ी में सही फैसला

करने की तथा जिन्दगी में सुख-दुख को सहने की आदत पड़ जाएगी।

योग

योग शब्द की उत्पत्ति संस्कृति भाषा की युज धातु से हुई है जिसका शाब्दिक अर्थ युक्त करना अथवा जोड़ना है अर्थात् आत्मा को परमात्मा से मिलने की विशिष्ट विधि को ही योग कहते हैं। महर्षि पंतजलि ने अपने योगदर्शन में योग को परिभाषित करते हुए कहा है, 'योगश्चितवृत्ति निरोधः' अर्थात् मन की वृत्तियों (रूप, रस, गंध स्पर्श और ध्वनि के लोभ में दौड़ने) को रोकना योग है। इस प्रकार चित्त की चंचलता का दमन ही योग है।

महात्मा याज्ञवल्क्य ने योग को स्पष्ट करते हुए कहा है – "संयोग इत्युक्तो जीवात्मः परमात्मनो" अर्थात् जीवात्मा और परमात्मा के मिलन का नाम योग है। डॉ० सर्वपल्ली राधाकृष्ण के अनुसार – "योगः कर्मसुकौशलम्" अर्थात् प्रत्येक कार्य को कुशलता से सम्पन्न करना योग है। स्वामी शिवानन्द सरस्वती ने योग को मोक्ष का साधन बताते हुए लिखा है – "योग उस साधना प्रणाली का नाम है जिसके द्वारा जीवात्मा तथा परमात्मा की एकता का अनुभव होकर परमात्मा के साथ आत्मा का संयोग होता है।" योगी रामचरक ने योग को शक्ति अर्जित करने का साधन बताते हुए लिखा है – "हम सभी अनन्त शक्ति के स्वामी हैं। योग हमें इसी शक्ति के रहस्य से परिचित कराता है।"

इस प्रकार विभिन्न विद्वानों द्वारा दी गई उपरोक्त परिभाषाएं हमें योग की प्रकृति और विशेषताओं के बारे में निम्न बातें बताती हैं—

1. योग द्वारा जीवन के प्रत्येक कार्य क्षेत्र में कुशलता पूर्वक कार्य करने की योग्यता आती है।
2. योग द्वारा व्यक्ति के ज्ञान चक्षु खुलते हैं, उसका अज्ञानता दूर होता है तथा वह विवेकशील बनता है।
3. योग को वश की चंचलता पर अकुंश लगाने में मदद मिलती है। इन्द्रियों को वश में करने का साधन है।
4. योग द्वारा हमें अपनी आंतरिक शक्तियों से परिचित होने और उनका स्वामी बनकर उन्हें भली-भांति काम में लाने की समर्थता आती है।
5. योग एकाग्रता में सहायक होता है तथा व्यक्ति को अपनी आत्मा का ज्ञान कराकर परमात्मा से संयोग करने में मदद करता है।

इन सब विशेषताओं के आधार पर यह कहा जा सकता है कि योग ऐसा मार्ग है जिस पर चलकर व्यक्ति अपनी शक्तियों और सामर्थ्य में वृद्धि करता हुआ जीवन में पर्याप्त सुख संतोष अनुभव करते हुए मोक्ष प्राप्ति की ओर बढ़ता रहता है।

खूबसूरती और योगसन

1. **वातासन** – सबसे पहले अपने दोनों पैरों को एकसाथ



मिलाकर बिल्कुल सीधे खड़े हो जाएं। इसके बाद बाएं पैर पर खड़े रहते हुए दाएं पैर को पद्मासन की मुद्रा में बाईं जांघ पर लगा लें। अंत में दोनों हाथों को प्रार्थना की मुद्रा में जोड़कर सिर से ऊपर उठा लें।

2. **सुक्त व्रजासन** – सुकत व्रजासन की मुद्रा में बैठकर अपने दोनों हाथों को सिर के पीछे ले जाकर मिला लें। फिर धीरे-धीरे पीछे की ओर झुककर सिर को जमीन पर टिका दें।
3. **मत्स्यासन** – इस आसन में सबसे पहले पीठ के बल इस अवस्था में लेट जाएं कि आपकी टांगें सीधी और पैर जुड़े हुए हों। फिर अपनी दोनों हथेलियों को जमीन पर टिकाकर नितंबों के नीचे रख लें।
4. **मयूरासन** – अपने दोनों पैरों के घुटनों को मोड़कर पैरों की एड़ी को मिलाकर एड़ियों पर बैठ जाएं। अब अपने दोनों हाथों को जमीन पर इस तरह टिका लें कि उंगलियों का रुख पीछे की ओर हो जाए। कोहनी और कलाई आपास में मिला लें।
5. **जानू शिरासन** – अपने दोनों पैरों को सामने की ओर फैलाकर बैठ जाएं पर रीढ़ की हड्डी को बिल्कुल सीधी रखें। इसके बाद अपने दाएं पैर को मोड़कर पंजे को बाएं पांव की जांघ से लगा लें और फिर दोनों हाथों को जोड़कर ऊपर उठा लें। फिर धीरे-धीरे आगे की ओर झुकें तथा दोनों हाथों से बाएं पैर का पंजा पकड़कर नाक को घुटने से लगा लें।
6. **गरुडासन** – दाएं पैर पर खड़े होकर बाएं पैर को दाएं पैर पर लता की तरह लपेटकर पीछे की ओर ले जाएं और पंजे को सामने लाएं। अब दायां हाथ नाक की सीध में लाएं और बायां हाथ लता की तरह लपेटकर दोनों हाथों को बहुत कसकर पकड़ लें।
7. **अंजनेयासन** – बाएं पैर के घुटने को मोड़कर बैठ जाएं तथा दाएं पैर को पीछे की ओर निकाल लें। फिर दोनों हाथों को जोड़कर ऊपर की ओर उठा लें और धीरे-धीरे जितना ज्यादा हो सके पीछे की ओर झुक जाएं।
8. **त्राटक** – त्राटक आसन करने के बहुत सारे तरीके हैं। असल में जब हम किसी वस्तु या निशान पर नजर बिल्कुल टिकाकर रखते हैं उसे ही त्राटक आसन कहते हैं।

त्राटक आसन करने की विधि – 1 मोमबत्ती को जलाकर उसकी लौ पर अपनी नजर तब तक टिकाकर रखें जब तक कि आंखों में से पानी न गिरने लगे या आंखें थकी-थकी सी न लगे। इस आसन को करने से नजर तेज होती है और आंखों के रोग भी दूर होते हैं।

स्त्रियों के लिए योग करने के लाभ

हमारे धार्मिक ग्रंथों के अनुसार योग स्वास्थ्य के लिए सबसे अच्छे व्यायाम के रूप में माना जाता है। योग हमें सिखाता है कि स्वस्थ व्यक्ति शारीरिक व मानसिक रूप से सामंजस्य पूर्ण एक समेकित इकाई होता है। इसलिए अच्छे स्वास्थ्य के लिए शांत और साफ मन तथा आत्मा-परमात्मा के मिलन के प्रति पूरी संचेतन आत्मा की जरूरत है। रोजाना योगासन करने से पूरी जिन्दगी के लिए अच्छा स्वास्थ्य और खुशी मिलती है। रोजाना लगभग 10 मिनट तक योगा करने से शरीर की मांसपेशियां मजबूत बनती हैं, पाचन शक्ति तेज होती है, रक्तसंचार और सांस की नलियों में सुधार होता है तथा स्नायुओं और दिमाग को काफी मात्रा में ऊर्जादायक ऑक्सीजन मिलती है।

सूर्य नमस्कार



दोनों पैरों के बीच में थोड़ा सा अंतर रखकर बिल्कुल सीधी तनकर खड़ी हो जाएं। आपके दोनों हाथ प्रार्थना की अवस्था में स्तनों के भाग पर जुड़े होने चाहिए।

लाभ – ध्यान और शांति की अवस्था होती है। सांस लेते हुए दोनों हाथों को सिर से ऊपर उठा लें।

लाभ – इस क्रिया को करने से पेट और आंतों की मांसपेशियों में खिंचाव पैदा होता है तथा इसको करने से भुजाओं और मेरुरज्जु की कसरत हो जाती है। सांस को बाहर छोड़ते हुए आगे की ओर झुकते हुए हाथों से जमीन को छुएं और घुटनों को बिल्कुल सीधा रखें।

लाभ – इस तरह करने से पेट के रोग नहीं होते हैं तथा भोजन पचाने की क्रिया ठीक होती है।

- सांस को रोककर रखें तथा हाथों को फर्श पर जमाकर रख लें। फिर दाएं पैर को मोड़कर उस पर उकड़ू सा बैठ जाएं तथा बायां पैर पीछे की ओर सीधा फैला लें।
- इसके बाद सांस को अंदर की ओर खींचते हुए दाएं पैर को वापस लें जाएं जिससे की शरीर लंबी रेखा जैसा बन जाए।
- फिर सांस को बाहर छोड़ते हुए अपनी जांघों को जमीन पर रख लें तथा सिर और कंधों को पीछे की ओर मोड़ लें।
- अब सांस को बाहर छोड़ते हुए वापस पहले जैसी स्थिति में आ जाएं।
- सांस को लेते हुए फर्श पर हाथ जमाने वाली स्थिति में आ जाए परन्तु इस बार बाएं पैर पर उकड़ू बैठे तथा दाएं पैर को सीधे अपने पीछे फैला लें।
- फिर सांस को बाहर छोड़ते हुए जमीन को छूने की पहली वाली स्थिति में आ जाएं।



- अब हाथों को फिर से सिर से ऊपर उठाकर सांस लेते हुए फैला लें।
- अंत में सांस को बाहर छोड़ते हुए वापस पहली जैसी स्थिति में आएं।

भुजंगासन

सबसे पहले पेट के बल लेटकर पैरों की उंगलियों को पीछे की ओर फैलाएं। हाथों को कंधों से नीचे करते हुए हथेलियों को फर्श पर जमाएं। अब सांस लेते हुए तथा नाभि को फर्श से उठाए तथा स्तनों वाले भाग को धनुष के आकार में पीछे मोड़ें। फिर सांस को रोक लें। इसके बाद सांस को बाहर छोड़ते हुए धीरे से जमीन पर नीचे आ जाएं। इस व्यायाम को कम से कम 6 बार करें।

लाभ— यह आसन स्त्रियों के जिगर, डिंबाशय और गर्भाशय को मजबूत करता है तथा मासिक स्राव को समय पर नहीं आने की परेशानियों को दूर करता है। इसको करने से पेट की कब्ज भी दूर हो जाती है। डिस्क के खिसकने के लिए भी यह एक बहुत ही अच्छा व्यायाम है।

श्वासन

इस आसन को करने के लिए सबसे पहले कमर के बल लेट जाएं। फिर पैरों की दोनों एड़ियों को आपस में मिला लें और पैरों के दोनों पंजों में अंतर रखें। इसके बाद दोनों हाथ अगल-बगल में बिल्कुल सीधे फैला लें और चिनुक (ठोड़ी) थोड़ी सी शरीर के नीचे की ओर झुका लें। मुंह बंद होना चाहिए और जीभ आपके ऊपर के दांतों को छूती हो। अब आंखों को बंद करके भौहों के बीच में या गहरी, धीमी लयात्मक सांस लेने की क्रिया पर ध्यान लगा लें।

लाभ— इस आसन को करने से शरीर की थकान, निराशा, दमा, कब्ज, डायबिटीज, भोजन का ना पचना और नींद का न आना जैसा रोग दूर होते हैं तथा यह आसन साधारण थकान को दूर करके दिमाग को एक जगह केन्द्रित करना सिखाता है।

सिंहासन

सिंहासन में सबसे पहले हिरन की अवस्था में बैठकर हथेलियों को जांघों पर टिका लें। अब सांस को बाहर छोड़ते हुए हाथों से जांघों पर दबाव दें। फिर हाथों की उंगलियों को फैलाकर जीभ को बाहर निकाल लें। अपनी दोनों आंखों को खोलकर बड़ी कर लें। अंत में सांस लेते हुए आराम महसूस करें।

नर्तन मुद्रा

सबसे पहले दाएं पैर के बल खड़े होकर बाएं हाथ से बाएं पंजे को पकड़कर आगे की ओर झुक जाएं। फिर धीरे-धीरे सांस लेते हुए बाएं पैर को पूरी तरह ऊपर उठा लें और सांस को छोड़ते हुए वापस पहली जैसी

स्थिति में आ जाएं। इस आसन को दाहिने पैर के साथ भी वैसे ही करें।

लाभ — इस आसन को करने से आपका शरीर संतुलन में रहता है। इससे कूल्हों और जांघ के ऊपर की चर्बी कम होती है और टांगे मजबूत बनती हैं।

संतुलन — इस आसन में पहले घुटनों को थोड़ा सा मोड़कर बैठ जाएं। अब दोनों हाथों को घुटनों के नीचे आपस में मिला लें। इसके बाद दोनों पैरों के पंजों को जमीन पर से ऊपर उठाते हुए अपने घुटनों को सीधा करें। अंत में 5 गिनने के बाद पैरों को वापस जमीन पर लें आएं।

लाभ — अक्सर होता ऐसा है कि जैसे-जैसे व्यक्ति की उम्र बढ़ती जाती है अपने शरीर को संतुलन में रखने की उसकी ताकत कम होती रहती है जिसकी वजह से ज्यादा उम्र के स्त्री-पुरुष कभी भी चलते समय या बैठे हुए ही गिर पड़ते हैं। इस संतुलन आसन को करने से शरीर का आपस में तालमेल दुबारा स्थापित हो जाता है। जिससे शरीर को संतुलित करने की ताकत के साथ-साथ शरीर की खूबसूरती भी बढ़ जाती है।

धनुरासन

इस आसन में पेट के बल लेटकर दोनों हाथों को जांघों के नीचे रख लें। फिर सांस लेते हुए घुटनों को सीधा रखते हुए टांगों को पूरी तरह से ऊपर उठा लें। इसके बाद सांस को बाहर छोड़ते हुए टांगों को वापस नीचे लाएं तथा आराम महसूस करें।

लाभ — इस आसन को करने से पेट और कमर की मांसपेशियों की मालिश होती है तथा उन्हें मजबूती मिलती है। यह आसन कमर के नीचे के भाग, गुर्दों तथा एड्रिनल ग्रंथियों को मजबूत करता है। इस आसन को हर्निया के रोगी तथा तेज कमर के दर्द वाले रोगियों को नहीं करना चाहिए।

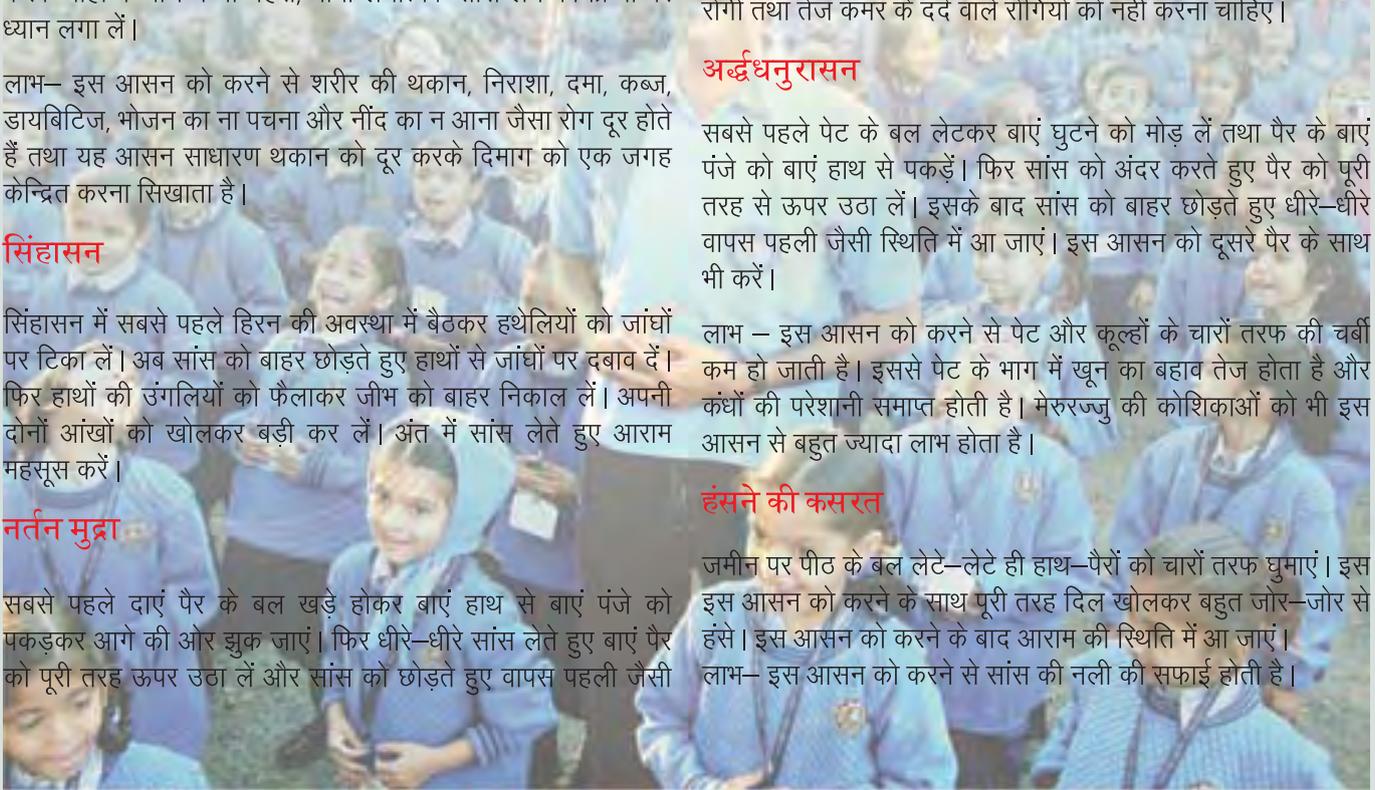
अर्द्धधनुरासन

सबसे पहले पेट के बल लेटकर बाएं घुटने को मोड़ लें तथा पैर के बाएं पंजे को बाएं हाथ से पकड़ें। फिर सांस को अंदर करते हुए पैर को पूरी तरह से ऊपर उठा लें। इसके बाद सांस को बाहर छोड़ते हुए धीरे-धीरे वापस पहली जैसी स्थिति में आ जाएं। इस आसन को दूसरे पैर के साथ भी करें।

लाभ — इस आसन को करने से पेट और कूल्हों के चारों तरफ की चर्बी कम हो जाती है। इससे पेट के भाग में खून का बहाव तेज होता है और कंधों की परेशानी समाप्त होती है। मेरुरज्जु की कोशिकाओं को भी इस आसन से बहुत ज्यादा लाभ होता है।

हंसने की कसरत

जमीन पर पीठ के बल लेटे-लेटे ही हाथ-पैरों को चारों तरफ घुमाएं। इस आसन को करने के साथ पूरी तरह दिल खोलकर बहुत जोर-जोर से हंसे। इस आसन को करने के बाद आराम की स्थिति में आ जाएं। लाभ— इस आसन को करने से सांस की नली की सफाई होती है।





किसना



श्रीमती उमा सोमदेवे

पिछले अंक में पाठकों ने किसना के बचपन की और उसके गांव की कहानी पढ़ी। अब आगे की कहानी उसके व्यक्तित्व

के बारे में पढ़ें। जीवन अति बहुमूल्य है यह बात हमारे देश में 1 प्रतिशत लोगों की भी समझ से परे है। ग्रामीण क्षेत्रों में तो जीवन का कोई मूल्य नहीं है। अनेक लोग अपनी योग्यता से काफी कम स्तर का जीवन बिताने को मजबूर हैं। वहां गांव में आज भी रुपयों की समस्या है। पैसे वाले और दबंगों की ग्रामीण क्षेत्र में आज भी तुती बोलती है। इतिहास गवाह है कि जमींदारों (पटेलों) के पास पूरा गांव बेगारी करता था क्योंकि वे सारे ग्रामीण जमींदारों के बंधुआ हुआ करते थे। कभी-कभी तो उनके हाथ या माथे पर बंधुआ की मोहर तक लगा दी जाती थी ताकि उनको कहीं अन्य स्थान पर काम न मिल सके। ऐसे बंधुआ बमुश्किल गांव से पलायन कर पाते थे। इन सब मामलों में हमारा इतिहास शर्मनाक ही समझो। जमींदारों के लिए मानव मूल्य कौड़ी के बराबर भी नहीं था। आज समय बदल गया है शब्दों में किंतु गांवों की हालात वैसी ही है। जमींदार, बड़े राजा-महाराजा के नौकर हुआ करते थे मगर अन्याय अत्याचार में राजा-महाराजाओं से भी अधिक क्रूर। कालांतर में यही जमींदार, राजा-महाराजा भगवान कहलाए। हर भगवान राजा-महाराजा और हर राजा-महाराजा एमपी या एमएलए। इस इतिहास को अधिक तथ्यपूर्ण तरीके से लिखने की जरूरत है। इस पर शोध होना चाहिए और सत्य जनता के सामने आना चाहिए। ऐसे ही एक क्रूर जमींदार के गांव में किसना का जन्म हुआ। जमींदार का दबदबा उसके पिता के समय में अपनी चरम सीमा पर था। गांव में एक रात में छोटी सी लकड़ी और घास-फूस की झोपड़ी बनाना जमींदार को गवारा न हुआ। चार लठैत भेजकर किसना के पिता की पिटाई की गई और एक साल के लिए बंधुआ बनाया गया। काम था चांदी के काले पड़ गए सिक्कों पर बैलों को चला कर साफ करना और लगान वसूल कर अपनी निजि बैलगाड़ी में जमींदार के घर पहुंचाना। किसी भी बंधुआ को खड़ा तिलक लगाने का अधिकार न था। आडा तिलक लगाकर तिरछी टोपी पहनने का नियम था। क्या मजाल की अपनी ही बैलगाड़ी में बैठ जाए। गाड़ी में लगान लदकर खुद पैदल चलना जरूरी था वरना डंडों से पटाई और लात घुसों की बौछार। जुर्माना न देने पर जमींदार के बाड़े की छत से नीचे फेक देना तय था।

किसना का पिता बहुत कुछ सह चूका था। लेकिन कहते हैं ना कि बुराई का शीघ्र अंत होता है। सन् 1960 के आते ही अनेक जमींदार मर गए और आगे उनकी संतानों में इतना दम नहीं था कि वे बेगार करा सके। जमींदार के बेटे कुछ पढ़ लिख भी गए थे इसलिए गांवों से दुकानदारी उन्होंने उठा

ली। शहरों में बस गए। गांवों में कामदार रख दिए जो खेती बाड़ी की देखभाल कर सकें। जमींदार जो गांव के पटेल थे, गांव उन्हीं के नाम से जाना जाता था। गांव के नाम के आगे पटेल का नाम ब्रेकेट में लगाया जाता था। पटेलों के कामदारों ने भी कुछ दिन तो वहीं भूमिका निभाई जो पटेलों ने अपने समय में। गांव का हनुमान मंदिर कामदारों के कब्जे में होता था। दलितों को वहां सीढ़ी में पैर रखने की मनाई थी। किसना के साथ उच्च जाति के सहपाठी मंदिर के आस-पास लुका-छिपी का खेल-खेलते और पकड़े जाने के डर से मंदिर में छुप जाते। किसना और उसके अनेक दलित सहपाठी मंदिर के चारों ओर छिपे हुए उच्च जातियों के सहपाठियों का नाम लेकर पुकारते और अंत में न खोज सकने पर अपने घर लौट जाते। किसना पढ़ाई के मामले में हमेशा नंबर वन था। उच्च जाति के उसके सहपाठियों को इस बात से बड़ी खीज थी। किसना की इस बात को लेकर भी जमकर पिटाई होती थी। सभी पीटने वाले उच्च जाति के सहपाठी दसवीं से ऊपर न पहुंच सके। कुछ तो अंग्रेजी ने तोड़ दिया और बाकि जो बचा तो उनके मां-बाप ने तोड़ दिया। मां-बाप के जोर देने पर भी वे शिक्षा में आगे न बढ़ सके। आज उनमें से कई मर गए हैं क्योंकि कच्ची-पक्की मदिरा ने शरीर तोड़ दिया और अन्य व्यसनों ने खेती-बाड़ी छीन ली।

किसना के गांव की दुर्दशा सीमा पर बैठी लोकमाता भी नहीं सुनती। कई लोग वहां मां की ममता के लिए गुहार लगा चुके हैं मगर हाथ कुछ न आया। वहां कई लोगों को चांदी, सोने से भरे कलश नजर आए मगर वास्तव में वे कहां लुप्त हो गए पता नहीं। वहां जीवन को खतरे में डालकर लोग राष्ट्रीय आय बढ़ाने में लगे हैं परंतु उसका फायदा उन्हें कम और दूसरों को ज्यादा मिलता है। स्थानीय लोग अधिकतर मजदूर से ऊपर के पद पर नहीं पहुंचते। अधिकारी तो बाहरी व्यक्ति ही होते हैं।

किसना की पढ़ाई समीपस्थ बड़े कस्बे में हुई जहां जंगल के रास्ते रोज 32 किलोमीटर पैदल चलना पड़ता था। दिन में दो बार 8 किलोमीटर स्कूल के चक्कर लगाने पड़ते थे। शिक्षक वहां दयालु थे खासकर प्रधान अध्यापक। शालाएं अधिकतर संगठन की हुआ करती हैं जो कि शाला संचालन में अग्रणी है। कॉलेज की शिक्षा किसना को दो वर्ष नसीब हुई परंतु पुस्तकों का अभाव और माता-पिता के साथ के अभाव में आगे रेगुलर पढ़ाई न हो सकी। वह समय खुब सरस्ते का था। 1 रुपये में कॉलेज में एडमिशन और छह रुपये में हॉस्टल में 1 माह का खाना, किंतु किसना के मां-पिता इतना भी बोझ न उठा सके। किसना को डाक्टर की पढ़ाई करनी थी परंतु मनोबल टूट चूका था और हमेशा किसी अनहोनी की गंभीर आशंका में डुबे रहने की वजह से सपना पूरा न हो सका। किसना ऐलोपैथिक डाक्टर न बन सका। परंतु भाग्य का खेल देखो कि किसना आयुर्वेदिक डाक्टर जरूर बन गया। आयुर्वेद के नुस्खे से ही किसना ने कितने ही मरीजों को जीवन दान दिया।

अपनी जीवन यात्रा में किसना को कई स्थानों पर बाल बच्चों के साथ भटकना पड़ा। कुछ ट्रांसफर की वजह से तो कुछ पेट भरने के वास्ते।



कहने का मतलब बिच्छू का डेरा सदा पीठ पर लदा ही रहा। किसना का जीवन शून्य से प्रारंभ हुआ था। बाद में इस शून्य के आगे अंक भी लगे यह बात अलग है। जीवन सार्थक नहीं होता उसे करना पड़ता है। किसना ने भी यही किया। अध्यात्मिक जीवन में भी किसना किसी के आगे न झुका। सर झुकाया तो भोले नाथ के अलावा आध्यात्मिक गुरु ओशो के समक्ष जिसने अपना सारा तत्वज्ञान मानवता की समझ में लगा दिया तथा करोड़ों लोगों को आनंदमय जीवन जीने की कुंजी प्रदान की। मौन का महात्म्य समझाया, शून्य का अर्थ बतलाया और विवेकहीन होकर पूर्ण अहोभाव से स्वयं में खो जाने का मंत्र दिया। अनायास ही किसना को अध्यात्म का खजाना मिल गया वह भी हीरे रत्नों से भरा-भरा। अब उसे जीने में आनंद आ रहा है।

अपने सारे जीवन में किसना ने हजारों बार अपमान सहा। घोर-अपमान। किसी ने भी अपमान करने में आगे-पिछे न देखा। साधारण सा कम पढ़ा-लिखा नकचढ़ा चपरासी हो या कोई कॉन्ट्रैक्ट का सिनियर सिटिजन या अधिनस्थ अधिकारी/कर्मचारी। चूंकि किसना का व्यक्तित्व प्रभावशाली नहीं था इसलिए हर कोई किसना से पंगा लेकर उसकी बेइज्जत करता लेकिन किसना डाक्टर है चाहे वह आयुर्वेदिक क्यों न हो पक्का इलाज करना जानता है। जिसने भी किसना को पछाड़ने की हिमाकत की उसका पक्का इलाज हुआ। भोलेनाथ की कसम, किसना ने कईयों की हवा बंद की मगर अपने तरीके से। लेकिन किसना ने जानबुझकर किसी को दुख पहुंचाया हो ऐसा एक भी वाक्या नहीं होगा।

अपनी कक्षा 1 से कक्षा 10 तक किसना के हिस्से रोटी कम और आम, जंगली बेर, अचार, फल-फूल ही आए। इन्हें ही खाकर गुजारा किया। कभी ऐसा भी होता कि जंगल में आम की रखवाली करने वाले के द्वारा अनायास ही पीटा जाता। कुछ दंबंग लोग जंगल को भी अपनी जायजाद समझते हैं। कभी कुछ भी हाथ न लगता और फिर किसना भूखे ही सो जाता इस उम्मीद के साथ कि कल फिर जंगल जाएगा। कुछ माता-पिता ऐसे भी होते हैं कि जो अपने किसी विशेष बच्चे पर ज्यादा ध्यान देते हैं। वे भूल जाते हैं कि इससे दूसरे बच्चों पर विपरीत असर पड़ेगा। किसना के साथ भी ऐसा ही कुछ हुआ। घर में उसका हवा-हवा सा अस्तित्व था। अब उड़ा और तब उड़ा। घर में रहना यानि की अकारण पिता की मार खाना या फालतू के काम में लगा दिया जाना। किसना को तो जंगल ही रास आता या फिर दूर किसी गांव में अपने सहपाठी के घर उसकी किताबें पढ़ने जाना। आगे किसना ने कई जगह नौकरी की। हर जगह नया अनुभव, नये लोगों से विचित्र अनुभव मिला। वह दुनियादारी ठीक-ठाक समझ गया।

किसना को बाल मजदूरी का गहरा अनुभव है। कक्षा 8 के बाद वह सरकारी ठेके पर जंगल काटने, रोड बनाने, कुंआ खोदने, ट्रकों पर माल लदाई करने आदि काम किया करता था जिससे कि वह अपनी पढ़ाई के लिए कुछ आवश्यक चीजे खरीद सके। कभी-कभी वह होटल में जाकर दाल-रोटी भी खा लेता वरना भरपेट खाना तो किसी के शादी-ब्याह या किसी भोज में ही हो पाता। बाल मजदूरी के दौरान किसना को ठेकेदार की डांट भी खानी पड़ती क्योंकि कृषकाय किसना ज्यादा काम न खीच

पाता था। इस का नतीजा यह हुआ है कि 18 साल से ऊपर होने के पश्चात भी ठेकेदार उसे बाल मजदूर समझकर आधी रोजी ही देता था। किसना ने इसका विरोध किया तो उसे काम से हटा दिया गया। तब किसना ने अपना पुश्तैनी टेलरिंग का धंधा शुरू किया जिससे उसे अच्छी आमदनी होने लगी। इसी आमदनी की बदौलत किसना ने अपने गांव के एक लड़की से शादी की। शादी भी इस इलाके में अपने आप में एक मिसाल थी। शादी बहुत ही सीधी-साधे ढंग से हुई। इलाके के सभी गणमान्य लोग उपस्थित थे। शादी पूरे विधि-विधान से हुई मगर दहेज न लिया गया न दिया गया। दोनों तरफ मुंह बोले मां-बाप थे। घर का आवश्यक सामान भी किसना ने अपने खुद के पैसे से जुटाया। किसना किसी पर बोझ कभी न बना। शादी में उसके सगे संबंधी उपस्थित नहीं थे। मां-बाप तथा बड़े भाई बहन ने शादी का बायकाट किया था। मरते समय मां-बाप को इस का दुख जरूर हुआ होगा। भाई-बहनों को शरम आज तक नहीं आई लेकिन किसना ने अपने से छोटे भाई बहनों को माफ कर दिया क्योंकि वह अपने छोटे से मुकाबला करना नहीं चाहता। किसना के बड़े भाई-बहन किसना से आज भी आंख नहीं मिलाते।

किसना आपदा विपदा के हजारों किस्से सुना सकता है मगर सुनने वाला चाहिए तथापि कुछ चुनिंदा बातें जो किसना के लिए अहम रही वह यह कि उसका जीवन बहुत ही संघर्ष में बीता मगर किसी ने भी उसके साथ कभी भी सहानुभूति नहीं दर्शाई। कई बार जान जाते-जाते बची तो कई बार उच्च अधिकारियों की नासमझ की वहज से किरकिरी हुई। सब अपने मतलब के यार। कई बार तो ऐसा हुआ कि किसी साथी अधिकारी ने यह कह दिया कि भाई मुझसे मत मिलो और बात न करो क्योंकि किसी ने देख लिया तो मेरा प्रमोशन नहीं होगा। किसना दलित दंश का शिकार रहा है। उसकी उन्नति और विकास को कहीं से भी सराहना नहीं मिली। सराहना और पुरस्कार उन्हें मिला जिनका देश प्रेम और संस्था प्रेम से कोई लेना देना नहीं था। किसना ने ऐसी भी संस्था में कार्य किया जहां इंसान कार्य नहीं करते। उनका मूल्य जानवरों से भी कम। केवल एक दूसरे की कटू निंदा और बिना कारण विद्वेष की भावना रखना वहां मुख्य कार्य है। वह संस्थान अपने नाम के लिए भी तरस गया। उसकी इंटरनेशनल तो छोड़ो नेशनल पहचान भी नहीं बन सकी। वहां कमजोरों पर अत्याचार होते हैं। मूकदर्शकों की कोई नहीं सुनता। वहां बेसिर-पैर का राज है। अनुभव हीन लोग संस्था चलाते हैं। किसी का कोई नुकसान होता है तो उनकी बला से। वहां एडॉक प्रशासन है। परमानेंट प्रशासन का कोई इंतजाम नहीं। विपरीत परिस्थिति में अपनी योग्यता से कम के आकलन पर किसना जैसे लोगों को कार्य करना पड़ता है। अंधेर नगरी और चौपट राजा। लोग अपनी ही भलाई के लिए कार्य नहीं कर सकते, हां दूसरों को दोष देना और हर काम में मीन-मेख निकालना लोग अपनी बहादुरी समझते हैं। साहस की उनमें भी भारी कमी है मगर अपने आप को बहादुर समझने से उनको कौन रोक सकता है। इन बहादुरों को सलाम करते हुए अगले अंक में किसना के जीवन के कुछ और पहलुओं को छूने की कोशिश की जाएगी।

(यह एक काल्पनिक कहानी है। किसना, उसका गांव तथा संस्था (कार्यस्थल) आदि से वास्तविकता का कोई संबंध नहीं है।)





तपेदिक (टी.बी)



डा० वर्षा सोमदेवे,
एम.बी.बी.एस.

इतिहास

तपेदिक मनुष्यों में प्राचीन काल से उपस्थित है। तपेदिक की सबसे पुरानी और सुस्पष्ट पहचान लगभग 17,000 साल पुराने बायसन (भैंसे) के अवशेषों में हुई। हालांकि, यह अभी भी अस्पष्ट है कि तपेदिक पशु में उत्पन्न होकर मानवों में फैला या किसी आम पूर्वज से दोनों में फैला। मानवों में तपेदिक समूह के जीन (एमटीबीसी) और पशुओं में एमटीबीसी की तुलना यह इशारा करती है कि मानवों ने पशुओं को पालतू बनाते समय एमटीबीसी को पशुओं से हासिल नहीं किया है, जैसा कि पहले विश्वास किया जाता था। टीबी बैक्टीरिया के दोनों उपभेद एक आम पूर्वज साझा करते हैं, जिसने मानवों को नवपाषाण क्रांति के काल में संक्रमित किया होगा। कंकालों के अवशेष दर्शाते हैं कि प्रागैतिहासिक मानवों (4000 ई.पू.) को टीबी था और शोधकर्ताओं को 3000–2400 ईसा पूर्व की मिश्र की ममियों में तपेदिकीय क्षय मिले हैं। यक्ष्मा एक ग्रीक शब्द है, फुफ्फुसीय तपेदिक के लिये उपयोग किया जाने वाला एक पुराना शब्द है, 460 ई.पू. के आसपास, हिप्पोक्रेटस ने यक्ष्मा की पहचान उस समय के सबसे व्यापक रोग के रूप में की थी। इसमें बुखार और रक्त भरी खाँसी शामिल थी और ये लगभग हर बार घातक था। आनुवांशिक अध्ययन बताते हैं अमरीकियों में टीबी दूसरी शताब्दी (100 ईस्वी) से मौजूद थी। औद्योगिक क्रांति से पहले, लोकगीतों में तपेदिक को अक्सर पिशाच के साथ जोड़ा जाता था। जब परिवार के एक सदस्य की मृत्यु हो जाती तो अन्य संक्रमित सदस्यों का स्वास्थ्य भी धीरे-धीरे खराब होता जाता। लोगों का मानना था कि परिवार के अन्य सदस्यों के जीवन पर आया खतरा, टीबी के कारण मूल रूप से मृत व्यक्ति के कारण था।

हालांकि तपेदिक के फुफ्फुसीय स्वरूप को पैथोलोजी के रूप में 1689 में डॉ०रिचर्ड मॉर्टन द्वारा स्थापित किया गया था, लेकिन अपने लक्षणों की विविधता के कारण टीबी को एकल रोग के रूप में 1820 तक नहीं पहचाना गया था और इसको 1839 में जे.एल.शोलाइन द्वारा ट्यूबरकलोसिस (तपेदिक) नाम दिया गया था। 1838–1845 की अवधि के दौरान, मैथ केव के मालिक डॉ० जॉन क्रॉघन, तपेदिक से पीड़ित कई लोगों को गुफा में इस आशा के साथ लाये थे कि वे लोग गुफा के सम तापमान और शुद्ध हवा से ठीक हो जायेंगे, लेकिन वे एक वर्ष के भीतर मर गये।

माइकोबैक्टीरियम तपेदिक बैसिलस रॉबर्ट कॉख द्वारा 24 मार्च 1882 को पहचाना और वर्णित किया गया था। उनकी इस खोज के लिये उनको

1905 में फिजियोलॉजी या चिकित्सा का नोबेल पुरस्कार दिया गया था। कॉख को पशु और मानव तपेदिक में समानता पर विश्वास नहीं था जिसने संक्रमित दूध को संक्रमण के स्रोत के रूप में मान्यता में विलम्ब कर दिया। बाद में, इस स्रोत से संचरण का जोखिम पासचुरीकरण प्रक्रिया के आविष्कार के कारण नाटकीय रूप से कम हो गया था। कॉख ने 1890 में तपेदिक के एक 'उपाय' के रूप ट्यूबरकल बेसिली के एक ग्लिसरीन निष्कर्षण की घोषणा की, जिसे 'ट्यूबरक्युलाइन' का नाम दिया। हालांकि यह प्रभावी नहीं था लेकिन बाद में इसे पूर्वलाक्षणिक तपेदिक की उपस्थिति की स्क्रीनिंग जांच के रूप में सफलतापूर्वक रूपांतरित कर दिया गया।

कमजोर पशु – विकृति तपेदिक का उपयोग करते हुये अल्बर्ट काल्मेट और कैमिल गुएरिन 1906 में तपेदिक के खिलाफ प्रतिरक्षण में पहली असली सफलता हासिल की थी। इसे काल्मेट और गुएरिन का बैसिलस (बीसीजी) कहा गया था। बीसीजी वैक्सीन सबसे पहले 1921 में फ्रांस में मनुष्यों पर इस्तेमाल किया गया था, लेकिन केवल अमरीका, ब्रिटेन और जर्मनी में द्वितीय विश्व युद्ध के बाद व्यापक रूप से स्वीकृति प्राप्त कर पाया।

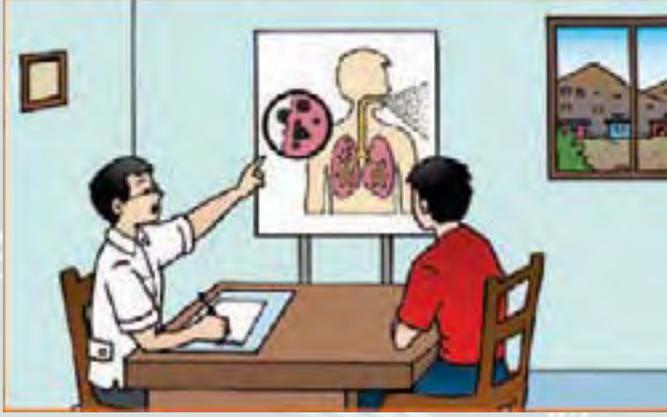
19वीं और 20वीं शताब्दी में तपेदिक शहरी गरीबों के स्थानिक रोग के रूप में सबसे व्यापक सार्वजनिक चिंता का कारण बना था। 1815 में इंग्लैंड में चार में से एक मृत्यु 'यक्ष्मा' के कारण हुई थी। 1918 तक, फ्रांस में छह में एक मृत्यु टीबी की वजह से हो रही थी। 1880 के दशक में रोग का निर्धारण संक्रामक रोग के रूप में करने के बाद, टीबी को ब्रिटेन में महत्वपूर्ण रोगों की सूची में रखा गया था, सार्वजनिक स्थलों पर थूकने से लोगों को रोकने के लिये अभियान शुरू किये गये थे और संक्रमित गरीब लोगों को सेनेटोरिया में जाने के लिये 'प्रोत्साहित' किया गया था जो देखने में जेल जैसे लगते थे (मध्यम तथा उच्च वर्गों के लोगों के लिये बने सेनेटोरिया में अच्छी देखभाल और सतत चिकित्सा ध्यान प्रदान किया जाता था), सेनेटोरिया में 'ताजी हवा' और श्रम के जो भी लाभ, सर्वश्रेष्ठ परिस्थितियों में भी रहे हों, भर्ती लोगों में से 50% की मृत्यु पांच वर्षों के अंदर हो जाती थी।

1600 की शुरुआत में यूरोप में तपेदिक की दरों में बढ़त शुरू हो गयी और 1800 में अधिकतम स्तर तक पहुंच गयी, जिस समय में सभी मौतों के 25% का कारण यह ही था। 1950 के दशक में मृत्यु दर लगभग 90% की कमी हुई। सार्वजनिक स्वास्थ्य में सुधार के कारण स्ट्रेप्टोमाइसिन और अन्य एंटीबायोटिक दवाओं के आने से पहले ही तपेदिक की दरों में कमी आने लगी थी, हलांकि रोग सार्वजनिक स्वास्थ्य के लिये इतना महत्वपूर्ण खतरा बना रहा कि जब 1913 में ब्रिटेन में चिकित्सा अनुसंधान परिषद का गठन किया गया, तो इसका प्रारंभिक ध्यान तपेदिक अनुसंधान पर था।

1946 में, एंटीबायोटिक स्ट्रेप्टोमाइसिन के विकास ने टीबी के प्रभावी



उपचार और स्वस्थ करने को वास्तविकता प्रदान की। इस दवा की शुरुआत से पहले एकमात्र उपचार (सेनेटोरिया को छोड़कर) शल्य चिकित्सा थी, "न्यूमोथोरैक्स तकनीक" जिसमें संक्रमित फेफड़े का निपात करके उसे 'आराम' दे कर तपेदिकीय घावों को ठीक होने दिया जाता था। एमडीआर टीबी के उद्भव ने टीबी संक्रमण के उपचार में देखभाल के आम तौर पर स्वीकार किये जाने वाले मानकों के भीतर शल्यक्रिया को फिर से एक विकल्प के रूप में प्रस्तुत किया है। वर्तमान शल्य हस्तक्षेपों में फेफड़ों में रोगात्मक छाती कोटरों (कैविटीज) को निकालना शामिल होता है जिससे कि जीवाणुओं की संख्या को कम और शेष जीवाणुओं को रक्त के प्रवाह में शामिल दवाओं के प्रति अनावरण में वृद्धि की जा सके, जिससे कि कुल जीवाणु भार को कम किया जाता है और प्रणालीगत एंटीबायोटिक चिकित्सा की प्रभावशीलता को बढ़ाया जाता है। 1980 में दवा-प्रतिरोधी



विकृतियों में वृद्धि के बाद टीबी को (चेचक की तरह) पूरी तरह से समाप्त करने की उम्मीद घराशायी हो गयी थी। तपेदिक के परिणामी पुनरुत्थान के कारण 1993 में विश्व स्वास्थ्य संगठन द्वारा वैश्विक स्वास्थ्य आपात स्थिति की घोषणा की गयी।

तपेदिक, क्षयरोग, एमटीबी या टीबी एक आम और कई मामलों में घातक संक्रामक बीमारी है जो माइक्रोबैक्टीरिया, आमतौर पर माइक्रोबैक्टीरियम तपेदिक के विभिन्न प्रकारों की वजह से होती है। क्षय रोग आम तौर पर फेफड़ों पर हमला करता है, लेकिन यह शरीर के अन्य भागों को भी प्रभावित कर सकता है। यह हवा के माध्यम से तब फैलता है, जब वे लोग जो सक्रिय टीबी संक्रमण से ग्रसित हैं, खांसी, छींक, या किसी अन्य प्रकार से हवा के माध्यम से अपना लार संचारित कर देते हैं। ज्यादातर संक्रमण स्पर्शान्मुख और भीतरी होते हैं, लेकिन दस में से एक भीतरी संक्रमण, अंततः सक्रिय रोग में बदल जाते हैं, जिनको अगर बिना उपचार किये छोड़ दिया जाये तो ऐसे संक्रमित लोगों में से 50% से अधिक की मृत्यु हो जाती है।

सक्रिय टीबी संक्रमण के आदर्श लक्षण खून-वाली थूक के साथ पुरानी खांसी, बुखार, रात को पसीना आना, और वजन घटना हैं, अन्य अंगों का संक्रमण, लक्षणों की एक विस्तृत श्रृंखला प्रस्तुत करता है। सक्रिय टीबी का निदान रेडियोलोजी, (आम तौर पर छाती का एक्स-रे) के साथ-साथ

माइक्रोस्कोपिक जांच तथा शरीर के तरलों की माइक्रोबायोलॉजिकल कल्चर पर निर्भर करता है। भीतरी या छिपी टीबी का निदान ट्यूबरक्यूलाइन त्वचा परीक्षण और/या रक्त परीक्षणों पर निर्भर करता है। उपचार मुश्किल है और इसके लिये, समय की एक लंबी अवधि में कई एंटीबायोटिक दवाओं के माध्यम से उपचार की आवश्यकता पड़ती है। यदि आवश्यक हो तो सामाजिक संपर्कों की भी जांच और उपचार किया जाता है। दवाओं के प्रतिरोधी तपेदिक संक्रमणों में एंटीबायोटिक प्रतिरोध एक बढ़ती हुई समस्या है। रोकथाम जांच कार्यक्रमों और बेसिलस काल्मेट-गुएरिन बैक्सीन द्वारा टीकाकरण पर निर्भर करती है।

ऐसा माना जाता है कि दुनिया की आबादी का एक तिहाई तपेदिक से संक्रमित है, नये संक्रमण प्रति सेकंड एक व्यक्ति की दर से बढ़ रहे हैं। एक अनुमान के अनुसार, 2007 में विश्व में 13.7 मिलियन जटिल सक्रिय मामले थे, जबकि 2010 में लगभग 8.8 मिलियन नये मामले और 1.5 मिलियन संबंधित मौतें हुईं जो कि अधिकतर विकासशील देशों में हुई थीं। 2006 के बाद से तपेदिक मामलों की कुल संख्या कम हुई है और 2002 के बाद से नये मामलों में कमी आई है। तपेदिक का वितरण दुनिया भर में एक समान नहीं है कई एशियाई और अफ्रीकी देशों में जनसंख्या का 80% ट्यूबरक्यूलाइन परीक्षणों में सकारात्मक पायी गयी, जबकि संयुक्त राज्य अमेरिका की आबादी का 5-10% परीक्षणों के प्रति सकारात्मक रहा है। प्रतिरक्षा में समझौते के कारण, विकासशील दुनिया के अधिक लोग तपेदिक से पीड़ित होते हैं, जो कि मुख्य रूप से एचआईवी संक्रमण की उच्च दर और उसके एड्स में विकास के कारण होता है।

संकेत एवं लक्षण

इनमें से कई लक्षण इसके भिन्न रूपों के साथ मिलते हुये हैं जबकि अन्य भिन्न रूपों के साथ दूसरे अधिक विशिष्ट हैं। एक साथ एकाधिक भिन्न रूप उपस्थित हो सकते हैं। तपेदिक से संक्रमित 5 से 10% लोग, जिनको एचआईवी नहीं होता है, उनके जीवन काल के दौरान सक्रिय रोग विकसित हो जाता है। इसके विपरीत, एचआईवी से संयुक्त रूप से संक्रमित लोगों में से 30% में सक्रिय रोग का विकास हो जाता है। तपेदिक शरीर के किसी भी भाग को संक्रमित कर सकता है, लेकिन आम तौर पर सबसे अधिक फेफड़ों में होता है। इतरफुफुसीय टीबी तब होती है जब तपेदिक फेफड़ों के बाहर विकसित होता है। इतरफुफुसीय टीबी के साथ फुफुसीय टीबी भी संयुक्त रूप से हो सकती है। सामान्य चिह्नों और लक्षणों में बुखार, ठंड लगना, रात में पसीना आना, भूख न लगना, वजन घटना, और थकान शामिल हैं और महत्वपूर्ण रूप से उंगली के पोरों में सूजन भी हो सकती है।

फुफुसीय

यदि तपेदिक संक्रमण सक्रिय हो जाता है, यह आम तौर पर फेफड़ों (90% मामलों में) को प्रभावित करता है। लक्षणों में सीने में दर्द और लंबी अवधि तक खांसी व बलगम होना शामिल हो सकते हैं। लगभग 25%



लोगों को किसी भी तरह के लक्षण नहीं भी हो सकते हैं। कभी-कभी, लोगों की खांसी के साथ थोड़ी मात्रा में रक्त आ सकता है और बहुत दुर्लभ मामलों में, संक्रमण फुफ्फुसीय धमनी तक पहुंच सकता है जिसके कारण भारी रक्तस्राव हो सकता है। तपेदिक एक पुरानी बीमारी है और फेफड़ों के ऊपरी भागों में व्यापक घाव पैदा कर सकती है। फेफड़ों के ऊपरी भागों में निचले भागों की अपेक्षा तपेदिक संक्रमण प्रभाव की संभावना अधिक होती है। इस अंतर के कारण पूरी तरह से स्पष्ट नहीं है। यह या तो बेहतर वायु प्रवाह, के कारण हो सकता है या ऊपरी फेफड़ों के भीतर खराब लिम्फ प्रवाह के कारण हो सकता है।

इतर फुफ्फुसीय

15–20% सक्रिय मामलों में संक्रमण, श्वसन अंगों के बाहर फैल जाता है, जिसके कारण अन्य प्रकार के टीबी हो जाते हैं। सामूहिक रूप से इनको “इतर फुफ्फुसीय तपेदिक” के रूप में चिह्नित किया जाता है। इतर फुफ्फुसीय टीबी कमजोर प्रतिरोधक क्षमता वाले व्यक्तियों और छोटे बच्चों में अधिक आम होता है। एचआईवी से पीड़ित लोगों में, यह 50% से अधिक मामलों में होता है। उल्लेखनीय इतरफुफ्फुसीय संक्रमण भागों में अन्य हिस्सों के साथ, फेफड़ों का आवरण (तपेदिक के परिफुफ्फुसशोथ में), केंद्रीय तंत्रिका तंत्र (तपेदिक मैनिंजाइटिस में), लसिका प्रणाली (गर्दन की गंडमाला में), जनन मूत्रीय प्रणाली (मूत्रजननांगी तपेदिक में), और हड्डियों व जोड़ों (रीढ़ की हड्डी के पॉट्स रोग में), शामिल हैं। जब यह हड्डियों में फैलता है तो इसे “हड्डीवाले तपेदिक” के रूप में जाना जाता है जो अस्थिकोप का एक प्रकार है। एक संभावित रूप से अधिक गंभीर, टीबी का व्यापक रूप “फैला हुआ” टीबी होता है जिसे आम तौर पर मिलियरी तपेदिक के रूप में भी जाना जाता है। मिलियरी टीबी, इतरफुफ्फुसीय मामलों का 10% होता है। टीबी का मुख्य कारण तपेदिक माइक्रोबैक्टीरियम है कफ, जिसे “बलगम” भी कहते हैं से लिये गये खांसी के नमूनों पर पुराने धब्बों का उपयोग करते हुए वैज्ञानिकों ने एक सामान्य माइक्रोस्कोप (प्रकाश) के नीचे एमटीबी की पहचान कर सकते हैं। चूंकि एमटीबी, अम्लीय घोल के साथ उपचार किये जाने के बावजूद कुछ धब्बों को बनाये रखता है इसलिये इसको एसिड फास्ट दण्डाणु (एएफबी) के रूप में वर्गीकृत किया जाता है। सबसे आम एसिड फास्ट स्टेनिंग तकनीक जाएहल-नील्सन स्टेन है जो एएफबी को चमकदार लाल में डाई कर देता है जिससे यह नीली पृष्ठभूमि में स्पष्ट रूप से दिखता है इसके अलावा ऑरामाइन-रोडामाइन स्टेन और फ्लोरोसेंस माइक्रोस्कोपी भी ऐसी ही तकनीकें हैं। तपेदिक कॉम्प्लेक्स में चार अन्य टीबी पैदा करने वाले माइक्रोबैक्टीरिया शामिल हैं।

जोखिम कारक

कई सारे कारक लोगों को और टीबी संक्रमण के लिए अधिक संवेदनशील बनाते हैं। दुनिया भर में सबसे महत्वपूर्ण जोखिम कारक एचआईवी है। टीबी के सभी मामलों के 13% लोग इस वायरस से संक्रमित हैं। उप – सहारा अफ्रीका में यह एक विशेष समस्या है, जहां एचआईवी की दर

अधिक होती है। तपेदिक, भीड़भाड़ और कुपोषण दोनों से जुड़ा हुआ है, जो इसको गरीबी की एक प्रमुख बीमारी बनाते हैं। उच्च जोखिम में निम्न लोग शामिल हैं: जो लोग सुई द्वारा अवैध दवायें लेते हैं, ऐसे स्थानों के निवासी और कर्मचारी जहां पर संवेदनशील लोग एकत्रित होते हैं (जैसे जेल और बेघर आश्रय), चिकित्सकीय वंचित और संसाधन वंचित समुदाय, उच्च जोखिम वाले जातीय-अल्पसंख्यक, उच्च जोखिम श्रेणी मरीजों के निकट संपर्क में रहने वाले बच्चे और ऐसे लोगों को सेवा प्रदान करने वाले स्वास्थ्य सेवा प्रदाता। फेफड़ों का पुराना रोग एक अन्य महत्वपूर्ण जोखिम कारक है जबकि सिलिकोसिस, जोखिम को 30 गुना तक बढ़ाता है। जो लोग सिगरेट पीते हैं उनको टीबी होने का दोगुना जोखिम होता है। अन्य रोग अवस्थायें भी तपेदिक विकास के जोखिम को बढ़ा सकती हैं जैसे शराब का सेवन और मधुमेह।

कार्यप्रणाली

सार्वजनिक स्वास्थ्य अभियानों ने 1920 के दशक में टीबी के प्रसार को रोकने का प्रयास किया। जब सक्रिय फुफ्फुसीय टीबी से पीड़ित लोग खांसते, छींकते, गाते, थूकते या दूसरों के साथ बातें करते हैं तो वे 0.5 से 5.0 आकार की संक्रामक एयरोसोल बूंदों को बाहर निकालते हैं। एक छींक से लगभग 40,000 बूंदें निकल सकती हैं। इन बूंदों में से हर एक रोग संचारित कर सकती है, क्योंकि तपेदिक की संक्रामक खुराक बहुत कम (10 से भी कम बैक्टीरिया भीतर लेने से संक्रमण हो सकता है) होती है। टीबी से पीड़ित लोगों के साथ लंबे समय तक और अक्सर, या करीबी संपर्क वाले लोगों में संक्रमित होने का विशेष जोखिम होता है, जिसकी



संक्रमण दर 22% तक है। सक्रिय लेकिन इलाज नहीं किये गये तपेदिक से पीड़ित व्यक्ति प्रति वर्ष 10–15 (या अधिक) लोगों को संक्रमित कर सकता है। प्रसार केवल उन लोगों के साथ होना चाहिये जिनको सक्रिय टीबी है— अत्यक्त संक्रमण वाले लोग संक्रामक नहीं माने जाते हैं। एक व्यक्ति से दूसरे में प्रसार की संभावना कई कारकों पर निर्भर करती है जिसमें वाहक द्वारा संक्रामक बूंदों को बाहर करना, वायु संचार की प्रभावशीलता, संक्रामक के साथ रहने की अवधि, एम.तपेदिक प्रभाव की उग्रता, असंक्रमित व्यक्ति में प्रतिरोध का स्तर तथा अन्य शामिल है। सक्रिय टीबी से पीड़ित लोगों को अलग करके तथा उनको टीबी विरोधी



दवा की व्यवस्था में रखकर, व्यक्ति से व्यक्ति के प्रसार के प्रवाह को प्रभावी ढंग से रोका जा सकता है। प्रभावी उपचार के दो सप्ताह के बाद, गैरप्रतिरोधी सक्रिय संक्रमण वाले लोग आम तौर पर दूसरों के लिए संक्रामक नहीं रह जाते हैं। अगर कोई संक्रमित हो जाता है, तो नये संक्रमित व्यक्ति को दूसरे व्यक्ति तक संक्रमण पहुंचाने लायक बनने में आम तौर पर तीन से चार सप्ताह लगते हैं।

रोग की व्युत्पत्ति

तपेदिक से संक्रमित लोगों में से 90% को स्पर्शोन्मुख, अव्यक्त टीबी संक्रमण होता है, जीवनकाल में केवल 10% संभावना होती है। एचआईवी से पीड़ित लोगों में सक्रिय टीबी के विकास का जोखिम एक साल में लगभग 10% बढ़ता है। यदि प्रभावी उपचार नहीं दिया जाता है तो, सक्रिय टीबी के मामलों में मृत्यु दर 66% तक है। टीबी संक्रमण तब शुरू होता है जब माइक्रोबैक्टीरिया फेफड़े की कूपिका में पहुंच जाते हैं जहां वे वायुकोशीय मैक्रोफेज के एंडोसोम पर आक्रमण करते हैं और उनके प्रतिरूप बनाते हैं। फेफड़ों में संक्रमण का प्राथमिक स्थल जिसे कहते हैं, आम तौर पर या तो ऊपरी हिस्से के निचले लोब या निचले हिस्से के ऊपरी लोब में स्थित होता है। फेफड़ों का तपेदिक रक्त प्रवाह से संक्रमण के माध्यम से भी हो सकता है। यह साइमन फोकस के रूप में जाना जाता है और आम तौर पर फेफड़ों के शीर्ष में पाया जाता है। इस रक्त से होने वाला प्रसार बहुत दूर की जगहों पर भी संक्रमण फैला सकता है जैसे कि परिधीय लिम्फ नोड्स, गुर्दे, मस्तिष्क, और हड्डियां। शरीर के सभी भाग रोग से प्रभावित हो सकते हैं, हालांकि अज्ञात कारणों से यह दिल, कंकाल तंत्र संबंधी मांसपेशियों, अग्नाशय या थायरॉयड को बेहद कम प्रभावित करता है।

यदि टीबी के जीवाणु क्षतिग्रस्त ऊतकों के क्षेत्र से खून में प्रवेश कर जाते हैं तो, वे पूरे शरीर में फैल सकते हैं और संक्रमण के कई केंद्र बना सकते हैं, ये सभी ऊतकों में छोटे, सफेद ट्यूबरकल के रूप में दिखाई देते हैं। यह टीबी रोग का एक गंभीर रूप है जो छोटे बच्चों और एचआईवी पीड़ित लोगों में सबसे अधिक आम है, इसे मिलियरी तपेदिक कहा जाता है। इस टीबी से पीड़ित लोगों में उपचार के बावजूद उच्च मृत्यु दर (लगभग 30%) होती है। कई लोगों में, संक्रमण घटता-बढ़ता रहता है। ऊतक विनाश और परिगलन अक्सर चिकित्सा और फाइब्रोसिस से संतुलित होते हैं। प्रभावित ऊतक का स्थान चकत्ते और खाली जगह ले लेती है जो केसियल नैक्रोटिक सामग्री से भरी होती है। सक्रिय रोग के दौरान, इन खाली स्थानों में से कुछ वायु मार्ग ब्रांकाई से जुड़ जाते हैं और यह सामग्री कफ के रूप में बाहर आ सकती है। इनमें जीवित बैक्टीरिया होते हैं, इसलिये संक्रमण फैल सकता है। उपयुक्त एंटीबायोटिक्स के साथ उपचार करने से जीवाणु मर सकते हैं और उपचार संभव हो सकता है। ठीक हो जाने पर, प्रभावित क्षेत्र अंततः ऊतकों द्वारा प्रतिस्थापित हो जाते हैं।

(लेखिका रेड क्रॉस तथा सेंट जॉन एम्बूलंस में वरिष्ठ व्याख्याता एवं परीक्षक है)



स्त्री-पुरुष

स्त्री और पुरुषों में एक-दूसरे के सत्व होते हैं। जिस सत्व की अधिकता होगी वैसा ही आचरण होगा। इसीलिए कोई पुरुष होकर स्त्री जैसे गुण-अवगुण रखता है और किसी-किसी स्त्री में मर्दावाली बात होती है। दोनों ही परिस्थितियां प्रकृति के नियम विरुद्ध एवं हास्यास्पद है। परंतु इससे बचने का उपाय है। मानव जीवन बहुमूल्य है यह जानो, सांसारिक आध्यात्म में डूबो, स्वयं से स्वयं के मैत्रीभाव में डूबो, स्वयं में खो जाओ, अहंकार छोड़ो, महाशून्य में खो जाने की तैयारी करो, पाप और पुण्य का ध्यान रखो, परमार्थ करो, ज्ञान से भरा दिमाग थोड़ा खाली करो, जो जैसा है उसे वैसा ही स्वीकार करो, प्रकृति के प्रति अहोभाव बढ़ाओ, पशु-पक्षियों से प्रेम करो, उनकी सहायता करो, संसार के दुःख का कारण क्या है इसे समझो, शोक और संताप का निवारण क्या है इसे भी जानो, जो अप्रिय घटा है उसका उसी दिन मंथन करो, गलतियां मत दोहराओ, अपने जीवन में सुर-ताल लाओ, नाचो, गाओ, रोज पूर्णमासी समझो, प्रेम क्या होता है यह जानो, दूसरों के लिए सौभाग्यशाली बनो, अपने दीये से दूसरों के दीये प्रज्वलित करो, समाज को व देश को कुछ दो, परामात्मा व्यापारी नहीं है उससे भीख मत मांगो, परमात्मा से लेन-देन की बात मत करो, हर किसी से बनिये जैसा व्यापारिक रिश्ता मत रखो, हर एक आत्मा में बुद्ध के दर्शन करो, किसी के भटकते जीवन के नाविक बनो, अपना आचरण कम से कम इतना तो सुधारो कि लोग तुम्हे प्रणाम कर सकें, तुम्हारी प्रशंसा कर सकें, तुम ऐसा कुछ करो कि तुम्हे कण-कण में कुछ नजर आए, जागरण की क्षमता बढ़ाओ और अंत में 'अप्य दिपो भव' – स्वयं ही स्वयं के मार्गदर्शक बनो। ये सारी क्रियाएं तुम्हें पूर्ण मानव यानी की पूर्ण पुरुष या पूर्ण स्त्री बना देगी और तुम्हारी कई-कई जन्मों की हास्यास्पद स्थिति हमेशा के लिए टल जायेगी। उठो मित्रों, प्रयत्न करो।

‘मां ज्ञान सुमन’



काव्य सुधा

आशा की किरण



अमर सिंह सचान,
राजभाषा अधिकारी

जब रात अंधेरी घनी बहुत हो
जब हाथ को हाथ न सूझे
गहन निराशा घिरने लगती है
मन से मन कुछ न बूझे।

जब तक प्रकाश की किरण कोई
दूर कहीं नभ में न दिखती
तब तक मन की गहराई में
आशा की न रेखा है खिंचती।

दशकों लंबी रात छंटी अब
छाई अलस सुबह की लाली
शांत-निराश विहंग है जागे
चहकी वन-उपवन की डाली।

उड़ने को हर पक्षी है उत्कट
अपना हर अधिकार जताने को
नभ की ऊंचाई नाप-नाप कर है
तत्पर निज का आयाम दिखाने को।

यह प्रजातंत्र का पर्व प्रखर
यहां अच्छे-अच्छे ढल जाते हैं
जो कल तक थे सत्ता मद में
वे जन चरणों की धूल चाटते हैं।

मुझे बचपन का बस्ता फिर से दे दो मां



अमित चड्ढा
(प्रबंधक श्री पंकज चड्ढा के बंधु)

मुझे बचपन का बस्ता फिर से दे दो मां,
जिंदगी का बोझ अब उठाया नहीं जाता।
मैं तो पहले ही खुश था जब कुछ भी नहीं था,
सब पाकर भी अब मुझसे खुश रहा नहीं जाता।

वो कागज़ की नाव से दोस्तों संग खेलना,
वैसा मज़ा डिस्को में नहीं आता।
वो परियों की कहानी सुनाती थी तुम मां,
हकीकत में कोई संग क्यों नहीं आता।

तुम्हारी ही बातें जाकर सब को बताता था मैं,
मुझे तो अब बातें करना ही नहीं आता।
यह जीवन है मेरा कहां जा रहा,
लगता है अब मुझे जीने का मतलब नहीं आता।

परांठे खिलाकर मुझे मनाती थी तुम,
पर अब रुठने का मुझे मज़ा नहीं आता।
चोट लगती थी मुझे जो, तो तुम दवा लगाती,
आज ठोकर लगे तो भी गिरना नहीं चाहता।

तुम्हीं से लड़ना, तुम्हीं से अकड़ना,
पर अब जिंदगी जीने का दस्तूर नहीं आता।
मुझे फिर से अपनी गोदी में ले लो,
मुझे चैन से अब सोना नहीं आता।

मुझे बचपन का बस्ता फिर से दे दो मां,
जिंदगी का बोझ अब उठाया नहीं जाता।
मैं तो पहले ही खुश था जब कुछ भी नहीं था,
सब पाकर भी अब मुझसे खुश रहा नहीं जाता।





रजिस्ट्री सं. डीएल (एन)-04/0007/2003-05

REGISTERED No. DL(N)-04/0007/2003-05


भारत का राजपत्र
The Gazette of India

साप्ताहिक/WEEKLY

प्राधिकार से प्रकाशित

PUBLISHED BY AUTHORITY

सं. 39] नई दिल्ली, शनिवार, सितम्बर 27—अक्तूबर 3, 2014 (आश्विन 5, 1936)

No. 39] NEW DELHI, SATURDAY, SEPTEMBER 27—OCTOBER 3, 2014 (ASVINA 5, 1936)

इस भाग में भिन्न पृष्ठ संख्या दी जाती है जिससे कि यह अलग संकलन के रूप में रखा जा सके
(Separate paging is given to this Part in order that it may be filed as a separate compilation)

भाग III—खण्ड 4

[PART III—SECTION 4]

[सांविधिक निकायों द्वारा जारी की गई विविध अधिसूचनाएं जिसमें कि आदेश, विज्ञापन और सूचनाएं सम्मिलित हैं]
[Miscellaneous Notifications including Notifications, Orders, Advertisements and Notices issued by Statutory Bodies]

राष्ट्रीय आवस बैंक

नई दिल्ली, दिनांक 25 अगस्त 2014

सं. एनएचबी.एनएचबी.निर्देश 12/सीएनबी/2014

राष्ट्रीय आवस बैंक अधिनियम, 1987 (1987 का 53) की धारा 30ए और 31 द्वारा प्रदत्त शक्तियों एवं इस संबंध में सम्बन्धकारी सभी शक्तियों का प्रयोग करते हुए, राष्ट्रीय आवस बैंक ने सार्वजनिक धित में और संयुक्त होकर यह आवश्यक समझा कि आवस बिल कंपनी को देश के समर्थ विनियमित करने में सक्षम होने के प्रयोजनार्थ, कि ऐसा करना आवश्यक है, एतद् द्वारा निर्देश देता है कि आवस बिल कंपनी (रा.आ.बैंक) निर्देश, 2010 (यहां के बाद मुख्य निर्देश के रूप में संदर्भित), तत्काल प्रभाव से निम्नानुसार संशोधित किया जाएगा, अर्थात:

अनुच्छेद 12 का शीर्षक

मुख्य निर्देशों के अनुच्छेद 12 में उप अनुच्छेद (B) में-

खंड (बी) "तीन महीने के बाद लेकिन छः महीने से पहले" के सामने उल्लिखित "कोई ब्याज नहीं" शब्दों के लिए "वैधित्यक जमाकर्तव्यों के लिए अधिक से अधिक 4 प्रतिशत प्रति वर्ष ब्याज देय होगा एवं अन्य जमाकर्तव्यों के वर्ग के मामले में कोई ब्याज देय नहीं होगा" शब्द प्रतिस्थापित किये जाएंगे।

खंड (सी) "छः महीने के बाद लेकिन परिपक्वता तिथि से पहले" के सामने उल्लिखित "दो प्रतिशत" एवं "तीन प्रतिशत" शब्दों के लिए क्रमशः "एक प्रतिशत" एवं "दो प्रतिशत" शब्द प्रतिस्थापित किये जाएंगे।

अपीव रॉय
सचिव/राज्यपालक निर्देशक





राष्ट्रीय आवास बैंक की स्थापना 1988 में संसद के एक अधिनियम के अंतर्गत एक शीर्षस्थ आवास विकास वित्त संस्थान के रूप में हुई थी। अपनी 25 वर्षों की यात्रा में, राष्ट्रीय आवास बैंक ने निम्न एवं मध्य आय वर्ग के परिवारों पर अपना ध्यान केन्द्रित रखने के साथ, जनसंख्या के सभी वर्गों की आवास आवश्यकताओं को संबोधित करने हेतु इस सेक्टर में क्षमता निर्माण पर कार्य किया है।

बैंक आवास वित्त बाजार में समग्र विस्तार एवं स्थिरता को प्रोत्साहित कर रहा है। राष्ट्रीय आवास बैंक की सहक्रियात्मक नीति समर्थन ने आवास वित्त उद्योग की गहनता एवं पहुंच को विस्तारित किया है।

अपनी विनियामक भूमिका को सम्पूरित करने हेतु राष्ट्रीय आवास बैंक पूरे देश भर के सभी क्षेत्रों एवं ग्रामीण क्षेत्रों सहित जनसंख्या के सभी वर्गों को सेवा देने हेतु अपने उपभोगता आधार को भी व्यापक बना रहा है। राष्ट्रीय आवास बैंक के ताजातरीन प्रयासों में सरसाई (भारत सरकार द्वारा समर्थित केन्द्रीय रजिस्ट्री) और एनएचबी रेजीडेक्स एक टिकाऊ बाजार अवसंरचना वृद्धि की दिशा में चरण हैं जो कि बाजार में पारदर्शिता एवं संतुलनीयता को बढ़ाएंगे।

निम्न आय परिवारों की ऋण पात्रता को सुकर बनाने के क्रम में, बैंक ने आवास एवं शहरी गरीबी उन्मूलन मंत्रालय के तत्वावधान में निम्न आय आवास हेतु ऋण जोखिम गारंटी निधि न्यास की स्थापना की है।

अपने प्रोत्साहन अधिकार पत्र के एक हिस्से के रूप में राष्ट्रीय आवास बैंक रिवर्स मार्टगेज लोन (आरएमएल) उत्पाद के माध्यम से वरिष्ठ नागरिकों के हितों को भी समर्थित कर रहा है।

राष्ट्रीय आवास बैंक आवास वित्त हेतु एशिया-प्रशान्त यूनियन की मेजबानी कर रहा है जो कि एशिया-प्रशान्त क्षेत्र में वित्तीय संस्थानों, सरकारी निकायों, केन्द्रीय बैंकों तथा सदस्य संस्थानों के बीच ज्ञान की साझेदारी एवं नेटवर्किंग हेतु एक वैश्विक मंच है।

राष्ट्रीय आवास बैंक पूरे देश भर में 13 कार्यालयों के माध्यम से राज्यों में अपनी स्थानीय उपस्थिति को विस्तारित कर रहा है।

रा.आ.बैंक के प्रयासों की विस्तृत जानकारी हेतु, कृपया वेबसाइट www.nhb.org.in को देखें।

